ओ३म्

...द्वार का इतिहास

स्वर्गवासी मास्टर मूलचन्द जी

कन्खल निवासी कृत

सद्धर्म प्रचारक प्रेस हरिद्वार

प्रथम वार
१००० प्रति

मूल्य ।=)

...र,
... विवाह
...जा हिमाचल
... स्वाम कार्तिक
...। स्कन्द पुराण विख्यात

भूमिका

॥ ओ३म् ॥

हरद्वार का इतिहास।

अठारह पुराणों में स्कन्द पुराण एक प्रसिद्ध पुराण है जिस्में इस भारतखंड के देशों का वृत्तान्त भूगोल और इतिहास के ढंग पर वर्णित हैं परन्तु वह केवल तीर्थों को इतिहास है और मुख्य आशय ग्रन्थकार ने शिवजी और तीर्थों की महिमा को प्रकट करते हुए तीन खंडों में वर्णन किया है अर्थात् केदारखंड (हिमालयदेश) काशीखंड (मध्य देश) रेवाखंड (गोदावरी दक्षिणदेश) जिन्में से केदारखंड के अन्तर्गत मायापुरी माहात्म्य (जो शिवजीकी पुरी कहलाती है) जिस्में हरद्वार आदि तीर्थों की उपमा लिखी है एक पृथक्ही कथा मानी जाती हैं उक्त केदारखंड में शिवजी का स्वरूप इस प्रकार लिखा है कि शिर पर वालों की जटा जिस्में से गंगा निकल कर वह रही है, हिमालय के शिखर पर विराजमान, मृगछाला विछाए वाघम्बर ओढे और ध्यान समाधि में निमग्न बैठे हैं, अंग में भस्म रमी हुई गले में मुंडमाला और सर्प लिपटे हुए मस्तक पर अर्ध चंद्रमा शोभायमान हाथ में भक्षपात्र कपाल (मनुष्य के शिर की खोपरी) समीप में पार्वती और आगे नन्दीगण बैठे और त्रिशूल खड़ा हैं इस्के अतिरिक्त उन्के यहां सब राज सामग्री अस्त्र शस्त्र और सेना उपस्थित है और उन्के मुख्य नाम शिव, शंकर, हर, महादेव, गिरीश, नीलकंठ, चन्द्रशेखर, रुद्र, कैलाशपति, पशुपति, केदारनाथ इत्यादि लिखे हैं उन्का विवाह मायापुरी के राजा दक्ष प्रजापति की पुत्री सती और राजा हिमाचल की बेटी गौरी से हुआ और उन से तीन पुत्र अर्थात् स्वाम कार्तिक (जिस्का दूसरा नाम स्कन्द और जिस्के नाम से स्कन्द पुराण विख्यात

है) दूसरा वीरभद्र और तीसरा गणेश उत्पन्न हुए शिवजी को आदि पुरुष और ईश्वर भी माना है और उन की बहुत सी अद्भुत और विचित्र कथा स्कन्द पुराण में देखो और सुनी जाती हैं जिन्में से एक कथा यह है कि एक समय जब राजा दक्ष के यहां देवताओं की सभा लगी हुई थी राजा दक्ष सभा में आए परन्तु महादेव जी ने दक्ष को जो उन्का ससुर था प्रणाम न किया इसपर राजा दक्ष महादेव जीसे अप्रसन्न होगया और जब राजा दक्ष ने एक समय यज्ञ करने की चेष्टा की तो सब देश देशान्तरों से इन्द्र से आदि लेकर सब देवता, ऋषि, मुनि, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर और अप्सरा † इत्यादि और अपनी पुत्रियों और जामाताओं को बुलाया परन्तु सती और महादेव जी को निमंत्रण न दिया जिस समय देवता ऋषि मुनि विमानों मे बैठे हुए चारों ओर से आकाश मार्ग को जारहे थे उन्को जाते देखकर सती ने महादेवजी से पूछा कि ये लोग कहां को जाते हैं महादेवजी ने उत्तर दिया कि हे सति तेरा पिता दक्ष यज्ञ करता है ये लोग उस यज्ञ मे जारहे हैं परन्तु वह हम से अप्रसन्न है इस लिये हम को नहीं बुलाया यह सुन्कर सती के मन मे पिता के घर जाने की उत्कण्ठा उत्पन्न हुई और आज्ञा के लिये प्रार्थना कर के कहा कि महाराज मुझ को आज्ञा दीजिये जो अपनी बहनों और सम्बन्धियों और माता पिता से इस महोत्सव पर मिलकर अपूर्व आनन्द का अनुभव करूं। महादेव जी ने सती को बहुत समझाया कि बिना बुलाए जाना कदापि उचित नहीं क्योंकि बिना बुलाए जाने में आदर नहीं हुवा करता दक्ष बडा निष्ठुर अभिमानी है तेरा मान न होगा किन्तु हास्य होगा परन्तु सती ने हठ से इस को अंगीकार न किया और इस प्रकार उत्तर दिया कि महाराज! पुत्री को पिता और गुरु के घर बिना बुलाए जाने में कोई शंका न करनी चाहिये और जाने के

† यक्ष किन्नर गन्धर्व अप्सरा आदि पूर्व समय मे पहाड़ी मनुष्यों की जाति और पदवी थी इन्का ब्योरा आगे लिखा जायगा वहां देख लेना मायापुरी महात्म्य मे दक्ष के ११ पुत्री लिखी है जो राजाओं को ब्याही गई थीं ॥

लिये वार २ प्रार्थना की निदान महादेवजी ने सती की बहुत उत्कण्ठा और आग्रह देखकर जाने की आज्ञा दी जब सती कुछ सेवकों सहित पिता के घर पौंहुची तो उसका कुछ आदर सत्कार न हुआ और जब सती ने देखा कि ब्रह्मा, विष्णु इन्द्रादिक सब देवता सभा में विराजमान हैं और ऋषि मुनियों सिद्ध साध्य विश्वेदेव यक्ष गन्धर्वादिक और आगतों का यथायोग्य सन्मान होरहा है बड़ा भारी समाज लगा हुआ है गन्धर्व सामगान कर रहे हैं अप्सरा नाच रही हैं सब देवताओं का भाग निकाला जारहा हैं इस अपमान को न सहते हुए अपने पिता राजा दक्ष से पूछ ने लगी कि हे पिता आपने महादेव जी को इस यज्ञ में नही बुलाया और उनको उनके भागसे क्यों वर्जित किया तिसपर राजा दक्ष ने महादेवजी का उपहास करते हुए उत्तर दिया कि वह तो अनार्य्य है श्मशान में भस्म लगाये हाथी का चर्म ओढ़े पड़ा रहता है जिसके सहायक पिशाच भूत बैताल और जिसके हाथ में भक्ष पात्र कपाल गले में मुंडमाला और वाहन बैल है ऐसे अमंगल पुरुष का यज्ञ में क्या कार्य्य है, मेरा यज्ञ मंगल स्वरूप है और यहां योग्य पुरुषों का समाज है ऐसा पुरुष मेरे यज्ञ में शोभायमान नही होता सती ने जब पिता से ऐसे हृदय बेधी बचन सुने तो मारे क्रोध के आंखें लाल होगईं और यह कहकर कि हे पिता मैं तेरे इस शरीर से उत्पन्न हुई थी और तू ने मेरा और मेरे पति का तिरस्कार किया और मेरे से कुछ सम्बन्ध न रक्खा तो मैं तेरे से उत्पन्न हुए इस शरीर को भी त्यागती हूं यह कहके हवन कुंड में गिरकर भस्म होगई सती के गिरते ही यज्ञ में हाहाकार मचगया। दक्ष और सब ऋषि देवता देखते ही विस्मित होगये निदान जब महादेवजी को इस दुर्घटना की सूचना मिली तो सुनते ही अत्यन्त कोपित हो तत्काल वीर भद्र सेनापति को बुला आज्ञा दी कि गणो की सेना लेजा कर दक्ष को यज्ञ सहित विध्वंस कर दो उसको यही दंड देना उचित है अतएव वीरभद्र आज्ञा पाते ही गणों की सेना लेकर कैलाश से उतरा इधर दक्ष ने भी महादेवजी की सेना का

आगमन सुन और आकाश को धूल चढ़ी देख अपनी सेना को साव-धान किया और दोनो सेनाओं में तुमुल संग्राम हुआ बहुत ऋषि देवता ऋत्विज और सभापति मारे गये और बहुत घायल हुए उस समय वीरभद्र ने वीरता पूर्वक दक्ष की छाती पर चढ़ उसका शिर काट उस ही हवनकुंड में जलादिया जिसमें कि सती जली थी तब दक्ष के मारे जाने और यज्ञ विध्वंस होने पर सब ऋषि देवता और मनुष्य त्राहिमाम २ पुकार ने और क्षमा मांगने लगे परन्तु वीरभद्र ने उन्को उत्तर दिया कि मैं ऐसा ही हूं जैसे कि तुम हो अर्थात् मुझ में समर्थ तुम्हारा अपराध क्षमा करने को नहो, शिवजी के शरण जाओ वह तुम्हारा अपराध क्षमा करेंगे यह सुन कर सब लोग कैला-श पर शिवजी की शरण गये और उन्को बड़ी २ स्तुति वन्दना करके उन्के क्रोध को शान्त किया क्रोध शांत होने पर महादेवजी ने उनपर प्रसन्न होकर कहा कि जो तुम चाहते हो सो कहो वैसेही किया जायगा तिसपर उन्हों ने निवेदन किया कि महाराज यज्ञ का विध्वंस होना शुभ नही हैं इसको पूर्ण कराइये और ऐसा हो जो दक्ष जीवि-त होजाय महादेवजी ने उन्की प्रार्थना को स्वीकार करके और माया-पुरी में आकर दक्ष के ऊपर बकरे का शिर लगाकर उसको जीवित करदिया जब दक्ष उठ कर बकरे की बोली बोला * और महादेवजी की स्तुति करने लगा तो महादेवजी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि वर मांग दक्ष ने कहा कि हे महादेव जैसा मैं ने घमंड किया था वैसा ही फल पाया अब मेरे में तेरी भक्ति जन्म २ रहे और यह सती फिर पैदा होकर तुम से विवाही जाय, आपका दर्शन नित्य होता रहे यही प्रार्थना है महादेवजी ने तथास्तु (ऐसा ही हो) कहा और यह भी वर दिया कि मैं तेरे नाम से इस मायापुरी

---

* बहुधा लोग महादेवजी की पूजा करते समय बकरे की बोली बोला करते हैं और उस को महादेव की प्रसन्नाता का कारण सम-झते हैं

में बास करुंगा जिस से मेरा ही नाम प्रख्यात होगा तब से दक्ष को महादेव पदवी मिली और महादेवजी सती के जले देह को कंधे पर डोल कैलाश को चले गये इस दक्ष को पुराणो मे प्रजापति नाम से विख्यात मायापुरी का राजा ब्रह्मा के अंगूठे से उत्पन्न हुआ लिखा है अब इन दक्ष महादेव का मंदिर कनखल के दक्षिण ओर गंगा तट पर बना है जिसको महाराणी धनकौर मालिक रियासत लंढौरे ने सम्वत् १८६७ अठारह सौ सरसठ विक्रमी अर्थात् सन् १८१० ईसवी में बनवाया था जो यात्री हरद्वार स्नान को आते है इनके दर्शन किये बिना यात्रा सफल नहीं समझते और कनखल से आध कोश दक्षिण को एक तलाव है जिसको सती कुंड कहते हैं सती वहां ही दग्ध हुई थी परन्तु मायापुर माहात्म्य के अध्याय उन्नीस १९ में सती के दग्ध होने का स्थान हृषीकेश जहां सार्षप तीर्थ है लिखा है यह कथा मैं ने वहुत संक्षेप से लिखी है अब इस का सारांश जो कुछ अन्वेषण करने से सिद्ध हुआ आगे लिखा जाता है।

केदार देश का वर्णन।
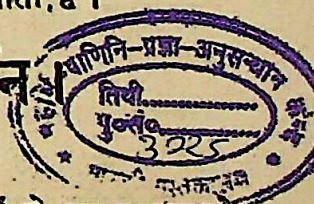
यह केदार (हिमाचल) देश पर्वतों सब ऋतुओं मे फलफूलयुक्तघने बनों नदियों सरोवरों और सदैव बहने वाले सोतों से पूरित और प्रफुल्लित होने के कारण अति मनोरम और अनेक प्रकार के कोमल तृण और पुष्पित स्थलों से नित्य भूषित रहते हुए अनुपम और बड़ा रमणीय देश है इस देश की सीमा नीचे लिखे श्लोक से विदित होती हैं ॥

नन्द पर्वत मारभ्य यावत्काष्ठ गिरिर्भवेत्।
तावत् केदारकं क्षेत्रं शिवमन्दिर मुत्तमम् ॥

मायापुरी माहात्म्य अध्याय १ श्लोक ३२

(अर्थ) नन्द पर्वत † से लेकर काष्ठ पर्वत तक केदार क्षेत्र हैं जहां शिव जी का उत्तम निवास स्थान है ॥

कैलाश हिमालय के सब से ऊंचे शिखरों का नाम हैं जो बारह मास बर्फ से ढकेरहते हैं जिन्की सीमा नैपाल से लेकर कशमीर के बर्फो पर्वत अर्थात् पशुपति महादेव से अमरनाथ तक मानी जाती हैं इन पर्वतों पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी नहीं पौहुच सक्ते वरन् बादल भी कटि मेखला से उन्के अधोभाग में ही लटके रहजाते हैं ॥

१ स्वच्छ भूमि और बनस्थलों से और कोमल वृक्षकी मानो हरिताम्बर पहने खड़े हैं और देश, काल, जल, वायु, पशु, मनुष्य और बनस्पति की रचना में पृथक् ही देश देख पड़ता हैं ॥

संस्कृत में केदार उसभूमि को कहते हैं जो सदैव हरी २ घास, फल, फूलों और जल के सोतों से शाद्वल और प्रफुलित रहती हैं यह देश पृथिवी के सब देशों से ऊंचा होने के कारण इसका वायु सदा बहुत हलका अति स्वच्छ और इसके सोतों झरनो और नदियों का जल निर्मल होने से जठराग्नि को बढ़ाने वाला रोग नाशक और अरोग्यता रखने वाला जो विशेषकर धातुओं के अंश सम्मिलित होने के कारण बड़े असाध्य रोग को औषधी है जड़ी बूंटी दिव्य गुण वाली और नाना प्रकार के शाक, फल, फूल और कन्द मूल मनुष्य जीवन के उपयोगी जिन के सहारे मनुष्य बिना अन्न के भी अपना जीवन व्यतीत कर सक्ता है बुद्धि और आयु बर्द्धक ऋतुओं के अनुकूल स्थान २ पर मिलती हैं इस देश के अन्न भी हल्के, पाचक, स्वादु और सुगन्धित होते हैं जो नीचे देश में उपवास के दिन

---

† नन्दगिरि जिस्को नन्दा पर्वत भी कहते हैं बद्री आश्रम पर है ।
१ काष्ठा पर्वत शिवालिक को कहते हैं जिस्की श्रेणी हरद्वार पर है इसका काष्ठा नाम इस लिये हैं कि इसपर सिवाय काष्ठके और कुछ धातु इत्यादि नहीं हैं और शिवालिक नाम सेभी शिव की सीमा पाई जाती है जैसे शिव आलय इक अर्थात् शिव के देश की सीमा ।।

फलाहारों में वर्ते जाते हैं द्रव्य में इन का हलका पन सुगन्धता और स्वादिष्ट होना उनही ऊपर लिखे कारणों से है जिन को पदार्थ विद्या जानने वाले भली भांति समझ सक्ते हैं बड़े २ ऊंचे पर्वत जिन के शिखर मानो आकाश में लगे हैं पवन आलम्बो मेघों और पुष्पित बनों से सदैव अलंकृत और अनुपम शोभायमान रहते है जहां ग्रीष्म ऋतु मे जब नीचे के देशों में अग्नि के सदृश जलती हुई लू चला करती है यहां शीतल मन्द २ सुगन्धित वायू के झोके विक्षिप्त वुद्धियों को स्थिर करने वाले चला करते हैं यह शोभा देखते ही वन आती है लिखकर कोई कहां तक बतावे और नाना प्रकार के विचित्र रंग वाले फूलों के वन सैकड़ों कोशतक जिन की महक से जीव लवलीन होजाय स्वतः खिले रहते है पर्वतों के शिखरों पर बड़े २ ताल कोशों तक लम्बे जिन का जल स्वच्छ स्फटिक मणि के सदृश निर्मल और जिन्में से जल की धारा छूट रही है भरे हैं और उन के किनारों पर कर्णिकार और केलों के वन आपही उगे खड़े हैं हरी २ कोमल सुगन्धित † घास पर्वतों की धारों पर और विस्तृत स्थलों में वायु से प्रेरित ऐसे लहरारहे हैं मानो समुद्र में जल की तरंग उठ रही हैं कहीं निर्मल

---

† जम्मू देश के घोसी जो कुछ दिनों से अपनी भैंसे इस ओर चराने को ले आए हैं और ग्रीष्म ऋतु में अपनी भैंस हिमालय अर्थात् गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी और बद्रीनाथ के पर्वतों में चराते और जाड़े के दिनों में नीचे ले आते हैं उन से सुनने में आया है कि इन पर्वतों पर ऐसे दिव्य घास है जिन को हमारी भैंस चरकर जो दूध देती हैं उस में एक प्रकार की दिव्य सुगन्ध आती है और उस में यह भी एक गुण हो जाता है कि हम उस दूध को पीकर नंगे बर्फ और शर्दी में फिरते रहते हैं जाड़ा नही लगता और ऐसा नशा सा रहता है कि हम कितना ही दिन भर घूमते रहैं थकान नही होता एक प्रकार का बल शरीर में बढ़ता हुआ प्रतीत होता है और गुलाब कनेर इत्यादि फूल वाले वृक्षों के बन खड़े हैं ॥

जल के सोते कोई ठंडा कोई उष्ण दिव्य गुण वाले†शरद ऋतु में बड़े सुखदाई होते हैं मानो देव ने हमारे शीत निवारण के लिये उष्ण जल करदिया है और पर्वतों में से झरने गिरते हुए ऐसे शोभित होरहे हैं जानो उस विधाता ने कौतुक दिखाने को फव्वारे छोड़े हैं, कहीं पर्वतों की संधियों में बड़ी २ गम्भीर नदियां चक्कर खाती हुई अत्यन्त वेग से बह रही हैं जो पर्वतों के शिखरों से नीचे बहती हुई ऐसी दिखाई देती हैं जैसे हँसों की पंक्ति जारही हैं और उन की मनोहर सनसनाहट मन को आकृष्ट करती हुई वैराग्य उत्पन्न कर रहि है कहीं देवदारु के ऊंचे२ सरल वृक्ष जिन्को चोटी देखतेही आंखे तिरमराजाय देखने वालों के मन को आश्चर्य दिला रहे हैं कहो गुंजान फलदार वृक्षों के वन बाघ, हाथो, सिह और जंगली पशुओं से व्याप्त जिन्के नीचे गंगा की बरफी दूध के समान धारा फेन सहित पर्वत की चट्टानो को धोती हुई बह रही हैं और उन पर नाना प्रकार के पक्षी भृंगराज, हंस, सारस, मोर, कोकिला और चकोर मधुर बोली बोलते सोए हुए मनों को लौकिक, प्रपंच की निद्रा से जगारहे और कहरहे हैं कि हे जीव उठ और देख उस महा शक्तिवाले परमात्मा की असिम शक्ति को, जिस शक्ति ने यह उपवन रचा है और निकट ही स्वच्छ कुंज और पवित्र कंदरा मल दुर्गन्धरहित जिन्को देखतेही संसार के दुःखों को भूलजाय स्यतः बनी हैं और उस विश्व रचन हार को अद्भुत रचना को बतला रही हैं निदान ऐसे रम्य और मनोहर स्थानो को देख कर कौन ऐसा मन्दमति होगा जिसका मन वैराग्यवान न होता होगा और कौन ऐसा चंचल बुद्धि होगा जिसका चित्त इस भूमि मे आकर संसार के झगड़ों

---

† लक्ष्मण झूले से ऊपर एक खराडी सोत है जिसमें १५ दिन लकडी डाले रखने से पत्थर होजाती है ऐसाही एक सोत मनसूरी पहाड़ के नोचे हैं और यह भीहै कि जितनी लकड़ीं जल में रहैगी वह पत्थर और जितनी बाहर रहैगी वह लकड़ी ही रहती है अनेक २ प्रकार के गुणकारी जल हैं ।।

से विरक्त होने को न चाहता होगा, तपस्वियों के लिये तपस्थान है तो यह है और मन की शान्ति चाहने वालों को शान्ति का साधन स्थान है तो यही है, पहिले समय में यहां बड़े २ चक्रवर्ती राजाओं ने राज्य छोड़कर तप किया है जिनका ब्योरा महाभारत और रामायण से मिलता है। हरद्वारके घाटों पर खड़े होकर इन परवतों को देखो तो विचित्र शोभा और अद्भुत रचना दिखाई देती है कि एक परवत की शिखर दूसरे की जड़ है इनकी श्रेणि ऊपरनीचे होती हुई ऐसी दीखती है मानो किसी ऊंचे भवन की सीढ़ी हैं और उनपर बर्फ पड़ा हुआ दूर से ऐसा दीखता है जैसे किसी ने उनपर स्वेत वस्त्र डाल दिये हैं यह परवत रत्नों और सब प्रकार की धातुओं की खान हैं विशेषकर इनमें सुवर्ण बहुत होता है जो गंगा के रेत धोने से निकलता है * इस देश के जल वायु में प्राणप्रद भाग विशेष होता है जिसको अंगरेजी भाषा में आक्सिजन् कहते हैं जो जीवों का जीवन मूल और प्राणियों के प्राणों का आधार है इसी कारण इस देश में जो द्रव्य और पदार्थ उत्पन्न होते हैं वेसुगन्धित गुण में हलके रोगनाशक और पुष्टि-कारक होते हैं यहां मनुष्य रोगी नहीं होता और जो कोई रोगी होता है तो वह अपनी अत्यन्त मूर्खता और मासादि भक्षण से होता है इसी कारण पहिले समय में इस देश के विद्वान धर्मशील राजे और ऋषि इन पवित्र स्थानों को तपके उपयोगी देखकर योगसाधन कियाकरते, और इस जीवन को तुच्छ समझकर इन स्थानों में तप करके मोक्षपद को प्राप्त करते थे जैसा कि अबतक ऋषिकेश और तपोवन इत्यादि प्राचीन स्थान गौणिक नामों से विख्यात हैं सिवाय इसके हिमालय से इस भरतखंडको स्वभाविक बड़े लाभ पहुंचते हैं मानो यह परवत इस देश के लिये धनधान्य की प्राप्ति का हेतु है क्योंकि इस देश में जो बहुतायत से वर्षा होती है उनका मूलकारण हिमालय ही है अर्थात्

---

* इसी कारण इस हिमालय को सुमेरु परवत कहते हैं।

पूर्व और दक्षिण के समुद्र में जब सूर्य ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीनों में मध्य रेखा पर आता है और उसकी किरण इस समुद्र में सीधी पड़ती हैं तो उस गर्मी से समुद्र उबलने लगता है और उससे जो भाप उठती है वह मेघ रूप होकर जब ऊपर आती है तो दक्षिण और पूर्व की वायु जिसको पूर्वा कहते हैं ज्येष्ठ आषाढ़ के महीनों में चलनी आरम्भ होती है उसको उत्तर की ओर खींचलाती है और वह मेघ वर्षते २ जब हिमालय से टक्कर खाते हैं तो ऊंचाई और शर्दी के कारण उसके पार नहीं हो सके वरन वहीं वर्षजाते और कुछ शर्दी से जमकर बर्फ होजाते हैं अतएव वही बर्फ ग्रीष्म ऋतु में पिघल कर हिमालय की नदियों को भरपूर करदेता है जिनसे यह सारा देश उपवन की नांई सींचा जाता है अनुमान करो कि हिमालय के दक्षिण ओर इतनी बहुतायत से वर्षा होती है जो भूगोल भर के किसी देश में नहीं पाईजाती और तिब्बत देश में जो हिमालय के पार है बहुतही कम नाम मात्र की वर्षा होती है। दूसरे हिमालय के जंगल भी वर्षा की बहुतायत का कारण हैं क्योंकि सूर्य अपनी किरणों द्वारा वृक्षों से जो जल के कणु खींचता है वह मेघ मण्डल में पहुंच कर फिर मेघ होकर नीचे वर्षजाते हैं इसी लिये पूर्व समय की वर्षा हिमालय की प्रसिद्ध है परन्तु इस समय के हाकिमों ने हिमालय के जंगलो को कटवा कर जितने न्यून कर दिये हैं उतनी ही वर्षाओं में न्यूनता आगई है दूसरे यह हिमालय इसदेश की उत्तरीय सीमा को गढ़ की नांई रक्षा किये हुए है जिसके बर्फ और घाटीयों के पार होकर कोई शत्रु चढ़ाई नहीं कर सक्ता तीसरे इस के जंगलों से रत्न, धातु, मसाले, ओषधी, लकड़ी इत्यादि जिन को मनुष्य को आवश्यकता होती हैं, प्राप्त होती हैं। निदान यह हिमालय इस देश के लिये सब निधियों का स्थान है ॥

पुराणों में स्वर्ग लोक सुमेरु परवत के ऊपर लिखा है और कहीं

उस को आकाश में बतलाया है सो जो लोग पुराणों के सन्दिग्ध अर्थ को सुनकर इस भ्रम में पड़े हुए हैं कि स्वर्ग लोक इस पृथ्वी से अलग कहीं आकाश पर है उन का यह भ्रम दूर करने के लिये हम महाभारत और मायापुरी पुराण से कुछ प्रमाण यहां दिखलाते हैं जिन से पाठकों को ज्ञात होजायगा कि स्वर्ग लोक हिमालय और त्रिविष्टिप देश (तिब्बत) को ही लिखा है और वास्तव में पुराणों के लेखानुसार यही स्वर्ग है क्योंकि यह देश पृथ्वी का सब से ऊंचा पृष्ट होने के कारण सब देशों से ऊपर है। आदि में सृष्टि की उत्पत्ति इसी देश में हुई लिखी है। सुना जाता है कि वहां के मनुष्यों की आयु यहां के मनुष्यों की अपेक्षा से अधिक होती है। अर्थात् वहां के मनुष्यों में सैकड़े पीछे ७० मनुष्य ऐसे मिलेंगे जो सौ वर्ष तक जीते हैं और कोई २ एक सौ पन्द्रह और एक सौ बीस वर्ष तक जीते हैं और यही हाल उस के समीपस्थ देश भोट का सुनने में आया है कारण इसका प्रथम तो उस देश के नियम विषय भोग रहित होना और दूसरे उस के जल वायु में प्राणप्रद भाग विशेष होने से शरीर पुष्ट और अरोग्यता को प्राप्त होता है॥

प्रथम प्रमाण।

महाभारत आदिपर्व अध्याय १२०

वैशम्पायन जी बोले कि हे राजा जन्मेजय! राजा पांडु वहां तप करते २ सब ऋषियों का प्रिय दर्शन होगया और हर एक ऋषि की सेवामें मन लगाकर जितेन्द्रिय अहंकार रहित और स्वर्ग जानेकी कामना से तपस्वी होकर रहने लगा कोई ऋषि उस को भाई के समान कोई मित्र के समान और कोई पुत्र के समान समझाता था वह तप करते २ पाप रहित (अर्थात् और कोई पाप करने वाला न

होकर) हो कर ब्रह्मऋषि के समान होगया एक समय वहां के सब तेजस्वी ऋषि अमावस्या के दिन ब्रह्माजी के † दर्शनों को चलने लगे उन को जाते हुए देखकर राजा ने पूछा कि आज आप लोग सब मिल कर कहां को जाते हैं। ऋषि लोग बोले कि आज स्वर्ग लोकमें देव ऋषि और पितरों* का मेला है सो हम उस मेले में ब्रह्माजी के दर्शनों को जाते हैं यह सुनकर राजा पांडु उन मुनियों के साथ अपार स्वर्ग को जाने की इच्छा से ऊपर को मुंह करके दोनों राणियों सहित उठ बैठा उस की जाने को उद्यत देख कर ऋषियों ने कहा कि हे पांडु ! स्वर्ग की राह तेरे जाने योग्य नहीं है इन स्त्रियों को बड़ा कष्ट होगा क्योंकि हमने उत्तर की ओर जाते समय हिमालय पर्वत पर बहुत से कठिन २ देश देखे थे और राह में देवता गन्धर्व और अप्सराओं (a) के रहने की भूमि पड़ती है जहां सैकड़ों

---

† ब्रह्मा एक पदवी है जो विद्वान् यज्ञ में सभापति होकर वेद मंत्र बोलता और यज्ञ कराता है उसको ब्रह्मा कहते हैं और जो मंत्रों के साथ २ आहुति डालते हैं उनको ऋत्विज कहते हैं और ब्रह्मा ऋषि भी थे उनसे यह पदवी चली है जो आज तक बराबर मानी जाती है॥

*देव ऋषि पितर विद्वानों की पदवी हैं जो मनुष्य ४८ वर्ष ब्रह्मचारी रह कर वेद विद्याओं को पढ़ता है उसकी पितर पदवी होती है ॥

(a) देवता विद्वान् पुरुष जिसमें दिव्य गुण हों गन्धर्व सामवेद मंत्रों का गान करने वाले और अप्सरा दिव्य रुपास्त्री जो यज्ञ समाप्ति के पीछे नृत्य करने और वेदमंत्र गाती थी वही रीति बिगड़ते २ अब उनकी नकल पातर वैश्या बनी हैं परन्तु शोक यह है कि कहां तो वे मंगल रूपी वेदपढ़ी स्त्रियां और कहां यह वेश्या व्यभिचारिणी कहां वेद मंत्र और कहां अब मूर्खता के निर्लज्ज राग देखो कितना अन्तर पड़गया है।

विमान फिरा करते हैं और अनेक २ प्रकार के स्वरों से गाना हुआ करता है इस के सिवाय कुबेर के बगीचे बड़ी २ नदियों के किनारे और परवतों की बड़ी २ कन्दरा जिन में बर्फ के कारण से वृक्ष मृग और पक्षी आदि कुछ नहीं हैं, राह में पड़ती हैं उन में पक्षी तो जाही नहीं सक्ते मृग और पशुओं की गति क्यों कर हो सक्ती है। वहां तो केवल वायुसिद्ध पुरुष(a)और महर्षि लोग जासक्ते हैं दूसरे की समर्थ नहीं है॥ यह वृत्तान्त उस समय का है कि जब राजा पांडु को वैराग्य हुआ और वह राज्य छोड़कर अपनी दोनों राणियों समेत तपोवन अर्थात् हिमालय के बनों में तप करने चला गया था॥

दूसरा प्रमाण।

महाभारत बनपर्व्व अ० १५६

हे युधिष्ठर! इस परवत पर जल और वायु को भक्षण करने वाले और आकाशमें चलनेवाले बड़े२तेजस्वी ऋषि पूर्णिमां आदि पर्व्वों को संधियों में आया करतेहैं और यक्ष और किम्पुरुष(b)अपनी कामासक्त स्त्रियों सहित परवत के शिखरों पर दीखा करते हैं और गन्धर्व और अप्सराओं के झुंड दिव्य वस्त्रों को धारण किये दिखाई देते हैं और विद्याधर माला पहिरे$ और सर्पों के समूह और गरुड़ॐ का भी दर्शन होता है और जहां २ परवत में संधि हैं वहां२ भेरी ढोल शंख और मृदंगों के बजने का भी शब्द सुनाई देता है सो जब कभी

(a)वायुसिद्धि पुरुष योगसाधन करने वाले योगी जो भूख प्यास शर्दी गर्मी को प्राणायाम द्वारा सहन कर सक्ते हैं॥

(b)यक्ष हिमालय के धनाढ्य पुरुष और किम्पुरुष रूप अर्थात् चेहरे के अन्तर से एक पहाड़ी जाति के लोग जैसे चीनी भोटी और हिन्दुस्तानियों में अन्तर है वा जैसे बदका आश्रम के ऊपर माछलोग हैं

$ विद्याधर विद्वानों की एक पदवी थी॥

ॐ गरुड़ एक पक्षी का नाम हैं।

ऐसा हो तब तुम सब यहां से ही सुनना और देखना और वहां कभी मत जाना येह देवताओं के विहार करने के स्थान हैं यहां से आगे जाना उचित नहीं है क्योंकि आगे मनुष्य नहीं जासक्ता यहां के लोग थोड़ा सा भी चपल कर्म करने से मनुष्य से द्वेष करने लगते हैं और उस मनुष्य को मारते हैं इस कैलाश परवत की शिखरों के आगे केवल बड़े २ सिद्ध और देवऋषि जासक्ते हैं और जो कोई और मनुष्य अपनी चपलता से वहां जाता है उसको राक्षस लोहे के शूलों से मार डालते हैं × और इस परवत की संधियों में कुवेरजी नर पर सवार होकर✻अप्सराओं सहित पर्व्वों की संधि में अपना दर्शन देते हैं उनका दर्शन सब लोग इस प्रकार से करते हैं मानो सूर्य्य उदय हुआ है और परवत के इस शिखर पर देवता दानव सिद्ध और कुवेरजी के क्रीड़ा करने के स्थान हैं जब पर्व्वोंकी संधी आती हैं तब कुवेर जी के समीप तूंबरू और गंधर्वों के साम गीत गाने का शब्द सुनाई देता है यहां के रहने वाले प्राणी इन सब आश्चर्य्यों को देखा करते हैं तुम भी अर्जुन के आने तक यहां रहो और रसीले फल और

× अब भी स्थान होती जो कैलाश से परे तिब्बत की सीमा पर है वहां तिब्बती लोगों की चौकी है जो कोई मनुष्य नेतो घाटे के बर्फ को लांघ कर तिब्बत में जाना चाहता है वह लोग उसको भालों से मार डालते हैं क्योंकि उनके देशका नियम है कि परदेशी को अपने देश में नहीं आने देते यदि आजाय तो मार डालते हैं अभिप्राय उनका यह है कि वह अपने देशका भेद अन्य देशो को नहीं लेने देते और राक्षस असभ्य अविद्वान टहल चाकरी करने वाले शूद्र लोगों को कहते हैं इसका ब्योरा आगे लिखा जायगा

✻हिमालय में डांडी झपान में मनुष्य परहो धनाढ्य लोग सवारी करते हैं और कुवेरजी तो उस देश को शासन करते थे ।

मूनि लोगों के खाने के पदार्थ भोजन करो ।। यह हाल उस समय का है कि जब अर्जुन इन्द्रलोक में इन्द्र से धनुर्विद्या सीखने गयाथा और चारों पांडव द्रौपदी समेत पांचवें वर्ष उसके लौटने के समय उसको गन्धमादन परवत * पर मिलने और लेने गये थे जब पांडव मैनाक और हिमाचलादि परवतों को होते हुए गन्धमादन पर अष्टि-षेण राजऋषि के आश्रम में पहुंचे तो ऋषि महाराज ने इनको पांडु पुत्र जानकर बड़े प्रेम से अपने आश्रम मे ठहराया, और युधिष्ठर को इस प्रकार शिक्षा की जो ऊपर लिखी गई और गन्धमादन परवत पर इस प्रकार पहुंचे थे कि बद्रिकाश्रम से राक्षसों † की सवारी पर

---

* यह गन्धमादन परवत केदारनाथ महादेव पर प्रतीत होता है क्यों कि केदारनाथ के निकट जो परवत है वह अनेक प्रकार की सुगंधित वनस्पति और सब प्रकार के विषैले कन्द और वृक्षादि से आच्छादित है गंधमादन के अर्थ भी यही हैं कि जिसकी गंध से मद अर्थात् नशा होजाय ऐसा एक परबत गंगोत्तरी से परे भी है जो यात्री केदारनाथ से बद्रनाथ को जाते हैं तो पहिले ही सत्तु खाकर चलते हैं कि जिससे उस गंध का प्रभाव न होने पावे यदि कुछ खाकर न चलें अर्थात् निराहार चलें तो मनुष्य उस गंध से मूर्छित होकर गिर जाता ह ।।

† राक्षस वह शुद्रवर्ण असभ्य हिमालय के लोग कहाते थे जिन का कर्म टहल चाकरी अथवा मेहनत मजदूरी का था जैसे पांडव राक्षसों की सवारी पर हिमालय पर गये थे वैसे ही अब भी गंगोत्तरी, यमनोत्तरी, बद्रीनाथ वा केदारनाथ के जाने वाले धनाढ्य यात्री डांडी झपान में इन पहाड़ो मनुष्यों की सवारी पर हरद्वार से जाते हैं यह प्राचीन रीति अब तक चली आती है क्यों कि हिमालय में सिवाय मनुष्यों की सवारी के और कोई सवारी परबतों पर नहीं चल सकती प्रथम तो पांडव भी पैदल ही चले थे परन्तु जब द्रौपदी थककर गिर पड़ी और न चलसकी तब राक्षसों की सवारी पर गये थे ।

१७वें दिन वृषपर्वा राजर्षि के आश्रम में हिमाचल परबत पर पहुंचे और ७ दिन वहां ठहर कर साथियों को और असवाव को वहां ही छोड़ उत्तर दिशा को चले और महाराज वृषपर्वाजी कुछ दूर तक राह बताने गये थे वहां से चलकर श्वेतपरबत और माल्यवंत को लांघ कर चौथे दिन गंधमादन पर पहुंच गये थे ।

इन प्रमाणों से विदित होता है कि उस समय इस भरतखंड मे वेद मर्यादा बनी थी क्योंकि अमावस्या और पूर्णिमा आदि पर्व्वों में लोग दूर २ की बस्तीयों से इकठ्ठे होकर यज्ञ किया करते और इन पर्व्वों को ही त्यवहार मानते थे वैसे तो घरों में नित्य हवन करना नित्य कर्म कहलाता था परन्तु ऋतुओं की संधीयों में इन यज्ञों के बड़े २ मेले होते थे जिन के चिन्ह अब तक होली, दिवाली, सलूनों, महावली अमावस्या इत्यादि पाये जाते हैं आज कल संस्कार भ्रष्ट होजाने और देशके दुर्भाग्य से मुसलमानों के राज्यमें उनके जबरदस्ती रोक देने से यज्ञ तो क्या कोई वेदमर्यादा स्थिर न रही बरनयह त्यवहारभी अब और ही और ढंग और२ ही नामों से मनाये जातेहैं और उनकी कहानियां भी और ही बनादी हैं परन्तु यथार्थ मर्यादाको चाहे कोई कितनाही छिपावे, अथवा उलट पुलट कर कुछ और की और ही बनावे परन्तु फिर भी उसके चिन्ह सुवर्ण की नांई रेतमें मिले हुए चमकते ही रहतेहैं अब कोई प्रश्न करे कि इन पर्व्वों में यज्ञ क्यों किया करते थे और इनको पर्व्व दिन क्यों मानते थे तो इसका उत्तर यह है कि यज्ञ से पृथ्वी और वायु मंडल शुद्ध होकर संसार को सुख मिलता हैं और सूर्य्य चन्द्रमा और पृथ्वी इत्यादि ग्रहोंके घूमने और एक दूसरे के आकर्षण से पृथ्वीका वायू इन पर्व्वों में बदलता रहता और ऋतु पलटती हैं समुद्रमें भी इनही कारणों से इन पर्व्वोंमें भाटाज़ु × आर होता हैं १इस लिये इस देशके विद्वानों ने इन

× ज्योतिष विद्या के ग्रन्थ सूर्य्यसिद्धान्त आदि से यह बात भले प्रकार से ज्ञात होजायगी ॥

ऋतुओं की संधियां में वायु का शुद्ध करना स्थिर कियाथा अवही कसवा मोहोवा जिले हमीरपुर में नहर का रजवहा खोदते हुए पृथ्वी में से एक पक्का हवनकुंड एक ताल के बराबर निकला है जो नीचे से नेड़ा और ऊपर से चौड़ा होता हुआ चारों कोनों पर चार पनाले घृत छोड़ने के बने हैं और उसके भीतर से जला हुआ जो चरु निकला है लोगों ने उस के एक मुकाम को शीतला बना रक्खा है जिस किसी को सन्देह हो जाकर देख आवे हमारे पूर्व पुरुष तत्वविद्या के अद्वीतीय विद्वान् हुऐ हैं जिनकी निकाली हुई मोटी २ बाते भी आजकल के विद्वानों की समझ में नहीं आती वहसृष्टि नियमों को जो अटल और अविरुद्ध हैं भली प्रकार जानते थे परन्तु इस देश पर तो स्वार्थीयों की दया होगई जो न आप पढे न दूसरे वर्णों को पढने का अधिकार वतलाया आप पूज्य देव बने और प्रजा का धर्म्म और कल्याण उनके बचन को मानना और उनके पेरों मे पड़नाही समझा गया फिर विद्या से क्या काम रहा आज कल के विद्वान् वायु का शुद्ध करना ही नहीं जानते और न इस बात को समझते हैं कि वायु की शुद्धि न होने से प्रजा को बड़े २ दुःख प्राप्त होरहे हैं आजकल पशुओं के मारे जाने, जंगलों के कटजाने, मुर्दों के गाडे जाने, घर २ में पाखानों के बनजाने और विष्टा के खेतीयों में डाले जाने इत्यादि कारणों से वायु में भयंकर दोष उत्पन्न होगये हैं क्योंकि इन दिनों जिस प्रान्त में वायु के दोष कुपित होते हैं वहां अनेक प्रकार के नये २ रोग और महामरी उत्पन्न होकर प्रजा को पीड़ा देते और हजारों घरानों को दीपक हीन कर डालते हैं वायु ही प्राणों का आधार है जब उस में दोष आया तो रहा क्या केवल प्रजा को कष्ट ॥

तीसरा प्रमाण

एक दिन भीमसेन ने गन्धमादन परवत की शिखर पर चढ़कर कुवेरजी का भवन देखा जिसमें कंचन और स्फटिक के मन्दिर बने

हुए थे और उसके चारों ओर सुनहरी परकोटा खिचा हुआ थो वह रत्नों से जड़ित और पताकाओं से शोभित था उसके ऊपर पहाड़ के सदृश अटारियां बनी हुई थीं अप्सरा वहां नाच रही थीं और सुगन्धित वायु जिसके लगने से बड़ा आनन्द होता था चल रही थी महाभारत वन पर्व अ० १६० ॥

चौथा प्रमाण

गंगाद्वारोत्तरं विप्र स्वर्गभूमिः स्मृता बुधैः ।
सान्यत्र पृथ्वीप्रोक्ता गंगाद्वारोत्तरंबिना ॥ ४ ॥
इदमेव महाभाग स्वर्गद्वारं स्मृतं बुधैः ।
यस्यदर्शन मात्रेण बिमुक्तोभव बंधनैः ॥५॥

मायापुरी महात्म्य अध्याय ६ श्लोक ४ वा ५

(अर्थ) हे बुद्धिमान् विप्र गंगाद्वार के उत्तर स्वर्ग भूमि सुनते हैं और उससे अन्यत्र पृथ्वी कहाती है ॥ ४ ॥

हे बुद्धिमान् महाभाग इसको स्वर्गद्वार कहते हुए सुनते हैं जिसके दर्शन मात्र से मुक्ति होजाती है ॥ ५ ॥

पांचवा प्रमाण

गन्धमादन परवत पर धौम्य ऋषि (पांडवों के पुरोहित) ने युधिष्ठर का दाहिनां हाथ पकड़ लिया और पूर्व की ओर मुख करके कहने लगे देखो यह मन्दराचल* परवत है जो पृथिवी को समुद्र तक

---

* मंदराचल हिमालय का ही नाम है क्योंकि यह पर्वत इधर पूर्वी समुद्र ब्रह्मा स्याम देशके और उधर पश्चिममें रूमदेश के समुद्र तक पृथिवी के बीचोंबीच खड़ा है कविकालीदासने इस को अपने कुमार सम्भव काव्य के प्रथम श्लोक में ऐसा कहा है कि उत्तर दिशा में देवता है आत्मा जिसका वह परवतों का राजा हिमालय पूर्व और पश्चिम समुद्रों को प्रवेश करके पृथिवी के मापने के दण्ड के समान स्थित है ॥

दबाता चलागया है इस दिशा में बहुत उत्तम परवत, बन और कानन हैं और रक्षा इस दिशा की इन्द्र और कुवेरजी करते हैं ॥

महाभारत बनपर्व्व अ० १६३ श्लोक ३।४।५

और यह देखो सुमेरु परवत उत्तर दिशा को प्रकाशितकर रहा हैं जहां केवल ब्रह्मज्ञानियों की ही गति है इसी परवत पर ब्रह्म लोक है ॥

महाभारत बनपर्व्व अ० १६३ श्लोक १२

इससे आगे इसी अध्याय में वरुण लोक पश्चिम में और यमलोक दक्षिण को बतलाया है । इससे विदित होता है कि इन्द्रलोक, यम लोक, वरुणलोक इत्यादि हिमालय को ऐसी राजधानी थीं कि जैसी अब शिक्कम, भोट, तिब्बत, नैपाल, कश्मीर, इत्यादि हैं और यह स्वर्ग इस देश की उत्तमता और सुख के कारण माना गया है हम तो स्वर्ग सुखकोही मानते हैं जैसा सत्य शास्त्रों में लिखा है परन्तु स्वर्ग की उपमा जो कुछ पुराणों में लिखी है उसका तो सिर पैर ही कहीं नहीं मिलता ॥

महादेव जीके कैलाशपति और केदारनाथ इत्यादि नामों और स्कन्द पुराण केदारखंड की कथाओं से प्रकट होता है कि महादेव जी कैलाश और केदार देश के अधिपति और पूज्य थे और उनकी गद्दी कैलाश थी परन्तु समय २ के इतिहासों और पुराणों से प्रतीत होता है कि प्रथम जो महादेव जी कैलाश में थे वह आदि पुरुष कहलाये और उनसे ही यह महादेव गद्दी और पदवी विख्यात हुई अत एव सत युग से लेकर पांडवों के राज्य पर्यन्त महादेव गद्दी का स्थित रहना इतिहासों से पाया जाता है निदान इतने समय तक एक ही पुरुष का स्थित रहना बुद्धि में नहीं आता इस से प्रतीत होता है कि इतने समय में कितने ही महात्मा इस महादेव गद्दी पर बैठे और वह सब महादेवही कहलाये और उनका विवाह भी समय २ पर सती गौरी पार्वती उमा

अम्बिका आदि से होते रहे जैसा कि सती के दग्ध होने पर पारवती का राजा हिमाचल के उत्पन्न होकर महादेव जी से ब्याहा-जाना लिखा है इस देश में सदैव काल से यह रीति चली आती है कि जो गद्दी जिस महात्मा के नाम से प्रसिद्ध होती है उसके पीछे सदैव को उसही नाम से बोली जाती है जैसे इन्द्रकी गद्दी पर जो बैठता रहा इन्द्रही कहलाया और व्यास, शंकराचार्य्य अथवा तिब्बत में लामा गद्दी पर जो कोई बैठता है व्यास, शंकराचार्य्य और लामा ही कहलाता है इसी प्रकार अब महाराजाधिराज सप्तम एडवर्ड इंग्लिस्तानवा इस भरतखंड की गद्दीपर विराज मान हुए हैं महाराजा विक्रमादित्य की गद्दी पर उनके पीछे जो राजा बैठा विक्रम ही कहलाया अर्थात् आठ राजा विक्रम हुए हैं परन्तु महादेव गद्दी गुरुगद्दी थी उन्हों ने राज्य नहीं किया वह तो इस संसार के ऐश्वर्य्यों को तुच्छ और अनित्य जानकर स्मशान में रहते और योगाभ्यास करते थे, महाभारत युद्ध में महादेवजी का वर्तमान् होना महाभारत ग्रन्थ से मिलता है परन्तु उसके पीछे इनका कोई समाचार किसी ग्रन्थ से विदित नहीं होता कारण इसका यह है कि जबतक इस भरतखंड के राजाओंका चक्रवर्ती राज्य बनारहा तब तक यह इन्द्र और महादेव गद्दी भी बनी रही क्यों कि इन गद्दीयोंकी रक्षा इस देश के चक्रवर्ती राजा ही करते रहे जब कभी अन्य देशी असुर इन पर चढ़ाई करते थे तो इस देशके राजा ही अपनी सेना लेजाकर इनकी सहायता किया करते थे जैसे महाराजा दुष्यन्त अज, दशरथ इत्यादि ने इनकी सहायता की असुरों से युद्ध किया था सब से पिछला चक्रवर्ती राजा, महाराज युधिष्ठर हुए हैं उनके पीछे चक्रवर्ती राज्य और वैदिक मर्यादा सब नष्ट भ्रष्ट होजाने और इस घोर युद्ध महाभारत में भूगोल भरके राजे और विद्वानों के मारे जाने से इस देशमें अन्धकार छागया था इतिहासों में इस युद्धके कारण इस देश का वैदिक धर्म और गौरव नष्ट होने को ही कलयुग का आना माना है।

सृष्टिक्रम से मनुष्य तीन स्वभाव के होते हैं अर्थात् देवता, मनुष्य और असुर, देवता धार्मिक सतोगुणी सज्ञावाले को कहते हैं और मनुष्य उनसे मध्यम और असुर धर्महीन तमोगुणी नोच कर्म करने वाले होते हैं, पूर्व समय में गुण से यह तीन पद मनुष्यों के माने जाते थे और विशेष कर हिमालय देश के लोग बहुधा सतोगुणी होते थे इसी कारण हिमालय को देव भूमि कहते हैं यद्यपि इस देश में सहस्रों वर्षों से वाममार्ग मत के प्रचलित होजाने से वैदिक धर्म उलट पुलट कर कुछ का कुछ हो गया है तथापि इस देशके लोग बड़े सीधे साधे, चोरी करना और झूट बोलना जानते ही नहीं थे किसी की वस्तु कोछूना महा पातक समझते थे वास्तव में मुख्य हेतु इन के सतोगुणी रहने का यह हैं कि मुसलमानोंने इस देशको जंगली, विकट और कम पैदा वार देखकर इसमें प्रवेश नहीं किया इस लिये इस देश में कोई कबर और मजार भी नहीं पायी जाता अंगरेजी राज्य से पहले इस देश में यह मर्यादा सुनी जाती है कि कोई मनुष्य झूठ नहीं बोलता था न कोई किसी की वस्तु छूता था, लेन देनकी कभी लिखत नहीं करते थे यदि ऋणी पुरूष ऋण चुकाने में विलम्भ करता था तो ऋण दाता उसके चारों ओर एक लकीर खींच देताथा जब तक वह अथवा उसका कोई सम्बन्धी ऋणकोन चुका देता और ऋण दाता उस लकीर को न काट देता तब तक वह कदापि उस लकीर से बाहर नहीं निकलता था न उसके भीतर अन्न जल पान करता था अब तो पहाड़ी लोग बड़े चपल और झूठ बोलने वाले होगये हैं कि इतने देशवाले भी नहीं बोलते और मांस भक्षण इनमें बुरा राक्षसी भाव आगया है मैंने इस देशके कुछ प्रान्तका भ्रमण कियाहै तो यहां अब भी प्राचीन रीतियों के कोई २ चिन्ह पाये जाते हैं जैसे इस देशमें परदा निरन्त नहीं है, मिलते समय स्त्रियां आपस में शिर सूंघती हैं, बड़ा भाई छोटे भाई की स्त्रीकी छाया अपने ऊपर नहीं पड़ने देता यदि छाया पड़जाय तो पातकी हो जाताहै और स्नान हवनकरके शुद्ध होता है, मकरादी सक्रांति

और हरएक पूर्णमासी को व्यवहार मानते फूलों की माला पहनते और अच्छे २ भोजन बना आनन्द करते और नाचते हैं सर्व साधारण में नागरी प्रचार बहुत और स्त्रियों में पति सेवा धर्म्म विशेष है ॥ निदान महादेव जी उन देवताओं के देव अर्थात् पूज्य और बड़े थे जो सब को वेद मर्यादाओं पर चलाते थे और जब कि उनकी प्रजा ऐसी धर्मशील और विद्वान थी तो उनके महात्मापन और विद्या का अनुमान करलीजिये कि वह कैसे भद्र पुरुष वेदज्ञ थे और संसार को असार और जीवन को अनित्य जानकर तप और योगाभ्यास किया करते थे और उनका योग साधन भी ऐसा वैसा न था जिनका वर्षों तक समाधी लगाना उनकी उपमा में कहा जाता है इसी कारण यह बात प्रसिद्ध है कि उन्होंने कामदेव को भष्म कर दिया था जिसका अभिप्राय यह है कि उन्होंने योग बल से कामदेव को दमन कर दिया था सो क्या योग विद्या, क्या आयुर्वेद, क्या तत्व विद्या, क्या गान्धर्व वेदों की ६४ विद्याओं के ज्ञाता उन्होंने ही इन विद्याओं को वेदों से प्रकट कीं उनका तीसरा नेत्र जो विख्यात है वह विद्या ही था, शूर वीरता भी उनकी अद्भुत प्रसिद्ध है कि जो वीर युद्धका उत्साही किसी युद्ध में पूर्ण वीरता से माराजाता था महादेव जी उसकी मुंडी रणभूमि से मंगा कर प्रजा और शूरवीरोंका उत्साह बढ़ाने के लिये स्मरणार्थ रखतेथे जिसको मुंडमाला लिखा है जैसा कि उन्हों ने दो महा शूरवीर राजाओं सुरथ और सुधन्वा के मुंडी महाभारत युद्ध से मंगाई थीं * धन्य है ऐसे महापुरुषों को जिन्हों ने वेद विद्याओं को प्रकट कर के संसार का उपकार किया और नमस्कार है ऐसे महात्माओं को जिनको प्रजा ऐसी विद्वान् धर्मज्ञ और सानन्द हो पुराणमें जो उनको ईश्वर लिखा है ईश्वर राजा कोभी कहते हैं क्योंकि

---

* अंगरेजों के यहां भी वीर पुरुषों के चित्र और हाड़ों के पिंजर अजायब खानों में रक्खे जाते हैं।

ईश्वरके अर्थ ऐश्वर्य्य वालेके हैं परन्तु उनको पूर्ण ब्रह्मपरमात्मा कहना मूर्खता और अविद्या का कारण है ब्रह्म जो सब से बड़ा अनन्त सामर्थ वाला जिस के रचे ब्रह्मांड में अनेक लोक लोकान्तर वर्तमान् और घूम रहे हैं (यह पृथ्वी तो एक छोटासा लोक है) और जो सब में आकाशवत बस रहा है और सब उस से आच्छादित हैं वह केवल मायापुरी अथवा कैलाशमें वासकरने वाला नहीं, वह अज्ञ अर्थात् जन्म रहित है जो शरीर और नाड़ी बन्धनमें बद्ध नहीं होता वह सच्चिदानन्द अविनाशी सब जगह सदा एकरस रहता है वह पूर्णब्रह्म-परमात्मा अर्थात् आत्मासे भी परे और सबका आत्मा है वह देहधारी होतातो इन लोक लोकान्तरों को अपनी अनन्त सामर्थसे कैसे रचता और कौन इन चराचर जीवोंकी सुध लेता। मुख्य बात यह है कि महादेव, शिव,शंकर, रुद्र इत्यादि परमात्माके गौणिक नाम वेदों में लिखे हैं पुराण में भी यह नाम कैलाशपति महादेव की उपमा में लिख दिये नहीं तो विद्वान् लोग आप समझ सक्ते हैं कि उनका विवाह होना, युद्ध करना, सन्तान होना क्या सिद्ध करता है और उनका समाधि लगाना भी यही प्रगट करता है कि वह माहात्मा योगी थे यदि परमेश्वर थे (जैसा कि लोग मानते हैं) तो समाधि में ध्यान किसका करते थे, अब लोग इन की पूजा पत्थर का लिंग बनाकर करते हैं सो अन्वेषण करने से पता लगता है कि यह लिंग और उसकी जलहरी भगाकार बनाकर पूजन करना बाम मार्गीयों ने चलाया है क्यों कि उनका मत ही भग लिंग का पूजन करना है और यह मत महाराज विक्रमादित्य के समय से पीछे चला है नहीं तो इन की मूर्ति अब भी देखने में आती कि आंख मीचे जटाधारी समाधी लगाए बाघम्बर ओढ़े और मृगछाला विछाए हिमालय के शिखर पर बैठे हैं अंग में बिभूति रमी हुई बराबरमें पारबती और आगे नन्दीगण हैं ॥

महादेव जी का वाहन नन्दीगण अर्थात् बैल और उन को ध्वजा

(सैनिक झंडा) पर बैल की मूर्ति लिखी है जिस से उनको वृषभ-ध्वज कहते हैं सो विचार और अन्वेषण करने से ज्ञात हुआ कि कैलाश (हिमालय के वर्फी प्रान्त) में परवती लोग सुरा बैल पर(*1*)जिस को याक भी कहते हैं सवारी करते हैं इसी की पूंछका चंवर होता है यह सुरा बैल बड़ा शीघ्रगामी और परवतों की चढ़ाई वा दुर्गम घाटीयों में जहां कोई पशु नहीं चढ़ सक्ता बड़ी शीघ्रतासे चलता है चाल में ऐसा सधा होता है कि सवार हाथ पर जल का कटोरा रक्खे चला जाय किंचित् न छलके निसन्देह बर्फ की शर्दी में उन देशों के लिए यही जीव उपयोगी है इसीलिये दैवने इसकी उत्पत्ति उन देशों के सुख के लिए वर्फ में की है यह उस वर्फ की शर्दी को स्वाभाविक सहन करता है आजकल यह पशु न्यूनसेन्यून पंद्रह वीसरुपये तक मोल में विकता और सवारी के काम में आता है महादेवजी ने वही अपने वाहन का चिन्ह पहिचान के लिए ध्वजा पर रक्खा था जैसा कि राजा अपनी सैनिक ध्वजाओं पर भिन्न २ प्रकार के चिन्ह रखते आए और अब भी रखतेहैं और महादेवजी की जटा से गंगा का निकलना, विष का कंठ में रहना, छाती और गले मे सर्प, मस्तक पर अर्द्ध चन्द्रमा इत्यादि कवियों का रचा हुआ अलंकार है वेदों में जो८प्रकार के अलंकार होते हैं इस लिए कवियों और पुराण वालों ने भी बहुत कथायें अलंकारों में होवर्णन की हैं यह कथा भी रूपक अलंकार में इस प्रकार है कि उन्हों ने हिमालय परवत का रूपक अलंकार महादेव जी में घटाया है अर्थात् शिव के अर्थ कल्याण करने वाले के हैं और हिमालय भी इस देशके लिए सब कल्याणोंका दाताहै इसलिए हिमालय को ही शिव, हिमालय के शिखर से गंगा का निकलना मानो महादेव की जटा से निकलना

(*1*) सुर के अर्थ देवता के हैं सुरा बैल अथवा गौ अर्थात् देवताओं का बैल वा गौ।

समझा गया, और उन के कण्ठ में विष का स्थित होना यह है कि सब प्रकार के विष अर्थात् बनस्पति और धातु वाले जो १८ प्रकार के विष गिने जाते हैं हिमालय के बर्फी परवतों में ही उत्पन्न होते और मिलते हैं, महादेवजी के गले और छाती पर सर्पों का लिपटे रहना अर्थात् हिमालय के मध्यवर्ती परवतों और बनों में बड़े २ विषधारी सर्प बड़े२स्थूल वाले कि जिनको पड़ा हुआ देखकर लोगों ने वृक्ष समझ कर धोखा खाया पाए जाते हैं और बहुतायत से सर्पों की उत्पत्ति इन परवतों में ही है मस्तक पर अर्द्ध चन्द्रमा (आधा चन्द्रमा) का अलंकार यह है कि चन्द्रमा का अधिक भाग और आकर्षण उत्तर की ओर होने से हिमालय पर अत्यन्त शर्दी का होना और उसके शिखरों का सदैव बर्फ से ढका रहना मानो शिव के मस्तक (हिमालय) पर आधी शर्दी चन्द्रमा की रहती है जाड़े के दिनों में जब सूर्य्य दक्षिणायन होता है तो चन्द्रमा उत्तरायण होजाता है उस समय और भी शर्दी की अधिकता हिमालय पर होजाती है (१) यह बात ज्योतिष विद्या देखने से समझ में आसक्ती है यहां विस्तार के भय से नहीं लिखी, दूसरे हिमालय के शिखरों पर सदैव बर्फ का संजाफ की नाईं पड़ा रहना और उसकी अत्यन्त श्वेतता और चमक चन्द्रमा की चांदनी के सदृश होना जानो हिमालय के मस्तक पर आधा चन्द्रमा चमक रहा है शिमले से दो तीन मंजिल ऊपर हट्टू के परवत पर खड़े होकर जिस दिन यदि इस परवत का चित्र खींचकर देखा जाय तो यह रूपक अलंकार ठीक दिखाई पड़ेगा पण्डित कालीदास कवि ने जो महाराजा भोज के समय में हुआ है इस अलंकार को अपने काव्यों में बड़े ललित भाव से वर्णन किया है। महादेवजी का विवाद सती से होना और सती का क्रोध में आकर यज्ञ के हवन

---

(१) शिवजी चन्द्रशेखर नाम से भी यही अभिप्राय पाया जाता है कि शिखर पर चन्द्रमा।

कुंड में गिरना और भष्म होजाना, वीरभद्र का दक्ष पर चढ़ाई कर के उसका शिर काटना संभव है परन्तु महादेव जी का कैलाश से आकर दक्ष के मृतक शरीर पर बकरे का शिर जोड़ना और उसको फिर सजीव कर देना और दक्ष की उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगुष्ठ से होना सृष्टि नियम से विरुद्ध है ऐसी भ्रमयुक्त कथा लोगों के वैदिक सच्चे निश्चय को हटानेके लिये बनाई गई, महादेव जी के व्याह और उनकी जीवन कथा जंगम फकीर हरद्वार के मेलों में टल्ली बजाकर बड़ी ध्वनि के साथ सड़कों पर बैठ कर गाया करते हैं और यात्री लोग सुनकर प्रसन्न होते और उनको पैसे दिया करते हैं आकाश निर्मल हो देखो तो पूर्व और पश्चिम को जहां तक दृष्टि जाती है कोई २ दो२ सो कोश तक वर्फी परवत अर्ध चन्द्राकार श्वेत दिखाई पड़ते हैं।

मायापुर का वर्णन

तारीख सहारनपुर नन्दकिशोर डिप्युटी कलक्टर रचित और अन्य इतिहासों से विदित होता है कि यह ज़िला सहारनपुर पांडवों के समय में सर्वत्र जंगल था और जंगल जौनसार में जो दुर्गके खंडहर दिखाई देते हैं उनको राजा विराट का गढ़ बतलाते हैं इससे ज्ञात होता है कि जो बन हस्तिनापुर और विराट देश के बीच में लिखा है वह इसी जिले का जंगल होगा यहां राजा युधिष्ठिर तेरहवें वर्ष अपने भाइयों सहित गुप्त रहे थे, दूसरे इस जिले में जो जाति बस रही है वह अन्य देशी है, निदान सब से प्रथम इस जिले में पुंडीर क्षत्री आकर बसे और इन से पहिला कोई पुराना चिन्ह बस्ती का इस जिले में नहीं पाया जाता मायापुरी जिसके नाम से मायापुरी महात्म्य विख्यात है प्रथम राजा इवसमसिंह पुंडीर(१)सूर्य्य बंशी पु-

(१)पुंड नाम महाराज रामचन्द्र जीके बड़े पुत्र कुशका था।

लस्त गोत्र बेटे राजा मंदासरसिंह ने सम्वत् तीन सौ इक्कोस बिक्रमो में जिसको १६३८ वर्ष होते हैं फतहपुर पुंडरी ज़िला थानेश्वर से आकर बसाया था इस राजा की वंशावली इस भांति है कि तैलंग देश के राजा का लड़का कुमार जरासरसिंह अपनी राणी सहित कुरुक्षेत्र अर्थात् थानेश्वरमें आया और उसके एक लड़का मन्दासरसिंह उत्पन्न हुआ जिसका विवाह थानेश्वर के राजा की बेटी से हुआ था राजा मंदासरसिंह फतेहपुर पुंडरी में जो थानेश्वर के समीप है रहने लगा उससे उक्त राजा इवसमसिंह जिसने मायापुर बसाया उत्पन्न हुआ और इसकी सन्तान इतनी बढ़ी कि जिस से यह सर्वत्र मायापुर प्रान्त जो निरन्तर जंगल था बस गया सम्वत् नौ सौ पचीस बिक्रमी में जिसको १०३४ वर्ष बीतते हैं राजा हमोरसींह ने जो इसी घराने से था मायापुरी को छोड़कर कसबा चौरासी जिसको अब जौरासी कहते हैं और जो मायापुरी से पश्चिम को १२ कोश पर एक ग्राम रह गया है बसाया था उसकी तीसरी पीढ़ी में राजा ज्ञानचन्द्र हुआ जिसका बनवाया हुआ एक पक्का कूप (कुआ) अब तक उक्त चौरासी ग्राम में वर्तमान् है यह ग्राम अब भी उसी राजा की सन्तान की जमींदारी में चला आता है। परन्तु शेष सन्तान राजा इवसमसिंह की मायापुर में ही बसती रही क्योंकि इस बंश में मायापुरी का सब से पिछला राजा बैन नामी हुआ है। यह राजा बड़ा सत्यवादी धर्मात्मा प्रजाभक्त सुनने में आया है जो सिवाय अपने पुरुषार्थ को कमाई के राजअंश नहीं खाता था इस राजा की यह बात लोगों के मुख से सुनते चले आते हैं कि उसकी राणि के पास कोई आभूषण नहीं था उस ने एकबार राजा से प्रार्थना की कि महाराज प्रजा की स्त्रियां अच्छे २ आभूषण पहन रही हैं मुझे भी आभूषण मिलने चाहियें राजा ने उत्तर दिया कि मेरी कमाई इतनी नहीं है जो तुझे आभूषण बनवा दिये जायें यह धन जो खजाने में है प्रजा का धन है। जो उसकी

रक्षा के लिये है मेरा नहीं है (१) उसके दुर्ग की दीवार और नीव ग्रन्थकार ने अपनी आंखों देखी और अब पृथ्वी खोदने से निकलती हैं (२) उसका सिक्का भी एक छोटा पैसा जिसमें कुछ सुवर्ण भी होता है और जो दुअन्नी से भी छोटा होता है इस भूमि में मिलता है इस शिवालिक परवत पर जितना हरद्वार और मायापुर के सामने है और परवतके नीचे भूमि स्थल में गंगा किनारे तक भूमि खोदने से मकानों की नीव जगह २ पर मिलती हैं और उन से प्रतीत होता है कि उस समय में यह पुरी बहुत ही बसी हुई थी (३) इसका प्रमाण मायापुरी माहात्म्य के लेखानुसार रत्नस्तंभ परवत से जो लक्ष्मण झूले के ऊपर है ब्राह्मण स्थान अर्थात् पचेवलनाथ महादेव तक ३६ कोश लम्बाई और वधुंणी नदी जो हरद्वार के पश्चिम शिवालिक परवत की नदी है गंगा के पूर्व नील परवत के अन्त तक १२ कोश चौड़ाई है और इन सीमाओं तक वस्ती के चिन्ह भी मिलते हैं अन्त को इन क्षत्रीयों का बंश बढ़ते २ और राज्य आपस में बस्ते २ राज्य पदवी इस बंश से जाती रही अब केवल कृषिकार जमींदार रह

---

(१) आहा हमारे इस देश में कैसे धर्मात्मा प्रजाभक्त राजा होगये हैं। अब के राजाओं की ओर जब ध्यान जाता है तो आंखों के आगे कुछ और ही समा बंध जाता और वैदिक मर्यादों के नष्ट हो जाने पर चित्त बहुत दुःखी होता है।

(२) इस दुर्ग की ईंट एक हाथ लम्बी एक बालिस्त चौड़ी और तीन अंगुल मोटी निकलती है पत्थरों की शिलाओं पर हाथी घोड़े और मनुष्यों की मूर्ति भी टूटी हुई मिलती हैं॥

(३) इस मायापुर में ४८ कोश के बीच में जहां पृथ्वी खोदी जाती है मकानों की नीव निकलती है पहिले समय में शहरों की बस्ती तीस चालीस अथवा पचास कोश से कम न होती थी जिन को पुरवा पुरी कहते थे पहिले मनुष्य इस भांति तंग मकानों में नहीं बस्ते थे जैसे कि अब बस्ते हैं वह अलग २ खुले मकान बनाकर मैदानों में बस्ते थे।

गये हैं अब भी आधे जिले से अधिक में यही पुंडोर वसते हैं और ज्वालापुर के पुंडोरों से जो मुसलमान होगये हैं सुनाजाता है कि फीरोजतुगलक बादशाह के समय में जो संवत् १३११ विक्रमी में दिल्ली के राज्यसिंहासन पर बैठा था उस समय मायापुरी में राजा दुनीचंद्र उक्त राजा ब्रवसमसिंह के बंश में था उस के तीन पुत्र भूपाल, भूपति और मान हुए और उन दिनों में सय्यद जलालउद्दीन जिसको मखदूम जहांनियान जहांगश्त कहते थे काबुल की ओर से भ्रमण करता हुआ मायापुर में आया उक्त शाहजी के रुचि दिलाने से बड़ा लड़का भूपाल मुसलमान हुआ और उसका नाम राव जमालउद्दीन रक्खा गया उसने ज्वलापुर में रहते हुये इस बस्ती का नाम भी जमालाबाद बदला था परन्तु यह नाम न चला निज नाम ज्वालापुर हो रहा यह ज्वालापुर के मुसलमान राजपूत अपने आप को उसी भूपाल को सन्तान बतलाते हैं * इस के पश्चात् अमीर तैमूर बादशाह तातार देश का सन् १३९८ ई० अर्थात् सम्वत् १४५५ विक्रमी में इस ओर आया तारीख फरिश्ता में लिखा है कि तैमूर ने हरद्वार पर जहां गंगा का निकास है पहुंच कर शिवालिक परबत के हाकिम राजा बहरोज पर जिहाद किया और वहां से शिवालिक के नीचे२ होता हुआ यमुना को उतर गया, और नगरकोट और जम्मू को लूटता हुआ तातार को चला गया इस बात से अनुमान होता है कि न जाने यह राजा कोई ब्रवसमसिंह के घराने से हो अब यह मायापुरी अर्थात् जितने भाग को अब मायापुर कहते हैं उजाड़

---

* मायापुरी की सीमा पुराणों में इस प्रकार से लिखी है कि पूर्व में हरद्वार से ५ कोश तक नील परबत के अन्त तक, पश्चिम में वर्षुणी नदी तक, उत्तर में १८ कोश हेमवती नदी रणस्तम्भ और शिवकण्ठ परबत तक, दक्षिण में १८ कोश नागतीर्थ तक, यह तीर्थ बाण गंगा के तट पर सुलतान पुर गांव के समीप शिवजटा वा पचेवल महादेव के नाम से प्रसिद्ध है ।

पड़ी है उसके कुछ भाग में जंगल है और कुछ भाग में खेती होती है और पूर्वकाल से इन मुसलमान राजपूतों की जमींदारी में चला आता है यहां नीवों के खोदने से मकानों के द्वारा ईशान कोण से कुछ नीचे को सूर्य्य मुख अर्थात् जिस ओर सूर्य्य निकलता है देखने में आते हैं जिन में सूर्य्य निकलते ही उस की किरण मकान के भीतर सीधी जाती हैं वास्तव में पूर्व मुखकेही मकान बनाये जाते थे जो मायापुर में निकलते हैं अब जो मकान पूर्व मुख बने देखते हैं वह ठीक पूर्व मुख नहीं है वह पहिले समय के पूर्व मुख मकान बड़े सुखदाई और आरोग्यता रखने वाले होते थे क्यों कि जिस मकान में प्रातः काल ही सूर्य्य की किरण सीधी भीतर जाती हैं उसका वायु नित्य स्वच्छ और शुद्ध रहता है, यह बात तत्व विद्या पढ़ने से अच्छे प्रकार समझ में आसकी है परन्तु अबके समयके शिल्पी लोगों का ध्यान विद्या न होने के कारण वहां तक नहीं पहुंचता यदि वह वायु शुद्धी जानते तो नगरों में ऐसे मकान क्यों बनाते जिनके रहने वाले सदैव दुर्बल और रोगी रहते हैं और जिनकी गलियों का वायु बिगड़ने से अत्यन्त दुख होता है ।

हरद्वार वर्णन

मेघदूत काव्य से सिद्ध होता है कि यह तीर्थ हरद्वार महाराजा भोज के समय * में नहीं था क्यों कि पंडित कालीदास ने जो उक्त राजा के समय में प्रसिद्ध कवि हुआ है अपने काव्य मेघदूत में कई विख्यात स्थानों के साथ कनखल का नाम लिखा है यदि उस समय में हरद्वार होता तो कनखल का नाम क्यों लिखता वह उक्त काव्य का श्लोक यह है ।

---

* महाराजा भोज सन् ५६७ ईस्वी अर्थात् ६२४ वैक्रम सम्बत में हुए थे ।

तस्माद्‌गच्छेर्नु कनखलं शैल राजा वतीर्णा ।
जन्हुकन्यासगरतनया स्वर्गसोपानपंक्ति ॥
गौरीवक्त्रभ्रकुटिरचनां विहस्यैव फेनै ।
शंभोकेशग्रहण मकरोदिं दुलग्नोर्मिहस्ता ॥
मेघदूत काव्य

(अर्थ) हिमालय पर यक्ष वैठा हुआ मेघदूत से कहता है कि हे दूत तू वहां से अर्थात् कुरुछेत्र से कनखलको जा जहां परवतों के राजा हिमालय से जन्हू की कन्या (गंगा) उतरी है जो राजा सगर की सन्तान के लिये स्वर्ग की सीढ़ो को पंक्ति है और गौरी की भ्रुकुटि के सदृश टेढी हो कर बहती है वह हँसती हुई फेन सहित चंद्रमा के समीप अपनी तरंगों के हाथों से महादेव के केश पकड़े हुये है ॥ यहां विचार करने का स्थान है जब कि राजा इवसमसिंह और उसकी सन्तान सम्बत् ३२१ विक्रमी से लेकर मुसलमानों के राज्य पर्यन्त यहां बसती रही और इस घराने में बड़े २ नामी राजा हूये जिनके दुर्ग और महलों के चिन्ह ४८ कोश के बोच में जहां तहां पाये जाते हैं तो क्या कोई राजा उसकी सन्तान में से ऐसा न हुआ जो इस हरद्वार को तीर्थ स्थान समझ कर कोई मंदिर वा घाट स्मरणार्थ वा पुण्य समझ कर न बनवाता जैसा कि अब तीनसौ वा साढ़े तीन सौ वर्ष से राजा लोग इस जगह पर बनवाते चले आये और बनवाते चले जाते हैं मायापुरो पुराण वनने का समय भी समझ लेना चाहिये कि यह ग्रन्थ मायापुरी वसने के पश्चात् ही किसी समय में रचा गया क्योंकि जिस पुस्तक में किसी बस्ती का वर्णन लिखा जाता है वह उसके पीछे ही का बना होता है ।

मुख्य बात यह है कि महाराज विक्रम से पहिले राजाओं के परस्पर युद्धों ने देश भर में अशान्ति फैलादी थी महाराज विक्रमादित्य

ने अपने बल और बुद्धिवैभव से युद्धों को रोका और देश में फिर शान्ति स्थापत की, महाराजविक्रम के पश्चात् महाराज भोज महाप्रताप-शाली और विद्यारसिक हुआ, इनके शासन समयमें व्याकरण, कोश काव्य और अलंकार का ऐसा चर्चा हुआ कि कालीदास सरीखा भेड़ चराने वाला भी मेघदूत रघुवंश कुमार संभव इत्यादि काव्यों का कर्त्ता बन गया जो कोई श्लोक बनाकर इनके पास लेजाता उसको बहुत धन देते थे और प्रतिष्ठा करते थे इनके समय में किसी ने शिवपुराण और मार्कण्डेय पुराण व्यास जी के नाम से बनाए थे जब राजा जी को यह समाचार मिला तो राजा ने इन में उन पण्डितों के हाथ कटवादेने का दण्ड दिया था और आज्ञा दी थी कि जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे ऋषि मुनियों के नाम से न बनावे यह बात उनके बनाए हुए संजीवनी इतिहास में लिख रक्खी है जो अब ग्वालियार देश के भिंड नगर में तिवाड़ी ब्राह्मणों के घर में पड़ीहै जिस को लखना के राय और उनके गुमाशते चौबे रामदयालु ने अपनी आंखसे देखा है उस में यह स्पष्ट लिखा है कि व्यासजी ने चार सहस्र ४०० सौ और उन के शिष्यों ने पांच सहस्र ६०० सौ श्लोक युक्त अर्थात् सब दश सहस्र श्लोकों के प्रमाण महाभारत बनाया था वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र और महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिताजीके समय में पच्चीस सहस्र और अब मेरी आधी आयु में तीस सहस्र श्लोकों का महाभरत मिलता है जो यदि एसेहो बढ़ता जायगा तो एक ऊंट का बोझा होजायगा और यदि लोग इस प्रकार ऋषि मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे तो भारतवर्षीय प्रजा भ्रमजाल में पड़कर वैदिक धर्म को छोड़ कर भ्रष्ट होजायगी इससे विदित होता है कि महाराज भोज को कुछ वेदों का संस्कार था ।। सो अब ऐसाही हुआ कि क्या राजा और क्या प्रजा सब वैदिक धर्म से बिमुख होगए हैं क्योंकि महाराज भोज के पीछे यह देश छोटे २ राज्यों में विभक्त होने और

दंड का भय न रहने से बहुत से पुराण बने, क्षत्रीयों के शास्त्र न पढ़ने से स्वार्थीयों ने जैसा कहा वैसाही धर्म स्थापित हुआ और वैदिक धर्म प्रचार घटता चला गया, प्रजा विद्या शून्य हुई और स्वार्थीयों के बचन मात्र में ही लौकिक और पारलौकिक कल्याण माना गया इनके पैरों में पड़ना और इन के बचन को मानना मानो इस संसार में यही धर्म और स्वर्ग प्राप्ति थी सो इस स्वार्थ का फल यह हुआ कि विदेशीयों ने इस धर्म और प्रजा की निर्बलता को देखकर इस देश को आ दबाया और लूटने, मारने, फूंकने, कतल करने और गुलाम बनाने में अपनी मनमानी उमंग निकाली, बुद्धिमानों की यह निश्चत बात है कि जब किसी जाति के नियम बिगड़ते हैं तभी उसपर आपत्ति आती है नीति शास्त्र का वाक्य है कि "बुद्धिर्यस्य बलंतस्य निर्बुद्धिश्च कुतो बलं" अर्थात् जिसको बुद्धि है उसी को बल है निर्बुद्धि को क्या बल ॥ जब प्रजा मूर्ख अर्थात् विद्याहीन हुई तो बुद्धि कहां रहती और जब बुद्धि नहीं रही तो बल कहां, राजाओं का विद्याहीन होना बड़ी भारी देश की क्षति और दुर्दशा का हेतु हुआ क्योंकि जो कुछ धर्म की रक्षा और उन्नति करने वाले थे राजा लोगही थे, धर्म राजा के ही आधीन होता है ॥

मायापुरी महात्म्य के देखने से ज्ञात होता है कि यह पुराण मुसलमानों के राज्य में बना है क्योंकि उसके दशम अध्याय में एक कथा लिखी है कि उज्जैन नगर में एक बर्धमान नामी वैश्य था उसके चार बेटे हुए जिनमें से एक लड़का चंद्राग्र म्लेच्छ वेश्या की संगति में रहने लगा और वेश्या के साथ खानपान उसका होगया, चोरी करने लगा और उसका दूत बना एक दिन उसने एक मंदिर में गोदान होते हुए देख कर अपने यहां हंसी करने के लिये गोदान करने लगा जिसको देखकर और म्लेच्छ हंसने लगे देखो प्रमाण ॥

म्लेच्छवेश्या समासक्तो वनांते सतिस्तथा ।

वेश्यादूतैश्च चौरैश्च समासक्तोऽजितेन्द्रियः ॥१॥
मायापुरी अ० १० श्लोक ८४
तत्कर्महसितुंचक्रे गोदान मन्दिराश्रितः।
अन्येपिम्लेच्छजातिया अहसंस्तमदालसाः॥२॥
मायापुरी अ० १० श्लोक ८६

(अर्थ) १ मुसलमान वेश्या पर आशक्त हुआ और अंत को वहां ही रहने लगा उसका दूत अर्थात् कासिद बना चोरी करने लगा और जितेन्द्रिय न रहा।

२ वह गोदान देखकर हंसीसे गोदान करने लगा, कि जिस पर और म्लेच्छ जाति के लोग मद के आलस में हंसने लगे।

आठ सौ वर्ष (८००) के लगभग बीते हैं कि जब मुसलमान इस देश में आए और रहने लगे, नहीं तो इससे पहिले इस देश में मुसलमान नाम को भी न थे।

तीर्थ का अनुसन्धान करने से स्पष्ट विदित होता है कि यह तीर्थ राजा मानसिंह सवाई जयपुर के कुछ समय पहिले स्थापित हुआ क्योंकि सब से प्रथम इस जगह पर राजा जी ने एक छोटा सा घाट शिवालिक परवत की कुछ कगर काटकर इस ही शिवालिक के पत्थरों से बनवाया था जिसकी आठ सीढ़ी ज्यूं कीत्यूं नये घाट से उत्तर की ओर गंगापुरी की हवेली के पास अब मौजूद हैं और उक्त घाट से मिली हुई राजा जी की छतरी भी खड़ी है(१) नहींतो यहां इससे पहिला कोई चिन्ह तीर्थ का नहीं मिलता और पंडो की बहीयां भी इसी समय का परिचय (सबूत) दे रही हैं क्योंकि उन की बहियों में जिनमें वे यात्रियों के नाम लिखते हैं सम्वत् पन्द्रह सो शताब्दी के अन्त और सोलह शताबदी के आरम्भ से (१५७५) से

(१)छतरी कहतेहैं मरे हुए की यादगार में मन्दिर बना कर उसमें मूर्ति स्थापन कर देते हैं राजा मानसिंह की छतरी ब्रह्मकुण्ड के बीच में पुराने घाट से मिली हुई खड़ी है।

पहिला कोई लेख नहीं मिलता। राजा मानसिंहजी का सिक्का देखने से विदित हुआ कि राजा जी सन् १५६५ ईस्वी में राजगद्दी पर बैठे थे जिसको ३३० वर्ष हुए और मोहम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह के रासनशीन थे और हफ्त हजारी मनसब रखते थे जब से राजा जी ने घाट बनवाया तब से यह ब्रह्मकुंड विख्यात हुआ और राजा के निश्चय का अनुकरण करके राजा, प्रजा और रईस स्नान को आने लगे और मेले होने लगे और मकान और मन्दिर बनवाने लगे। मायापुरी में इसका नाम गंगाद्वार लिखा है यह नाम पहिला प्रतीत होता है। क्योंकि जब राजा भागीरथ हिमालय की श्रेणी यों को काटता काटता अन्तिम श्रेणी शिवालिक को जो केदारदेश की दक्षिण सीमा है काटकर गंगा को हिमालय परवतों से बाहर भूमि स्थल में लाया तो गंगाद्वार नाम हुआ और हरद्वार नाम भी इस प्रकार बोला जाने लगा कि केदार देश जो महादेव जी का देश है और महादेव जी का नाम हर है तो केदारदेश का द्वार होने से हर का भी द्वार हुआ और इस देश के मनुष्यों को हिमालय में आने जानेके लिये मार्ग होगया(१)जैसा कि अकबर बादशाहके समय में हिमालय से बर्फ आकर आगरे में चार आनेसेर से आठ आने सेर तक बिकता था परन्तु स्वार्थी लोग इसके अर्थ, यह बतलाने लगे कि यह परमेश्वर का द्वार है यहां के स्नान और दर्शन से मनुष्य को स्वर्ग प्राप्त होता है यह तो संभव है कि यहां से आगे चल कर मनुष्य उस स्वर्ग देश हिमालय में पहुंच जाता है जिसका वर्णन पुराणों में लिखा है और मायापुरी माहात्म्य में इसकी महिमा के ऐसे २ श्लोक लिखे हैं

हरद्वारेकुशावर्त्ते निल्लकेविल्वपर्वते ॥
कनखलेतुकृतेस्नाने पुनर्जन्मनविद्यते ॥ १ ॥
दृष्ट्वाजन्मशतंपापं पीत्वाजन्मशतद्वयम् ॥
स्नात्वाजन्मसहस्राणि हरतिगंगाकलियुगे ॥ २ ॥

---

(१) हरद्वार और कोट द्वार हिमालय जाने के दो ही द्वार हैं

गङ्गागङ्गेतियोब्रूया द्योजनानांशतैरपि ॥
मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ॥३॥
गंगात्वदर्शनामुक्तिनजाने स्नानजंफलम् ॥४॥

(अर्थ) १ हरद्वार, कुशावर्त्त, निल्ल (चांडीका परबत) और बिल्ल परबत (हरद्वार का परबत) कनखल स्नान करने से फिर जन्म नहीं होता अर्थात् मोक्ष हो जाता है ।

२ दर्शन से सौ जन्म के पीने से दो सौ जन्म के और स्नान से हजार जन्म के पाप इस कलयुग में गंगा हरलेती है ।

३ जो कोई सौ योजन से गंगा २ कहे तो उसके पाप छूटकर विष्णुलोक को चलाजाता है।

४ हे ! गंगा तेरेहो दर्शनों से मुक्ति होती है ।

मोक्ष कोई ऐसा पद अथवा पदार्थ नहीं है जो केवल स्नान से ही मिल जाय और पाप कोई ऐसा सुगम नहीं जो दर्शन से ही दूर हो जाय यदि ऐसा होजाय तो परमात्माके न्याय में दोष आजाय हम को किसी की श्रद्धा, भक्ति और निश्चय से कुछ प्रयोजन नहीं परन्तु इतिहास में वही बात लिखी जायगी जो न्यायसे विरुद्ध नहीं हो, गीतमें लिखा है " अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् „ कृष्ण महाराज अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन ? इसमें सन्देह मतकर मनुष्य अपने कर्मों को अवश्य भोगता है जो मोक्ष सत्य शास्त्रों में लिखी है जिसके लिये ऋषि मुनियों और राजे महाराजों ने संसार के सब सुखों को त्याग और स्वादोंको और घासपात फलफूल खाकर जीवन भर बनों में तप करते २ खाक छानो और मरगये तो क्या वह एक गोता गंगा में नहीं लगा सके थे क्यों इतना कष्ट उठाते, यतेन्द्रिय हो कर संसार के आनन्दों को त्यागते देखो कैसे २ योगी, यति तत्त्ववेत्ता और ज्ञानी ध्यानी होते हैं और मोक्ष के लिये यत्न ही करते रहे तो क्यों उन्होंने इतना कष्ट उठाया मोक्ष बड़ा दुर्लभ पदार्थ है जो एक जन्म छोड़ जन्मान्तरों में भी प्राप्त नहीं होता और जब तक

मनुष्य को सत्य शास्त्रों को पढ़कर तत्व ज्ञान नहीं होता जब तक मोक्ष का अधिकारी नहीं होसक्ता।

इस तीर्थ के प्रचलित होने का मुख्य कारण यह है कि पहिले समय में तपस्वी महात्मा लोग इन स्थानों को तप करने योग्य गंगा का तट और बन देख कर वेदाभ्यास और योग सिद्धि के लिये उपयोगी देख कर वास किया करते थे इसी कारण ऋषिकेश और तपोवन इत्यादि स्थान आज तक विख्यात चले आते हैं मायापुरी माहात्म्य में भी जिन स्थानों को तप तीर्थ लिखा है उन को स्थान ही लिखा है कि अमुक ऋषि ने अमुक स्थानमें तप किया इस लिये यह पुण्यभूमिहै सो गृहस्थी लोग उन महात्माओं से ज्ञानोपदेश लेने को आया करते थे और उनकी सेवा कुछ खाने पीने से भी किया करते थे ऐसा होते २ विद्या की घटती के समय में जब मुसलमानों का बल हुआ उनकी सन्तान और आसपास के ब्राह्मणोंने उन महातमाओं की ऐसी प्रतिष्ठा और मानता देख कर अपनी आमदनी का बहुत ही सुगम रस्ता समझा कि इन पवित्र स्थानों को मुक्तिस्थान बतलाने लगे और उन आनेवाले को यजमान अर्थात् यज्ञ करने वाला और अपने को पुरोहित अर्थात् यज्ञ कराने वाला बतलाकर दान लेने लगे जब विशेष आमदनी होने लगी तो उन आनेवालों के नाम इसलिये लिखने लगे कि जिससे अपने यजमानों की याद रहे और आने वाले भी अपने पुरखाओं का निश्चय और नाम देखकर वैसी ही मान्ता करें * इसी तरह यह तीर्थ विख्यात हुआ नहींतो राजा इक्षमसिंह और उसकी संन्तान ने जो विक्रम के समय से मुसलमानों के राज्य तक यहां बस्ती रही तीर्थ का कोई भी चिन्ह न बनाया और न किसी इतिहास से उस समय में मेलों का होना पाया जाता है और जो दीवारों के पत्थरों पर खुदी हुई मूर्ति

---

* पंडे भी यात्रीयों से अपनी बहियों में नाम लिखाते हैं तो यह लिखाते हैं कि मैंने अपने पुरखा का लिखा देख कर उसको पुरोहित माना औरमेरी सन्तान में जो आवे इस को पुरोहित माने ॥

यहां निकलीं और निकलती हैं वह घोड़े, हाथी, बैल, गाय इत्यादि की हैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवी की कोई देखने में नहीं आई और न कोई शिवालय वा मिन्दर की नीव दिखलाई देती है एक मुनसिफ मिज़ाज मुनसिफ बाबू ईश्वरी प्रसाद ने अदालत दीवानी देवबन्द जिला सहारनपुर हरद्वार के पंडों की पोथियों को तक़सीम की नालिश पर फैसला १७ दिसम्बर सन् १८८३ ईस्वी को यह लिखा है कि पहिले समय में यहां वानप्रस्थ ब्राह्मण तपस्या किया करते थे जो बहुधा गृहस्थ लोग उन के दर्शन और उपदेश लेने को आया करते थे तो स्नान करके उनके खाने पीने के लिये कुछ दे जाया करते थे जब उनको गुज़ारे से ज्यादा बचने लगा और आमदनी होने लगी तो उन्हों ने अपने घरवालों को यहां ही बुलालिया और गृहस्थ बन गए और ज्यादा आमदनी होने से उन आनेवालों के नाम बतौर याददाश्त के लिखने लगे वही याददाश्त पोथी कहलाती है उनकी कोई क़ायम आमदनी नहीं इस लिये हमारी राय में वह ऐसी जायदाद नहीं जिनकी क़ीमत होसके इस लिये दावा खारिज किया गया।

राजा मानसिंह के घाट और छतरी बनने के पीछे मरहटों ने अपने राज्य में बहुत से मकान बनवाए और फिर अंगरेजी अमलदारी में राजा पटियाला, जम्मू, कांगड़ा, नालागढ़, टीहरी, चम्बा, लंढौरा इत्यादि और बहुत से सरदारों रईसों ने मकान तय्यार कराए जिससे हरद्वार में आबादी होगई सन् १७६० ई० अर्थात् सम्बत् १८१८ विक्रमी में जिसको १३४ वर्ष बीते हैं कुंभ का मेला था उस में वैरागी और सन्यासीयों का आपस में तकरार हुआ था और उस लड़ाई में अठारह हजार (१८०००) मनुष्य मारे गए थे मुसलमानों के राज्य के अन्त समय में फकीरों की समप्रदाओं ने मन मानी तरक्की पाई जिससे यह देश चौथाई से अधिक निकम्मा हो गया लाखों और करोड़ों ने महात्मा बन कर मुफ्तखोरी पर कमर बांधली और अलग२ सम्प्रदाय अर्थात् फिर्के बनाकर अलग २ गद्दी, मठ, और द्वारे क़ायम करके धन इकट्ठा करने

लगे, जिस से आपस में पक्षपात बढ़गया और शास्त्र मर्यादा सर्वथा टूटी, पूरा अंधकार और धर्म का लोप इसी समय में हुआ यह नियम है कि जब प्रजा के सिरपर कोई धर्मज्ञ राजा नहीं रहता तो प्रजा शुतर बे मुहार होजाती है क्योंकि राजा ही धर्म की रक्षा करसक्ता है स्मरण पड़ता है जानो थोड़ा हो काल बीता है कि मुसलमानों की अमला दारी से कुछ थोड़े हो दिन पहिले महाराजा भोज के राज्य में यह देश कैसे आनन्द को मौज मार रहाथा कैसी विद्याओं की तरक्की थी और कैसे २ शिल्पविद्या के जानने वाले थे देखो भोज प्रबन्ध में लिखा है ॥

सरकार अंगरेज कम्पनी बहादुरने इस मुल्क अर्थात् पश्चिमोत्तर देश पर सन् १८०३ ईसवी में महाराज दौलतराव सिन्धिया मरहटे से दखल पाया था यह वृत्तान्त इस तरह पर है कि इस दुआब पर महाराज दौलतराव सिन्धिया की तरफ से जनरल चार्लस पैरोन फरांसीसी नाजिम इस दुआब का था कई वर्ष पहिले यह जनरल नव्वाब निजामअलोखां बहादुर हैदराबाद वाले के यहां फौज का कर्नेल रहा जब १ सितम्बर सन् १७९८ ईसवी को नव्वाव की सुलह सरकार कम्पनी बहादुर से होगई तो वह नौकरी से अलहदा होकर अपने साथियों समेत महाराज दौलतराय सिन्धिया का नौकर होगया पहिले इस मुलक का नाजिम माधवजी सिन्धिया की तरफ से जनरल डिबाईन फरांसीसी था जब माधवजी सिन्धिया मरगये तो जनरल डिबाइन बहुत कुछ रुपया लेकर विलायत को चलागया महाराजा माधवजी के कोई सन्तान नहीं थी इस लिये उन का भतीजा दौलत-राव सिन्धिया उन की गद्दी पर बैठा महाराज दौलतराव ने जनरल पैरोन को नाजिम इस मुल्क का मुकर्रिर किया और उस ने अपनी छावनी अलीगढ़ में डाली और जो लोग डिबाईन साहब के वक्त में मुन्तजिम जिलों के थे उनको मौकूफ करके हर जगह पर अपनी तरफ से किलेदार, अम्माल, दीवान और दारोगा कायम किये और तमाम

आसपास के राजाओं से राह रसम और जानकारी पैदा करली जब एक बार दौलतराव सिन्धिया ने पैरोन साहब को उज्जैन में बुलाया तो यह साहब बड़ी सजधज के साथ महाराज से मिला परन्तु लखवा और नाना फरनवीस और माधवराव फालकिया को उसकी यह सजधज न भाई और ईर्षा पैदा होगई इन लोगों ने महाराज से हरएक तरह की बुराई करके महाराज को उसकी तरफ से बद गुमान करदिया और उसको कैद कराने के पीछे पड़े और महाराज ने बिना आगापीछा सोचे इन स्वार्थीयों की बात पसन्द करके जनरल पैरोन से जमाखर्च दुआब का मांगा यह जमाखर्च मांगना मानो उसके लिये कैदका सामान था परन्तु यह मनुष्य बड़ा बुद्धिमान था और महाराज के सब मामलों से खबर रखता था जब कुछ न बन पड़ी तो महाराज के ससुर सरजीराव को नौलाख रुपया रिशवत का देकर छुटी पाई और वहां से डाक लगाकर अलिगढ़ में पहुंचा और अपने मित्रों रायसिंह दीवान राजा भरतपुर और जीवनखां वकील राजा अलवर और अम्बाजी मरहटा किलेदार ग्वालियर की सलाह से अंगरेजों से मिलगया और जनरल लेक साहब की फौज समेत कानपुर से बुलालिया, निदान सन् १८०३ ईस्वी में जनरल लेकसाहब ने अंगरेजी फौज से अलीगढ़ को घेर लिया और २१ अगस्त सन् १८०३ ईस्वी को थोड़ीसी लड़ाई होने पर जो मिलावटी थी जनरल पैरोन हारगया ईश्वर की माया उस दिन पृथ्वी भी कांप उठी अर्थात् उस दिन पृथ्वी पर ऐसा भूचाल आया कि सारी पृथ्वी थरथराती थी और पहाड़ों से पत्थरों के गिरने का शब्द होता था और यह भूचाल कभी २ एक महीने तक आतारहा और इस ही भूचाल से इस जिले के इलाके खादर परगने सुलतानपुर में पृथ्वी फटकर एक नाला जारी होगया लेकसाहब ने ४ सितम्बर सन् १८०३ ई० को किले पर कबजा करलिया और जनरल पैरोन सिन्धिया की नौकरी छोड़ कर अंगरेजों की हिमायत में आगया अब जनरल लेकसाहब सीधा दिल्ली के फतह करने को चला वहांभी

महाराज सिन्धिया की फौजों पर एक फरांसीस जनरल था निदान सिन्धिया की फौज यहां भी हारी और इस लड़ाई में सिन्धिया के तीन हजार आदमी मारेगए, दिल्ली फतह कर के लेकसाहब ने शाह आलम बादशाह के हजूर में हाजिर होकर मुलाकात हासिल की बादशाह एक पुराने छोटे से शामयाने के नीचे बैठे थे और बारह हजार रुपया महीना मरहटों से पाते थे जनरल लेकसाहब को मिलकर खुश हुए और यह खिताब जनरल साहब को बखशा "समसामुद्दौला अशज़ुउलमुल्क खान दौरानखां जनरल जर्नेल लेकबहादुर सिपाह-सालार फतहजंग यके अज़ साहबान कौनसिल व सरलशकर अफवाज़ बादशाह आलम बादशाह इंगलिस्तान व कम्पनी अंगरेजी बहादुर मुतअल्लके किशवर हिन्दुस्तान" फिदवी शाह आलम बादशाह गाजी लार्ड लेक साहब ने कर्नल आकटरलोनी को कुछ सिपाहियों के साथ दिल्ली में छोड़ा और आप वहां से रवाने होकर मरहटों से आगरा लेलिया और फिर बसवाड़ी में पहुंचकर मरहटों को ऐसी हार दी कि जिसमें उनके सात हजार आदमी मारेगए और दो हजार कैद हुए इस हार से सिन्धिया की हिम्मत टूट गई और उसने सरकार अंगरेज कम्पनी बहादुर से सुलह करके मुल्क दुआब गंगा और यमुना और दाहिने किनारे यमुना का सरकार कम्पनी बहादुर को सौंप दिया और अहदनामा दोनों सरकार का मुकाम सुर्जी अंजनगांव में ३ दिसम्बर सन् १८०३ इस्वी को लिखा गया जिसकी नकल यह है ।।

नकल अहद नामा ।

अहद नामा सुलह दरमियान आनरेबिल ईस्ट इन्डिया कम्पनी और उनके दोस्तों के एक फरीक मारफत मेजर जनरल आनरेबिल आर्थर वेल्सली साहब बहादुर और महाराज आलीजाह दौलतराव सिन्धिया

फरीक दूसरा मारफत अटाल महादेव व मुनशी कमल नयन व जसवन्तराव गोरपढ़ा अमीरुल उमराव नाना रावहरी जिन्हों ने अपने २ अखतियारात आपस में जाहिर किये ॥

शर्त १—दोस्ती और इत्तफाक हमेशा को दरमियान आनरेबिल कम्पनी उनके दोस्तों के एक फरीक और महाराजा आलीजाह दौलतराव सिन्धिया फरीक दोयम के रहैगी

शर्त २—महाराजा दवामी हकूमत किलों और इलाकों और हकूक दुआब (मुल्क दरमियान गंगा व यमुना) और वह सब किले और इलाके और हकूक मराफिक उन इलाकों का जो उत्तर की तरफ इलाके जयपुर व जोधपुर और राना गोहद के हैं जिनकी फहरिस्त नत्थी हैं आनरेबिल कम्पनी और उनके दोस्तों और रफीकों को देते हैं और वह इलाके जो दरमियान जयपुर और जोधपुर और मुल्क जयपुर के दक्षिण जो पहिले से महाराज के कबजे में हैं वह महाराज की मिल्कियत में रहेंगे।

शर्त ३—महाराज दवामी हकूमत कसबे और इलाके किला बुरुज और किला अहमद नगर इलाके समेत सिवाय उन इलाकों के जो इस अहद नामे की आठवीं शर्त में लिखे हैं जो महाराज के पास रहेंगे आनरेबिल कम्पनी और उनके रफीकों को देते हैं।

शर्त ४—महाराज वह सब इलाका भी आनरेबिल कम्पनी और उनके रफीकों को देते हैं जो लड़ाई के शुरु से उनके पास था और कोहिस्तान अजन्टी के दक्षिण और किला और जिला जान्हापुर और शहर और किला कन्दापुर और दूसरे जिले दरमियान कोहिस्तान और गोदावरी दरया के हैं।

शर्त ५—महाराज आलीजाह दौलतराव सिन्धिया अपनी और अपने वारसों और जायनशीनों की तरफ से किलों और इलाकों और हकूक व मराफिक का जो शर्त २।३।४ में दिये गए दावा छोड़ते हैं और सब दावे हरेक किसम के निसबत गवर्नमेन्ट अंगरेजी और

उनके रफीकों मिसल सूबेदार दकन पेशवा व अनन्दराव गायकवाड़ के भी छोड़ते हैं।

शर्त ६—किला उसीर गढ़ व शहर बुरहानपुर व किला देवलगढ़ व हुदूद व इलाके खानदेश व गुजरात मुतअल्लिक किलों मज़कूर महाराज दौलतराव सिन्धिया को वापिस मिलेगा।

शर्त ७—जोकि महाराज दौलतराव सिन्धिया ने बयान किया कि जिले धौलपुर व बाड़ी व राजाखेड़ा जो मुल्क जयपुर, जोधपुर और गोहद के उत्तर में हैं उनके खानदान को बतौर इनाम शाहनशाह हिन्दुस्तान से जागीर में मिले हैं और जो जमीन वाकअ हिन्दुस्तान इस अहद नामे की दूसरी शर्त की रूसे आनरेबिल कम्पनी और उनके रफीकों को दीगई है वह स्वर्गवासी माधवजी सिन्धिया के खानदान को जागीर में है और दूसरे इलाके बड़े सरदारों के जो उनकी खिदमत में हाजिर रहते हैं उनको मिले हैं और उन सब को तकलीफ होगी अगर उनका मुनाफा इलाकों का उनसे ले लिया जाय इसवास्ते यह वादा होता है कि महाराज बतौर इनामके आराजी धौलपुर व बाड़ी व राजाखेड़ा अपने पास रक्खें और बालाबाई साहब और मनसूर साहब और मुन्शी कमलनयन और तोकाजी जमधर और अमराजी जाधव और दरदा चरमी अपनी २ जागीर हिमायत में आनरेबिल कम्पनी के रक्खेंगे और सिवाय इसके नुकसान से बचाने और तकलीफ रिआया की निगाह से जो उनको इस इन्तजाम से होगी यह वादा किया जाता है कि आनरेबिल कम्पनी चाहे नकद पेन्शन चाहे जागीर जो गवर्नमेंन्ट अंगरेजी की मर्जी होगी उन सरदारों वगैरह को देंगे जिनके नाम महाराज लिख भेजेंगे बशर्ते इसके कि नकद या जागीर जो उनको दी जायगी या जो उनके पास होगी सतरह लाख रुपये सालाने से जियादह मा उन आराजी और इलाकों के वास्ते बालाबाई साहब और मनसूर साहब और मुनशी कमलनैयन और तोका जी जमधर और अमराजी जाधव और दरदाचरमी के नाम कायम हैं

न होगी और बशर्त इसके कि कुछ फौज मुलाजिम इलाकों धौलपुर और बाड़ी और राजाखेड़ा या किसी और इलाके या जागीरदारी में माल गुजारी तहसील करने के बहाने या किसी और हीले से दाखिल न होगी।

शर्त ८ - जोकि महाराजा दौलत राव सिन्धिया ने बयान किया है कि उनके खानदान के पास बाजे इलाके और गांव वगैरह वाकअ इलाके राव पंडित प्रधान हस्ब तफसील जैल रहे हैं।

परगनह चमरकुंडी ६ गांव परगनह पूना
जमगांव २ गांव परगहन वाही
राजन गांव ६ गांव परगनह टयालूद ॥ आधा परगनह शौगांव
५ गांव परगनह बेदोपुर गांव।

५ पाचगांव परगनह पाटन
५ गांव परगनह नवा
५ गांव परगनह करला
} २ गांव वाकअ परगनह पेड़ा

यह सब गवर्नमेन्ट अंगरेजी ने और उनके रफीकों ने कबजा किया है यह वादा होता है कि यह आराजी और गाँव उनको वापिस दिये जायंगे बशर्ते इसके कि कुछ फौज मुलाजिम उनको आराजी और गांवों मजकूरह तहसील मालगूजारी के बहाने या किसी और हीलेसे दाखिल न होगी।

शर्त ९—जो कि अकसर अहदनामे गवर्नमेन्ट अंगरेजी ने अकसर राजा वगैरह से किए हैं जो अब तक महाराज आलीजाह दौलतराव सिन्धिया के मुलाजिम जागीरदार थे और वह अहदनामे इससे मुसतहकम (दृढ़) हुए और महाराज इस तहरीर की रूसे कुल दावे अपने उन राजाओं वगैरह की निसबत जिनके साथ अहदनामे जुदा हुए हैं छोड़ते और बयान करते हैं कि वे उन की हकूमत और अखतियार से आजाद (अलहदा) हुए व शर्त इस के कि कोई इलाका महाराजो का इलाकों राज जयपुर व जोधपुर व राणा गोहद के दक्षिण की तरफ जिनका महासिल महाराज ने या उन के आमिलों ने तहसील किया

हो या जो बनाम निहाद सरन्जामी खर्च फौज के मुकर्रिर हों इन अहदनामों की रू से उनको न दिये जांय फहरिस्त उन लोगों की जिनके साथ में अहदनामे हुए हैं महाराज दौलतराव सिन्धिया को दीजायगी जब इस अहदनामे को तसदीक हिज़ एक्सलेन्सी गवर्नरजनरल कर देवेंगे ॥

शर्त १०-आइन्दे इस के पीछे किसी शख्स से मजाहमत बाबत उस के शामिल होने जंग हाल (अर्थात् लड़ाई हाल) के न होगी ॥

शर्त ११-यह वादा होता है कि हकूक महाराज पेशवा की निस्बत बाजे इलाके मालवा और और जगहों के पहिले की मुआफिक बहाल रहेंगे अगर तकरार निस्बत उन हकूक के पैदा होगा तो यह इकरार किया जाता है कि आनरेबिल कम्पनी दरमियान में होकर इनसाफ से पेशवा और महाराज के दरमियान सालसी और फैसला करदेगी और जो फैसला इस तरह होगा उसको दोनों फरीक कबूल और मंजूर करेंगे और उस के मुताबिक अमलदरामद होगा ॥

शर्त १२-महाराजा दौलतराव सिन्धिया बज़रिए इस लिखत के कुल दावे निसबत शाह आलम बादशाह के छोड़ते हैं और अपनी तरफ से इकरार करते हैं कि वह बादशाह के मामलों में आइन्दे दस्त-अन्दाजी न करेंगे ॥

शर्त १३—महाराजा आलीजाह दौलतराव सिन्धिया इकरार करते हैं कि वह हरगिज़ किसी फरांसीस या किसी और रिआया मुल्क यूरोप या अमेरिका को जो गवर्नमेन्ट अंगरेजी से जंग करते हों और नीज किसी रिआया अंगरेजी को चाहे वह अंगरेज हो या हिन्दुस्तानी बगैर मर्जी गवर्नमेन्ट अंगरेजी के मुलाजिम नहीं रक्खेंगे अगर मुलाजिम होगा तो उसको भी न रक्खेंगे ॥

शर्त १४-ब नजर इसतहकाम सुलह (अर्थात् कायम रहना सुलह) और इत्तफाक जो अब दोनों सरकार में हुआ है यह वादा होता

है कि मोतबिर अफसर हर एक सरकार के दूसरी सरकार के दरबार में हाज़िर रहेंगे।

शर्त १५—आनरेबिल कम्पनी ने जो अहदनामे हिफाजत के साथ सूबेदार दकन और महाराजे राव पंडित प्रधान के किये हैं जिसकी मुतावकत महाराजा आलीजाह दौलतराव सिन्धिया किया चाहते हैं इस वास्ते उन को भी फायदे अहदनामों मजकूर में शरीक किया गया और आनरेबिल कम्पनी व नज़र हिफाजत आइन्दे मुल्क महाराजा के वादा करते हैं कि दरसूरत उन के मनजूर करने अहदनामा मजकूर हवाला के वह अरसे दो महीने में चन्द पलटन पियादगान तोपखाना व सामान मुनासिब और ज़रूरियातके सरंजाम करदेंगे और उस फौज का खर्चा आमदनी इस इलाके से अदा होगा जो शर्तो २।३।४ की रूसे मिला है मगर यह भी शर्त है कि अगर वहिबूद गवर्नमेन्ट महाराजा के वास्ते यह मुनासिब और बेहतर हो कि वह अहदनामा मज़कूर हवाला को मंजूर करें तो यह इंकार मुज़िर और खलल अन्दाज बीच दीगर शरायत इस अहदनामे के न होगा और तामील उन सब को ऊपर फरीकैन मआहिद और वारसों और जायनशीनों के वाजिब और फर्ज होगी॥

शर्त १६—इस अहदनामे को तसदीक महाराजा दौलतराव सिन्धिया आज की तारीख से आठरोज के अरसे में करेंगे और नकल मसौदे का मेजर जनरल वेल्सली साहब को दी जायगी॥ मेजर जनरल वेल्सली साहब वादा करते हैं कि इस अहदनामे की तसदीक हिज़ एक्सलन्सी मोस्टनोबिल गवर्नरजनरल इनकौनसिल करेंगे और नकल मसौदे की महाराज को तीन महीने के अरसे में मिलेगी या अगर मुमकिन होगा तो उस से पेशतर दी जायगी॥

हुक्म देने इलाकों का मेजर जनरल वेल्सली साहब को बरवक्त तसदीक होने इस अहदनामे के दिया जायगा मगर किला उसीरगढ़ और देवलगढ़ और दुहद उस वक्त तक सपुर्द न किये जावेंगे जब तक

यह खबर न दी जायगी कि इलाकों में से महाराजा के सब अफ़सर और फौज चले गये हैं ॥

अलमकूँम मुकाम सर्जी अंजन गांव ब तारीख ३ माह दिसम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक ५ माह रमज़ान सन् १२१३ फसली॥ दस्तखत आर्थर वेल्सली दस्तखत अट्टल महादेव दस्तखत नारायहरी दस्तखत कमलनैयन।

तसदीक़ किया गवर्नरजनरल इन कौनसिल ने ब तारीख १३ माह फरवरी सन् १८०४ ई० ॥

तसदीक़ किया नवाब निज़ाम ने ब तारीख २८ अप्रेल सन् १८०४ ई० तसदीक़ किया पेशवा ने ब तारीख १४ माह मई सन् १८०४ ई०

महाराजा माधोजी सिन्धिया और दौलतराव सिन्धियाके राज्य में हरद्वार के यात्रीयों से महसूल लिया जाताथा अर्थात् पंजाबी यात्रिसे सवा रुपया १।)फी आदमी और इस देश अथवा दूसरे देशवालों से एक टका अर्थात् दो पैसे लिये जातेथे चूंकी महसूल लेने की कनखल में पश्चिम की तरफ पीपल के पेढ़ के नीचे जहां अब पुलिस है और पीपल का वह पेढ अब तक खड़ा है थी, चौकी के अहलकार यात्रियों की पहिचान के लिये एक पत्ते पर घी रखते थे और यात्री से पूछते थे कि यह क्या है जो उसने कहा कि घ्यो तो मालूम होगया कि पंजाबी है और जो कहा कि घी है तो मालूम होजाता था कि देशी आदमी है उन दिनों राजा रामदयालसिंह गूजर लंढोरेवाले का पैसा चलता था और गोल पैसा मन्सूरी पैसे से दोगुना होता था और मजदूर को सारे दिन की मजदूरी में दो पैसे मिलते थे उन दिनों मजदूर उलही मज़दूरी में आनन्द और बेपरवाह रहते थे अब तो चार आने में भी गुजारा नहीं होता यह रामदयालसिंह गूजर भी हरद्वारी राजा कहलाया है क्योंकि जब मरहटों ने गुलाम कादिर का पीछा किया और पत्थरगढ़ पर जो नजीबाबाद के पास है चढ़ाई की तो ना-

हरसिंह रामदयालसिंह के बाप ने मरहटों की फौज गंगा के एक ऐसे घाट को उतरवादी थी कि फौज पैदल उतर गई और इस खिदमत के बदले मरहटों के दरबार से खिताब राजगी का मिला था।

सुलह होने के पश्चात् सरकार अंगरेज़ कम्पनी बहादुर ने दुआब का बन्दोबस्त करना आरम्भ कर दिया और हरद्वार का बन्दोबस्त यह किया कि जो नीचे लिखा जाता है।

तर्जुमा चिट्ठी सेक्रेटरी टू गवर्नमेंट मुकाम कलकत्ता बनाम मेजर लेक साहब बहादुर सेक्रेटरी कमान्डर इनचीफ मवरिखे ७ मार्च सन् १८०४ ई० बाबत इन्तजाम मेले हरद्वार।

नव्वाब गवर्नरजनरल कौनसिल में बहुत जरूरत समझकर तजवीज फर्माते हैं कि वास्ते बन्दोबस्त और खबरगीरी मेले हरद्वार के जो नजदीक आने वाला है पहिले से इन्तजाम करना चाहिये इस वास्ते लिखा जाता है कि कमान्डर इनचीफ नीचे लिखे मज़मून पर ध्यान देवें।

अगर कमान्डर इनचीफ ने कोई हुक्म जारी नहीं किया हो तो अब चाहिये कि फौज मुनासिब वास्ते भेजने हरद्वार के तजवीज करें ताकि सब लोग मेले में ताबेदार हुक्म गवर्नमेंट के रहें और जो कुछ असबाब मेलेवालों और सोदागरों का जाता रहे उसकी जमानत लेवें अगर गया हुआ असबाब न मिलेगा तो जामिन से लिया जायगा।

कमाण्डर इनचीफ हुक्म मुनासिब वास्ते लगाने महसूल के मेले हरद्वार पर जारी करें और कौन्सिल में तजवीज हुई है कि एक अफसर वास्ते लगाने महसूल के मुकर्रर किया जाय सब आमदनी महसूल की उसके अखतियार में रहे, मेले में सब तरह अमन रक्खे, कमान्डर इनचीफ अफसरों में से जिसको खाली देखें वास्ते काम के तजवीज करें।

कमान्डर इनचीफ को शायद याद हो या नहीं कि अप्रैल के महीने में बरेली के सौदागरों ने मेले हरद्वार में तजवीज सौदागरी

की करनी चाही थी मगर उनकी आपस में कुछ नाइत्तफाकी होगई और वह तजवीज़ मौकूफ रही अगर अब तजवीज़ कमान्डर इनचीफ की हो कि तिजारत से बहुत फायदा होगा तो प्रेसीडेंसी की चीजें जो बिकने के लिये हरद्वार और रुहेलखण्ड में आती हैं आनरेबिल कम्पनी की तरफ से मंगाकर कारबार तिजारत मारफत सौदागरों बरेली के जारी फरमावें।

हाकिमान् मुतैयनह मेले हरद्वार को हिदायत करते रहें कि किसी तरह की बदइन्तज़ामी महसूल लगाने में न आवे और गवर्नर जनरल की कौन्सिल में रिपोर्ट हालात की जो कुछ जरूरी समझें भेजते रहें।

तरजुमा चिट्ठी लेक साहिब मिलिटरी सेक्रेटरी बनाम विलियम लेसिस्टर साहब कलक्टर जिला मुरादाबाद मवर्रिखे १३ मार्च सन् १८०४ ई०

बमूजिब हुक्म कमान्डर इनचीफ के तुम्हारे पास हिदायत लगाने महसूल की मेले हरद्वार में भेजता हूं कमान्डरइनचीफ चाहते हैं कि जो घोड़े और चौपाए आनरेबिल कम्पनी के इलाके में आवें उनपर पहिले महसूल लगाया गया था अब महसूल लगाना नहीं चाहिये इस हाल की खबर तमाम शहर के आदमीयों को करदो कि किसी के घोड़े या चौपाए पर महसूल नहीं लगाया जायगा और जो किसी चीज पर महसूल लगाया जावे तो बनिस्बत पहिली अमलदारियों के कम से कम दरजे पर महसूल लगाया जावेगा। मिस्टर घेतरी साहब तुम को इस हाल की खबर करेंगे, पहिले कोतवाल सहारनपुर मेले में आकर इन्तज़ाम महसूल लगाने का किया करता था साहब मौसूफ कोतवाल से भी हाल दरयाफ्त करेंगे।

तर्जुमा चिट्ठी मिस्टर बेटन साहब बनाम लेसिस्टर साहिब कलक्टर मुरादाबाद मवर्रिखे १२ मई सन् १८०४ ई०

मैं तुम्हारे पास हिसाब आमदनी मेले हरद्वार का मारफत भोलासिंह मुतैयनह मेला जो आपने मुकर्रिर करके भेजा था भेजता हूं हिसाब

के देखने से मालूम होगा कि मेले में बाहिरके लोगों से १४३०॥=) ३ पाई वसूल हुआ है इसमें से १४१॥) पेन्शन दारों को दियागया और बाकी १२८० =) ३ पाई खजाने में दाखिल करदिया गया पहिले साल के मेले को आमदनी २३००) की थी, १००००) दस हजार रुपया महसूल का चौपायों से वसूल होता था कुछ कम १३०००) तेरह हजार के करीब जमा हुआ था अब के मरतबे बमूजिब हुक्म कमान्डर इनचोफ के चौपाओं पर महसूल माफ होगया सिर्फ ८६१।–) १पाई की कमी है यह कमी महसूल की इस सबब से हुई कि सौदागर लोग मेले में नहीं आए तिजारत उनकी जारी नहीं हुई और चौपायों से महसूल बहुत जमा होता था यह भी बन्द रहा सिवाय इसके बहुत कम महसूल गवर्नमेंन्ट ने चीजों पर लगाया है फारसी रकम से मुतफर्रिक रकम चौपायों की मालूम होगी इस मेले में ५५० घोड़े वास्ते बिक्री के आए और ३३० बिके ८० गंगापार मुरादाबाद के जिले में चलेगए १४० दुआब को चलेगए ३८५ शुतर आए उन में से १०० बिके ५० गंगापार चलेगए बाकी सौदागरान वापिस लेगए बाबत पेन्शनदारोंके दस्तूरुलअमल हमने चिट्ठी ३ माह गुजश्ते के साथ भेजाथा मालूम हुआ कि जो लोग दावेदार पेन्शन के हैं उनके पास कोई सनदेह नहीं है कि कहां से उनको पेन्शन मिली थी मालूम होता है कि उनको सालियाना पेन्शन मिलती थी और वह सब पेन्शन दारान ब्राह्मण हैं दावे पेन्शन में कुछ शक नहीं हैं १०) दस रुपये मुन्दरजे हिसाब के उस शख्स को दये जाते हैं जिसके पास सनद दौलतराव सिन्धिया की है ।।

सन् १८२० अर्थात् सम्वत् १८७७ विक्रमी में कुंभ का बड़ा भारी मेला हुआ था और स्नान का पर्व रात को बतलाया गया था जब मेले का हल्ला हुआ अन्धेरी रात थी और राजा मानसिंह का

बनवाया हुआ घाट बहुत छोटा ढालू और तंग था मेले की ऐसी भीड़ हुई कि जो मनुष्य नीचे स्नान को उतरा फिर ऊपर नहीं आसका रात को कुछ खबर न हुई कि मेले का क्या हाल है हजारों प्राणी आपस में कुचले गये और भीड़ से मरगये सवेरा होतेही देखागया कि लाशों के ढेर जल में और घाटपर लगे हुएथे इसलिये सरकार कम्पनी बहादुर ने दयाभाव से दो वर्ष पीछे अर्थात् सन् १८२२ ईस्वी में एक दूसरा नया घाट दक्षिण की ओर सौ (१००) फीट चौड़ा और सीढ़ियों को थोड़ा २ ढाल देकर जिसपर मनुष्य दौड़कर चढ़सक्ता और उतर सक्ता है मिस्टर डोरी साहब बहादुर इञ्जिनियर द्वारा बनवाया जिसपर अब प्रजा बड़े सुखचैन से स्नान करती है ॥ सम्वत् १९१२ के कुंभ मेले में उदासियों और वैरागी फकीरों में स्नान पर तकरार हुआ वैरागी दल बहुत था जिस वक्त वैरागीयों ने हमला किया बहुत मनुष्य लड़ाई में घायल हुए उस वक्त सर्कारी अफ़सरों ने बड़ी कठिनता से बीच बिचावा किया पहिले मेले का बन्दोबस्त फ़ौज द्वारा होता था और अब मजिस्ट्रेट जिले द्वारा होता है पहिले हरद्वार की भूमि ज्वालापुर के मुसलमान राजपूतों के कब्जे में थी परन्तु सन् १८४७ व १८४८ ईस्वी में सर्कार ने यह बन्दोबस्त किया कि जिस जमीन पर जिस किसी का कब्जा बारह वर्ष का पायागया वह उसी के कब्जे में रही और बाकी जमीन पर सर्कारी कब्जा हुआ वह जमीन नजूल कहलाती है और हरसाल मेले में उससे किराया वसूल होकर सर्कारी खज़ाने में दाखिल होता है इसही साल ज्वालापुर के इन मुसलमान राजपूतों ने दर्खास्त देकर सर्कार से ज्वालापुर में गौबध होनेकी इजाजत ली यह वही राजपूत हैं जो मायापुरी के राजा महाराजा इबसमसिंह पुंडीर के वंश में थे मुसलमान होकर कैसे निर्दयी कर्म पर उद्यत हुए ॥ सम्वत् १९२२ विक्रमी में महावारुणी पर्व था और इस पर्व का माहात्म्य सुन कर सारा पंजाब देश स्नान

को टूट पड़ा जिसकी भीड़ का कुछ ठिकाना न रहा (१) सर्कारी बन्दोवस्त करने वालों के भी हाथ पेर फूलगये इस भीड़ में कितनेही आदमी कुचले गए तबसे पूरा २ इन्तज़ाम मेले का कियाजाता है और हर एक यात्री से एक आना टेक्स और सौदागरी घोड़े पर एक रुपया और सवारी के घोड़े पर दो आना वसूल हो कर मेले के बन्दोबस्त में खर्च किया जाता है ॥ सन् १८६७ ईस्वी अर्थात् सम्वत् १९२४ का कुंभ भी बड़ा भारी हुआ सर्कार ने सफाई का बहुत इन्तज़ाम किया कि किसी तरह बीमारी न हो साहब कलेक्टर ने गंदगीजलाने के लिये चार बुर्ज पक्के हरद्वार के चारों ओर बनवाये जिनमें मेले का पाखाना जो टट्टीयों में जमा किया जाता था भट्ठे की तरह जलाया जाता था परन्तु स्नान के दिन मेले में ऐसी मरी पड़ी कि मेलेवालों को जान बचाने के लाले पड़गये मेले वाले वहुत कुछ भागे परन्तु भागते हुए मरते चले गये और सड़कों पर जहां तहां लाशे गिरती चली गई जब तक यात्री अपने घरों में पहुंचे मरतेही चलेगए उसवक्त को इस दुर्घटना का कुछ वर्णन नहीं होसक्ता चलते २ और बैठे२ और बोलते २ अच्छे भले चंगों के दम बात की बात में निकलजाते थे जब हरद्वार में लाशों को उठाने और फूंकने को अवकाश न मिला क्यों कि एक को उठाते थे और दश मरते थे तो लाशों को गाड़ीयों में भरकर खन्दकों में जो मायापुर के खेतोंमें खुदवाई गई थीं दबाया गया इस मरी में अनुमान से हड़े पीछे दश पन्द्रह मनुष्य बचे होंगे इस कुंभमें जम्मू के महाराज राजा रणबीरसिंह बहादुर स्नान को आए थे परन्तु जब मरी पड़ी तो फौज को यहां ही छोड़ पहाड़ों के रस्ते डाक लगा कर भागे

---

(१) इस मेले में टट्टी पाखानों का कुछ बन्दोबस्त नहीं था परन्तु इस मेले में मरी भी नहीं पड़ी और मेले की भीड़ से मायापुर के खेत फसल खाके उजड़ गये थे किसानों को बड़ा टोटा पड़ा था ॥

और पहाड़ों पहाड़ जम्मूँ पहुंच गये ॥ सम्वत् १९३६ का कुंभ बहुत भारी नहीं हुआ परन्तु इस मेले में भी मरी पड़ी थी इस के पीछे सम्वत् १९४८ का कुंभ बड़े सुख चैन से बीता और कुछ भी बीमारी नहीं हुई मिस्टर पैटर्सन साहब कलेक्टर का बड़ा सराहनीय बन्दोबस्त रहा परन्तु इस के अगले ही साल अर्थात् सम्वत् १९४९ में फिर महावारुणी पर्व्व आया और प्रजा इसका महात्म्य सुनकर दूर से इकट्ठी होगई मिस्टर होम साहब बहादुर का बन्दोबस्त था यह साहब मेलों के बन्दोबस्त से नावाकिफ थे जब यात्री बहुत आगये और स्नान के दो दिन बाकी रहे पांच सात यात्रीयोंको हैज़ा हुआ तो साहब बहादुर के मातहतों ने साहब को घबरा दिया कि मेले में मरी फैल गई और साहब को सलाह देदी कि मेले को उठा दो निदान मातहतों को सलाह में आकर साहब ने तुरन्त मेले के उठा देने का हुक्म दे दिया परन्तु मेले के उठाने से लोगों के दिलों में तरह २ के ख्याल पैदा हुए और जाहिर किया गया कि मेला उठाने से यात्रियों को नाना प्रकार की तकलीफ पहुंची अर्थात् यात्री ज़बरदस्ती उठाए गये और उठते समय एक दूसरे से बिछड़ गये किसी का असबाब रह गया किसी को खाना न मिला किसी को पानी न मिला और पुलिस की तरफ से बहुत ज़यादतीयां ब्रह्मकुण्ड पर हुईं इत्यादि २ अन्त को इन ख़यालों के पैदा होने का यह नतीजा हुआ कि पंडों और आम लोगों की तरफ से हज़ारों दस्तखत होकर मैमोरियल अर्थात् अर्जी सरकार को दी गई सर्कार ने अपने उदारचित्त से एक कमीशन इस मामले की तहकीकात के लिये मुकर्रिर करके लोगों के दिलों से इन ख्यालों को दूर किया और सब से उत्तम नतीजा इन बातों का यह निकला कि सर्कार ने दयाभाव से एक कमेटी पांच हिन्दु रईसों को कायम करके हुक्म दिया कि कमेटी हरद्वार जाकर आगे को सफ़ाई की बाबत जो कुछ रिपोर्ट करे सर्कार को मंजूर होगा सो कमेटी की रिपोर्ट पर सर्कार ने ब्रह्मकुण्ड और भीमगोडा

पक्का बनवा दिया और गंगा की धार से एक २ नाली जल को निकाल कर उन में छुड़वादी जिससे उस में हरवक्त जल निर्मल रहता है और एक कानून लाजिंगहौस अर्थात् यात्रीयों के उतरने की बावत सराई का कानून हरद्वार में जारी किया अब इन मेलों में घोड़ों की सौदागरी होती है परन्तु अब उन कीमती चीजों में से कोई भी नहीं आती जो एक अंगरेज एमी राबर्टस साहब ने सम्वत् १८८१ के कुंभ में हरद्वार पर देखीं थीं वह साहब लिखते हैं कि बड़े २ कीमती घोड़े हवा से तेज चलने वाले मुल्क रूम, अरब ईरान तूरान, काबुल कंधार संगलद्वीप और गुजरात काठियावार हरद्वार के मेले में बिकने आते हैं एक अरबी घोड़ा था जिसकी कीमत उसका मालिक आठ हजार (८०००) रुपये से एक रुपया भी कम न उतरा और ऊंट और डाक सांडनी जो बिना ठहराव सौ कोश का धावा करें और अनेक देशों और अनेक प्रकार के जंगलीजीव रीछ, चीता बघेरा, भेड़िया, नीलगाय, सुरागाय, और अनेक किसम के हिरन बिल्ली, कुत्ते अर्थात् जो जीव कुदरत ने बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा इस संसार में पैदा किया और जिसको मनुष्य पकड़ सक्ता और पाल सक्ता है बिकते देखे और कीमती वस्तुओं में अनेक देशों की अनोखी वस्तु और जवाहरात याकूत, हीरे, नीलम, पुखराज, मूंगा मोती और बड़े २ कीमती शाल दुशाले कशमीर, नैपाल, तिब्बत, भोट के और बड़ी अनोखी वस्तु द्वीपद्वीपान्तरों की देखने में आई एक माला हीरे के दानों की कीमती पचास हजार (५००००) रुपये की और मोतीयों की माला दश हजार (१००००) रुपये की और सुनहरी और चांदी के जड़ाऊ गहने हार, बाजूबन्द, पाजेब, कंगन इत्यादि और सब किस्म के बर्तन बिकने के लिये बाजार में देखे और साहब बहादुर लिखते हैं कि अब यह मेला पहिले मेलों की निसबत बहुत कम हुआ अर्थात् घटिया मेला हुआ अब के मेलों में देखने में आता है कि मामूली घोड़े के सिवाय कोई पशु किसी देश का नहीं आता और न किसी देश की कोई अनोखी वस्तु आती है बाजार में लकड़ी

और पत्थर के दानों की माला कीमती एक २ दो २ पैसे की और पीतल के मुलम्मा किए हुये अंगूठी छल्ले जिनका मोल कौड़ियां होती हैं विकते दिखाई देते हैं यदि हम पहिले मेलों की भेड़ भाड़ (जो हरद्वार के चारों तरफ तीन २ कोश तक मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते थे) और लाखों करोड़ों रुपये के कीमती मालों से निसबत देते हैं तो ज़मीन आसमान का अन्तर मान पड़ा है क्योंकि न तो अब वह माल रहे हैं और न वह खरीदार अब तो यह देश ही कंगाल होगया ॥

यहां पर प्रति दिन और प्रत्येक अमावस्या, पूर्णमासी, संक्रान्ति, को और उत्तरायण, दक्षिणायन, सूर्य्य ग्रहण, चन्द्रग्रहण, व्यतिपातयोग, अर्धोदययोग, जेष्ठमास की दशमी, रविवार सप्तमी, मेष की संक्रान्ति बारुणी, महा बारुणी, सोमवती अमावस्या और कुंभ इत्यादि को स्नान के मेले होते रहते हैं परन्तु बड़ा मेला हरसाल मेष की संक्रान्ति और सब से बड़ा कुंभ का बारहवें बर्ष होता है जिस में लाखों मनुष्य इकट्ठे होते हैं और निरंजनी, निर्वाणी, उदासी, निर्मले, बैरागी फकीरों की जमायत सुनहरे रुपहरे झंडे और निशानों के साथ और घोड़े, हाथी, ऊंटों और चांदी सौने के असबाब से बाजे बजाते हुये बड़ी सजधज से आते हैं इन लोगों का फ़ौजी ढंग होता है और सब तरह के ओहदेदार भी इनकी जमात में कायम, पहिले समय में* वैरागी और निरंजनी निर्वाणीयों की असल में फौज थी और फ़ौजी ढंग में हथियार बन्द रहते और लड़ाइयों में राजाओं को मदद किया करते थे यह लोग बड़े लड़ाकी थे जान तोड़कर लड़ते थे क्यों कि गृहस्थों की तरह इनको किसी का मोह नहीं था जहां चाहते रहते और राजा लोग इनके चेले बनते थे पहिले मेलों में हथियारबन्द आते थे परन्तु अब सर्कार रियासतों से बाहिर आते ही इनसे हथियार लेलेती है और उदासीयों

* यहां पहिले समय से अभिप्राय मुसलमानों के राज्य से है ॥

की जमात इन के देखा देखी थोड़े दिनों से और निर्मलों की सम्वत् १९१२ के कुंभ से बनी है निरंजनीयों और निर्बाणियों की जमातों में कुछ फकीर नंगे भी रहते हैं जिन को नागा कहते हैं वह शरीर पर भस्म रमाए रहते और कोई वस्त्र नहीं रखते हैं यहां इन के ठहरने के लिये पहिले से पक्की दीवारों के अहाते बने हुए हैं जिन को अखाड़ा बोलते हैं अखाड़ा के अर्थ भी फौज के उतरने की जगह के हैं उन में एक २ फकीर के लिये एक २ पक्की बुर्जी सी लैन अर्थात् कतार में बनी होती है जिन पर यह लोग दिन में बैठते हैं और पासही एक २ झूंपड़ी रात के बिश्राम को वनालेते हैं अखाड़े के बीच में एक चबूतरा बना होता है जिस पर लशकरी झंडा खड़ा किया जाता है और उसके नीचे भस्म अर्थात् राख का गोला रखते हैं जिसको शिव मान्ते और नित्य पूजा करते हैं जब पहिले दिन इन अखाड़ों में झंडा गाड़ा जाता है इस गोले की बड़ी भारी पूजा की जाती है जिस में कनखल ज्वालापुर और हरद्वार के रईस आकर पूजा पर यथाशक्ति रुपये भेट करते हैं और फिर मेले में यात्री लोग रुपये चढ़ाते रहते हैं परन्तु वरागी लोग अखाड़े नहीं रखते यह लोग गंगा की रौड़ी अर्थात् मैदान में झंडे गाड़कर नंगे धूनी लगाए पड़े रहते हैं और शालिग्राम की पूजा करते हैं परन्तु स्वभाव के बड़े कड़े होते हैं थोड़ी बात में लड़पड़ते हैं इन का वेष वह है जो महाराज रामचन्द्रजी बनों में जटा धारण कर के रहे थे उदासी फकीर अपने अखाड़ों में झंडे के पास शामियाना लगा कर और फर्श गलीचे बिछाकर उस के नीचे गुरु नानक साहब का ग्रन्थ रखते हैं और उस की पूजा उसी प्रकार करते हैं जैसे निरंजनी निर्बाणी शिव की करते हैं इनका इष्ट देव ग्रन्थ साहबहै निर्मले भी ग्रन्थ साहबको ही मानतेहैं परन्तु यह लोग फकीर नहीं हैं असलमें गृहस्थ सिक्ख हैं और भगवा कपड़ा रखने लगे हैं निरंजनीयों में से अलहदा होकर और भी कई अखाड़े रुक्खड़, सुक्खड़, कुकड़, गंदड़ और जूना अखाड़ा जिस

को भैरव अखाड़ा भी कहते हैं बन गए हैं जूना अखाड़ा में अलखिये फ-कीर होते हैं जो अलख कहकर भीख मांगते हैं प्रथम और आदि अखा-ड़ा यही कहलाता है और वास्तव में इस ही अखाड़े से अलहदा हो कर निरंजनी अखाड़ा बना है और इनके सिवाय आज दिन सम्प्रदायों का कुछ ठिकाना नहीं, नई सम्प्रदाय बहुत बनगई हैं और उन्हों ने अ-पनी मंडली बनाली है जैसे गरीबदासी, दादूपन्थी, चरणदासी इ-त्यादि और संन्यासीयों ने भी अपनी २ मंडिली अलहदा कायम करली हैं और उन के नाम अलहदा २ रखलिये हैं॥ गुसाईं, उदासी, निर्मले गांव खरीद कर जमींदारी साहूकारी करते हैं और मंडिली वाले गु-साईं उदासी, संन्यासी वेदान्त की पंचदशी इत्यादि संस्कृत में और बहुधा भाषा की पुस्तकें पढ़े होते हैं और धनवान राजा रईसों सेठसाहू कारों को वेदान्त सुनाकर अपना सेवक बना लेते और उन को ज्ञान उपदेश करते हैं कि जीव कोई नहीं सब ब्रह्महीं है और पाप पुण्य को भोगने वाली इन्द्रियां हैं इस चेतन को कुछ पाप पुण्य नहीं लगता (ऐसा कहना मानो मनुष्य को पाप से निडर करना है) और यह सं-सार जो दीख रहा है कुछ नहीं है और न हुआ न है केवल स्वप्न मात्र जान पड़ता है सो ऐसा ज्ञान सुना कर उनको अपना वशीभूत करके उनसे धन लेते और आनन्द करते हैं और अमीरों के भोग भोगते हैं परन्तु यह उनका वेदान्त कहने ही का है आप वह कर्म करते हैं जो गृहस्थों से बढ़कर हैं और नाम बढ़ाने के लिये बड़े २ महल कोठी बनवाते और अमीरों के ठाठ रचते हैं जैसे सम्पतगिरि नामी वेदान्ती ने कनखल में कोठी बनवा कर६००) सौ रुपयेका घंटा उसमें लटकाया है और आजदिन उदासीयों में विख्यात वेदान्ती केशवानन्द मखमली फर्श पर गद्दी तकीये लगाये ऐश्वर्य कररहा है और लोगों को इज्जत दिखाने के लिये बन्दूक और तलवारें पेशवाई में लेकर चलता है धा-मपुर और मुरादाबाद के बड़वे जो गृहस्थी होते हैं मेलों में अनेक प्रकार के रूप बनाकर यात्रीयों से मांगते हैं कोई तो सिद्ध बन कर

उलटा लटकता कोई कांटोंपर लेटता कोई लकडी के तखतेमें कीलें जड़-वाकर और उसपर लेटकर अथवा रेतमें सिर टेक ऊपर को पैर करके करामात दिखलाता है कोई गढा पृथ्वी में खोदकर उसमें अपना सिर गर्दन तक दबालेता और स्वांस लेने के लिए एक नल को ऐसे ढंग से लगाता है कि यात्री उसको जान नहीं सकते और देखकर अचम्भा मानते हैं और पैसे चढ़ाते हैं कोई आस पास अग्नि जलाकर तपस्वी बनजाता है कोई शरीर पर भस्मी लगाकर और एक हाथ के नाखून बढ़ाकर मौनियों का भेष धारण करता है और उस हाथ को जिसमें नाखून बढ़ाए रखते हैं ऊपर उठाये इशारे से यात्रियों से मांगा करते हैं।

जहूरी मुसलमान जो हिन्दू योगियों का भेष रखते और गाय वा बछड़ों को भगवे कपड़े की झूल उढ़ाकर हरद्वार की सड़कों पर लिये यात्रियों से पैसे मांगा करते हैं उनका वृतान्त बड़े ही अचम्भे का है अर्थात् वे उनके नीचे एक कपड़ा बिछाकर बांध रखते हैं वा बैठा देते हैं उन को पीठ पर किसी के खुर लटका होता है किसी की पूंछ के नीचे या गरदन पर इकट्ठा मास जिस पर बाल भी होते हैं और देखने में ऐसा मालूम होता है कि कुदरत ने इसकी पीठ वा गरदन पर एक दूसरा शरीर बछड़े वा बछड़ी का पैदा कर दिया है लटका होता है किसी के होटके नीचे मांस लटकता है किसी के पीठ वा पुट्ठों पर जीभ का सा मांस होता है किसी की पीठ वा पूंछ के नीचे पूंछ सहित आधा धड़ बछड़े का किसी के केवल दूसरी पूंछ ही लटकी होती है निदान वे किसी अनोखी ही बात के साथ देखने में आते हैं और वे लोग टल्ली वा शंख बजाकर यात्रियों को सुनाते रहते हैं कि देखो महाराज शिवजी की माया इस गौ वा बछड़े के पांचवा पैर वा यह दूसरा शरीर इसकी पीठ वा गरदन पर पैदा कर दिया है यह कामधेनु गाय वा शिवजी का वाहन नन्दीगण है इसकी पूजा करो यह तुम्हारी मनोकामना पूरी करेगी वा करेगा यात्री ऐसी अनोखी बता देखकर चकित रहजाते हैं और हाथ जोड़कर उनको पैसे रुपये

चढ़ाते और घास दाना मिठाई लड्डू पेड़ा और कचौरी पूरी खिलाते हैं कोई २ उन गायों वा बछड़े को एक छोटी सी सायदार गाड़ी में बैठाकर जिसके ऊपर भगवे कपड़े वा तखते लगाकर सायदार बना लेते हैं। और सितूनों और छत में सजावट के लिये कौड़ी सींकर सजा लेते हैं बाजार और सड़कों, गली, कूचों में लोगों को दिखाते फिरा करते हैं परन्तु आज तक किसी ने भी इन अनौखी बातों की तहकीकात नहीं की और न किसी ने आज तक सोचा कि यह क्या भेद है ऐसी गाय वा बछड़े को किसी ने भी कभी कहीं पैदा होते नहीं देखा और न कुदरत के विपरीत ऐसा पैदा हो सका है परन्तु आज कल लोगों को किसी बात की तहकीकात करने का ध्यान ही नहीं और न विवेकी बुद्धि उनमें पाई जाती है क्योंकि यह देश ही विद्याशून्य हो रहा है तहकीकात करने से मालूम हुआ कि जहूरी लोग किसी बछड़े वा बछड़ी को जो थोड़ी उमर का वा तुरन्त का पैदा हुआ होता है मारकर उसका आधा धड़ वा पैर वा पूंछ काट कर और किसी मोटे ताजे जवान बैल वा गाय की पीठ वा गरदन पर वा जिस जगह लगाना चाहते हैं छुरे से मांस चीरकर उसमें वह पैर वा पूंछ वा धड़ घुसा देते हैं और फिर दवा मरहम पट्टी लगाकर उसको चंगा कर लेते हैं और वह पैर वा धड़ उसमें जोड़ और पेवन्द की तरह जुड़ जाता है परन्तु इस दुष्ट कर्म से वह गाय वा बैल निर्बल हो जाते हैं पहिले का सा बल उनमें नहीं रहता बहुधा लोगोंने देखा होगा कि वे दुर्बल गाय वा बैल सड़कों पर सुस्त खड़े रहा करते हैं जो कोई इसकी तहकीकात करना चाहे वह जहूरी लोगों में रहकर देख सका है परन्तु वे इस काम को बहुत छिपाकर अपने घरों में करते हैं।

मायापुरी माहात्म्य में जो तीर्थ लिखे हैं उनका विस्तार पूर्वक वर्णन करने में यह ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा इसलिये विख्यात तीर्थ संक्षेप से नीचे लिखे जाते हैं और उनका माहात्म्य और पता मायापुरी के लेखानुसार दिखलाया जाता है।

तीर्थ जो हरद्वार में गिने जाते हैं।

नाम तीर्थ	पता	मायापुरी अनुसार माहात्म्य	विशेष वर्णन
ब्रह्मकुंड हरकीपैड़ी	शिवालिक परबत के नीचे	ब्रह्माजी ने तप किया	यहां स्नान करते और मरे हुओं के हाड़ डालते हैं।
गौघाट	ब्रह्मकुंड के दक्षिण	०	यहां एक भंगी अर्थात् चुहड़ा रहता है और जिससे अनजान में गौ मरजाती है वह हत्यारा यहां स्नान करता है और वह चुहड़ा उसके सिर में जूते मारकर शुद्ध करता है अबतो कसाईयों को बेचकर खासे धर्मात्मा बने रहते हैं शोक!
कुशावर्त	गौघाट के दक्षिण	यहां दत्तात्रेय ऋषि ने तपकिया	यहां पितरों को पिंड दिये जाते हैं और महाराज इन्दौर ने पक्का घाट और पिंडदानके लिये एक मकान बनवा दिया है।
विष्णुतीर्थ	कुशावर्त के दक्षिण	विष्णुजीने तप किया यहां स्नान करने से विष्णुलोक को जाता है	राजा मानसिंह लखनऊ वाले ने पक्का घाट और हवेली और शिवालय बनवादिया है।

समुद्रेश्वर महादेव	सेठ सूरजमल की धर्मशालामें	दर्शन	सेठ सूरजमल ने शिवालय बनवा दिया है।
विल्वपबरत	शिवालिक का पहाड़ जिससे ललितारौं निकली है	दर्शन महात्म्य	इसका नाम बिल्वपरबत इस कारण है कि इस पर विल्व अर्थात् बेल के पेढ़ बहुत हैं और इस फल को खाकर मनुष्य पेट भर सका है और सिवाय इसके इस परवत पर हरेक ऋतु के फल और कंद मूल ऐसे हैं जिनसे मनुष्य बिना अन्नके भली प्रकार जीवन व्यतीत करसक्ता है।
विल्वकेश्वर महादेव	विल्व परवत के नीचे ललितारौ के किनारे पर शिवालय बना हुवा है	दर्शन महात्म्य	
गणेश तीर्थ	मायापुर के पुल नहर के उत्तर निरंजनी अखाड़े के नीचे पक्का घाट	स्नान महात्म्य	
नारायणी शिला	सरकारी कोठीके पश्चिमज्वालापुर की सड़क के किनारे	पितरों को पिंडदान	

नाम तीर्थ	पता	मायापुरी अनुसार माहात्म्य	विशेष वर्णन
नील धारा	चंडी के परबत के नीचे गंगा की धार	स्नान महात्म्य	पहिले गंगा की धार परबत के नीचे को ही बहती थी नहर निकल ने से वहां से धार हटगई।
नील परबत	चंडी के परबत को नील परबत कहते हैं	परबत की छाया में गंगा स्नान माहात्म्य	चंडी से ६ कोस के फासले पर नजीबाबाद की सड़क के निकट एक टीले पर वही माया पुरी ईंट निकलती हैं।
चंडी देवी	०	दर्शन माहात्म्य।	पहाड़ के ऊपर मन्दिर राजा सुचेत सिंह जम्मू वाले ने सम्बत् १८८६ विक्रमी में बन वाया पहिले त्रिशूल चण्डी जिसकी पूजा होती थी एक लम्बा पत्थर सितन के आकार का पहाड़ के नीचे गंगा किनारे रक्खाथा और एक फकीर लक्कड़ शाह रहता था जब मन्दिर ऊपर बनगया तो लक्कड़ शाह उसको ऊपर लेगया ग्रन्थ कार के पिता उस समय वहां मौजूद थे अब वही त्रिशूल मन्दिर के कौने में रक्खा है।

अञ्जनी देवी	मन्दिर चंडी के निकट	दर्शन माहात्म्य	
गौरी शङ्कर महादेव	परबत के नीचे चंडी मंदिर के दक्षिण ओर	,,	एक ब्राह्मण का बनवाया हुआ मन्दिर है ।
निल्लेश्वर महादेव	गौरीशंकर के दक्षिण ढांग के ऊपर गंगा किनारे	,,	राजा सुचेतसिंह जम्म वाले का बनवाया हुआ शिवालय है ।
नागेश्वर महादेव	निल्लेश्वर के दक्षिण खोल में	,,	परबत की खोलमें एक लिंग रक्खा है ।
भीमगोडा	हर की पैड़ी के उत्तर में	स्नान महात्म्य	परबत से पानी गिरकर एक गढ़ेमें इकट्ठा हो जाताथा। अब सरकार ने पक्का कुंड बनवा कर और गंगा से नाली लाकर उसमें छुड़वा दी है ।
सप्त सरोवर	भीमगोडा के उत्तर	स्नान माहात्मय	यह जगह बड़ी रमणीक है गंगा का किनारा और निकट ही जंगल तप करने के लायक भूमि है ।

तीर्थ जो कनखलमें गिने जाते हैं ।

नाम तीर्थ	पता	माहात्म्य	विशेष वर्णन
पतित पावनेश्वर महादेव	कनखल की आबादी के उत्तर निर्वाणी अखाड़े में	दर्शन महात्म्य	
कनखल तीर्थ	०	स्नान महात्म्य	
दक्षेश्वर माहादेव	कनखलके दक्षिण ओर	दर्शन माहात्म्य	राजा रामदयाल की राणी धनकौर रियासत लंढौरे वाली ने सन् १८१० ईस्वी में मन्दिर बनवाया पहिले एक बट व्रक्षके नीचे लिंग रक्खा था ।
तिलवधेश्वर महादेव	कनखल के घाटपर	,,	राजा पटियाले की राणी माई आस कौर ने शिवालय बनवाया ।
सतिकुंड	कनखल के दक्षिण	स्नान महात्म्य	एक जोहड़ खुदा हुआ है कहते हैं कि राजा दक्ष का यज्ञ यहां ही हुआ था ।
नागतीर्थ	कनखल से दसकोस बाण गंगा के किनारे	०	इसको पचेवल नाथ भी कहते हैं ।

तीर्थ जो ऋषिकेश में गिनेजाते हैं।

नामतीर्थ	पता	महात्म्य	विशेष वर्णन
कुबजामृक	ऋषिकेश में	स्नानमहात्म्य	गर्म जल का एक सोता एक टोले से निकलता है उसमें तीन मोरीयों में होकर पानी आता है उन मोरीयों को गंगा यमुना सरस्वती कहते हैं इसके निकट ही एक और सोता निकला है जहां से यह सोते निकलते हैं एक छोटी ऊंचीसी पहाड़ी है उसके नीचे खोदने से सोत निकल आता है।
भरत मंदिर	,,	दर्शन माहात्म्य यहां भरत जी ने तप किया था	एक पुराना मन्दिर बना हुआ है ५०० वर्ष के लगभग का होगा
सुमित्रा तीर्थ अर्थात लक्ष्मण झूला	०	स्नान महात्म्य	यहां बहुत गहरा जल है।
लक्ष्मण कुंड	०	,,	०

नामतीर्थ	पता	महात्म्य	विशेष वर्णन
भैरवतीर्थ	०	स्नानमहात्म्य	
गालवतीर्थ	०	,,	
धर्मेश्वरमहादेव	०	दर्शन महातम	
मानेश्वरीदेवी	०	,,	
रम्भातीर्थ	वीरभद्रमहादेव	स्नानमहात्म्य	ये सब नीचे लिखे तीर्थ, वीरभद्र महादेव के निकट हैं रम्भा एक नदी है ।
सोमशर्म्मातीर्थ	,,	यहां तप करने से विष्णु भगवान के दर्शन मिलते हैं	यहां सोमशर्म्मा एक ब्राह्मण ने तप किया और विष्णु भगवान ने उसको दर्शन दिये ।
सुनन्दा तीर्थ	,,	दर्शन महात्म्य	
सुनन्दादेवी	,,	,,	
सुनन्देश्वरमहादेव	,,	,,	
नन्दी शिला	,,	,,	
शिवतीर्थ	,,	,,	
नन्देश्वरमहादेव	,,	,,	
वीरभद्र महादेव	,,	,,	
शिवकुंडी	,,	स्नानमहात्म्य	

लक्ष्मणेश्वरमहादेव	०	दर्शन महात्म्य	ये सब तीर्थ लक्ष्मण झूले से ऋषिकेश तक हैं इनका महातम मायापुरी में अलग २ लिखा है विस्तार भयसे नहीं लिखा।
मुनीकुंड	०	स्नान महात्म्य	
इंद्रकुंड	०	"	
वायुकुंड	०	"	
नन्दीकुंड	०	"	
कुमुद तीर्थ	०	"	
स्राषवतीर्थ	०	"	
विप्रषव तीर्थ	०	"	
सोमेश्वर महादेव	०	"	
पुंडरीक तीर्थ	०	"	
अग्नितीर्थ	०	"	
वायव्यतीर्थ	०	"	
वरुणतीर्थ	०	"	
वाराहतीर्थ	०	"	
सामुद्रिकतीर्थ	०	"	
शिलानदी	०	"	
धमधरनदी	०	"	

नामतीर्थ	पता	महात्म्य	विशेष वर्णन
विल्वबन	०	दर्शन महातम	
मुंडमालेश्वरीदेवी	०	,,	
पाटेश्वरीदेवी	०	,,	
पीतवर्ण शिला	०	,,	
शालीहोतेश्वर महादेव	०	,,	

इन के सिवाय अब बहुत मन्दिर और शिवालय बनगये हैं और प्रतिदिन बनते चले जातेहैं मन्दिर बनावनेका बड़ा पुण्य समझते हैं श्रवणनाथ फ़कीर का मन्दिर बड़ा रमणीक है संगमरमर की मूर्तियां बड़ी कारीगरी से बनी हुई रक्खीहैं जिनको हरएक यात्री देखने आता है और पैसे चढ़ाता है ॥ यह जीव जन्म मरण के दुखों से छूटकर मोक्ष उन कर्मों से प्राप्त करसक्ता है जो वेदों में लिखे हैं देखिये वेदोक्त तीर्थ यह हैं।

तीर्थमेव प्रापणीयोऽतिरात्रस्तीर्थे नहि प्रस्नान्ति ।
तीर्थमेवोदयनीयोऽतिरात्रस्तीर्थेन ह्युस्नान्ति ॥
श० कां० १२ अ० २ ब्रा० ५ कं० १ । ५ ॥
अहिंसन्सर्व भूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्य इति ।
छान्दोग्योपनि० ।
समानतीर्थेवासी । इत्यष्टाध्याय्याम् । अ० ४
पा० ४ सू० १०८॥

(अर्थ) १ अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्य्यन्त किसी यज्ञ को समाप्ति करके जो स्नान किया जाता है उस को तीर्थ कहते हैं क्योंकि उस कर्म से वायु और वृष्टि जलकी शुद्धि द्वारा सब मनुष्यों को सुख प्राप्त होता है इस कारण उन कर्मों के करने वाले मनुष्यों को भी सुख और शुद्धि प्राप्त होती है।

२ अपने मन से वैर भाव को छोड़ के सब को सुख पहुंचाने में प्रवृत्त होना और किसी संसारी व्यवहार के वर्त्ताओं में दुःख न देना अहिंसा तीर्थ है और जो २ व्यवहार वेदादि शास्त्रों में निषिद्ध माने हैं उनके करने में दण्ड का होना अवश्य है अर्थात् जो २ मनुष्य अपराधी पाखण्डी अर्थात् वेद शास्त्रोक्त धर्मानुष्ठान के शत्रु, अपने सुख में प्रवृत और पर पीड़ा में प्रवर्तमान हैं वे सदैव दण्ड पाने के योग्य

इससे वेदादि सत्य शास्त्रों का नाम तीर्थ है कि जिनके पढ़ने पढ़ाने और उन में कहे हुए मार्गों में चलने से मनुष्य दुःखसागर को तरके सुखों को प्राप्त होता है।

३ सत्य शास्त्रों का पढ़ाने वाला आचार्य्य तथा माता पिता और अतिथि का भी नाम तीर्थ है क्यों कि उनकी सेवा करने से जीवात्मा शुद्ध होकर दुःखों से पार होजाता है ॥ और भी महाभारत का प्रमाण लीजिये।

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूत दया तीर्थं सर्वत्रार्ज्जवमेवच ॥ १ ॥
दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्य्यं परंतीर्थं तीर्थं च प्रियबादिता ॥ २ ॥
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यंतीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थाना मपितत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसःपरा ॥ ३ ॥

(अर्थ) १ सत्यबोलना क्षमाकरना और इन्द्रियों का दमन करना तीर्थ है सब जीवों पर दया करना और शीलता रखना तीर्थ है।

२ दान दम अर्थात् मन और इन्द्रियों को बुरी चेष्टाओं से रोकना सन्तोष रखना तीर्थ है और ब्रह्मचर्य्य और सब से प्रिय बोलना परम तीर्थ है।

३ ज्ञान, धैर्य्य, और शुभ कर्म पुण्य तीर्थ हैं और सब तीर्थों से बड़ा तीर्थ मन की शुद्धि है।

तीर्थ शब्द का अर्थ तराने वाला है अर्थात् जो कर्म इस संसार के दुःखसागर से तरावे वही तीर्थ है तीर्थ शब्द करण कारक युक्त लिया जाता है जो जल वा स्थान विशेष अधिकरण वा कर्मकारक होते हैं उन में नाव आदि अथवा हाथ और पग से तरते हैं इससे जल वा स्थल तारने वाले कभी नहीं हो सकते। निदान उक्त शास्त्रोक्त तीर्थ अब

नाम मात्र को भी नहीं मानेजाते। समय की कैसी गति है कि यातो कभी इन स्थानों में बड़े २ महात्मा विद्वान् तपस्वी वेद पढ़ते और पढ़ाते नित्य नये दिन हवन यज्ञ किया करते प्रजा को धर्म के उपदेश करते जिससे प्रजा का धर्म, बल, बुद्धि, पराक्रम बने हुए थे और योगी योग विद्या सिद्ध करके जन्म मरण के दुःख सागर से पार होकर पूर्णानन्द पद को प्राप्त होते और पदार्थ और शिल्पविद्याओं से संसार को सुख पहुंचाते थे खाने पीने का किसी को भी कुछ संशय नहीं था सब भोगों के पदार्थ इस भूमि में उत्पन्न होते हैं दूध घी जल की तरह वर्ताजाता था शारीरक और मानसिक उन्नति पाकर आनन्द करते थे या अब यह समय है कि महात्माओं की जगह पाखंडी मूर्ख निरक्षर भीख पर लड़रहे हैं और कोलाहल मचा रहे हैं यज्ञ हवन की जगह चरस और गांजे का धुअंधार हो रहा है वेदशास्त्रों की जगह निर्लज्ज गजलें गाई जाती हैं दूध की जगह शराब और गौवों की जगह कुत्ते पालते हैं और योगाभ्यास की जगह वेश्यागमन होता है दिन रात लड़ाई झगड़ा ठगी और बेईमानी होती रहती हैं ।।

यहां मेलों में जो मरी पड़ती है उसका कारण न जान कर मूर्ख लोग कुछ को कुछ गप्पें मारने लगते हैं कोई कहता है योगनी उतरी है कोई कहता है कि काली खप्पर भरने आई है परन्तु इन बातों के बिना तत्त्व विद्याओं के पढ़े कौन जान सक्ता है सो यहां उसका कुछ थोड़ा सा वर्णन किया जाता है और वह यह है कि मनुष्य के शरीर से छिद्रों की राह जो गस्मी निकलती रहती है वह बड़ी अशुद्ध और विष भरी होती है यद्यपि इसकी बहुत सी पहचान हैं परन्तु यहां इसका एक मोटासा सबूत दिखलाते हैं कि यदि किसी छोटे से मकान में बहुत मनुष्य बैठजाते हैं तो वहां कुछ देर में स्वास रुकने लगता है और मनुष्य घबराने लगते है इसका यही कारण है कि उस अशुद्ध वायु में प्राणप्रद भाग बहुत थोड़ा होता है जिससे मनुष्य जीता रहता है और जिसको अंगरेज़ी में आक्सीजन कहते हैं वरन

उसमें विशेष भाग प्राण नाशक ही होता है जिसको नाइट्रोजिन कहते हैं इस लिये जब कभी मेला भरता है और थोड़े मैदान में बहुत मनुष्य इकट्ठे होजाते हैं तो वहां वह गर्म्मी मनुष्यों के शरीरसे निकल कर जब तक मेला भरता रहता है और भीड़ बढ़ती रहती है ऊपर को चढ़ती रहती है जैसा कि अग्नि का स्वभाव ऊपर को चढ़ने का है क्योंकि भीड़ के कारण गर्म्मी की विशेषता ही होती रहती है इसी लिए स्नान के दिन तक बहुधा मरी प्रकट नहीं हुआ करती जब मेला स्नान करके लौटने लगता है और छीद पड़ती है तो वह गर्मी शर्दी के कारण (क्योंकि जब छीद होती है तो वहां शर्दी आजाया करती है) नीचे उतरती है और जिस मनुष्यके भीतर प्रवेश करती है वह कदापि नहीं बचता तुरन्त मरजाता है और विशेष करके वह दुष्ट वायु उन मनुष्यों के भीतर अवश्य प्रवेश करता है जिनका अन्तर कच्चे सड़े नियम विरुद्ध खानों के खाने से मैला होजाता है अथवा जो लोग दफअ चौंतीस के भय से मलमूत्र त्यागने का ठीक स्थान और अवसर नहीं पाते क्योंकि उनका अन्तर मेलों का वेग रोकने से सड़ जाता है इस ही को वबा और मरी कहते हैं और अब इन मेलों के ही प्रभाव से लाखों के कुलदीपक यहां आकर गुल होजाते हैं परन्तु अब इन मेलों में पहिले नियम ही ठीक न रहने के कारण बड़ी हानि होने लगी है क्योंकि अब जो मेला आता है वह सब हरद्वार की हवेलीयों में घुस जाता है और थोडी जगहमें बहुत मनुष्योंका इकट्ठा होना अवश्य बीमारी का कारण है पहिले जो यात्री आते थे वे इकट्ठे हो कर पास पडोस और आसपास के शहरों गांवों से गोल बांध कर चलते थे और उन को संग कहते थे वे लोग खानपान का सामान और बरतन इत्यादि अर्थात् अपने सुख की सब सामिग्री साथ लाते सफर में रोटी पकाकर खाते मलमूत्र त्याग को कोई रोक टोक नहीं थी और यहां आकर दूर २ मैदानों में और वृक्षों के नीचे हरद्वार से तीन २ कोश तक चारों ओर डेरा करते थे इसलिये उनको तन-

दुरुस्ती में कुछ नुकसान नहीं आता था पहिले हरद्वार में भी इतने मकान नहीं थे अब तो यात्री लोग हाथ हिलाते छड़दम रेल में चले आते हैं खाने को जैसा कच्चा पक्का बाजार में मिलता है खाते और मकानों में ठहरते हैं चाहे उनका वायु कैसा ही अशुद्ध भी हो और मलमूत्र त्याग के लिए पाखाने और पेशाब की कुंड जिनको नर्क कुण्ड कहना ठीक है मौजूद हैं कि जिनकी तेज दुर्गन्ध से शरीर कांप जाता है *।

राजा मानसिंह के समय में कुछ पंडे ज्वालापुर में वस्ते थे जब

---

* पहिले समय में विद्वानों के निश्चय किए शरीर रक्षा के वह नियम थे समझने में भी आजकल के विद्वानों को बुद्धिचक्कर खाती है प्रथम तो वह बुद्धि ही नहीं जो उनके सिद्धान्तों को समझ सकें देखिये एक सौच क्रिया परही ध्यान देना चाहिये कि हरएक बस्तीके दक्षिण की ओर जंगल छोड़ा जाता था जिसको सिवाना कहते थे और एक जोहड़ खोदा जाता था जिस में पशु पक्षी जल पीवें और गरीबों को सुख पहुंचे और उसही ओर चमार भंगी भी बसाए जाते थे जो सूवर मुर्गे इत्यादि पालते थे जैसाकि अब भी गावों के दक्षिण ओर भंगीचमार बस्ते हैं परन्तु अब यह नियम मनुष्यों के विद्याहीन होने से नहीं रहे सो बस्तीके लोग प्रातःकाल उठकर उस सिवाने में शौच जाते और उत्तर मुख बैठकर जैसी शास्त्र की आज्ञा है मल त्याग करते इस में तन्दरुस्ती के इतने लाभ तो प्रत्यक्ष थे कि वह उत्तरीय वायु जो चार घड़ी के तड़के के सूर्योदय तक चलती है मनुष्य को तनदरुस्ती का देने वाला होता है उस को फारसी में नसीम और अंगरेजी में कूलब्रीज कहते हैं उस मनुष्य को मिलता दूसरे प्रातःकाल का घूमना ही बड़ा लाभदायक है तीसरे सोते उठकर कुछ दूर चलने से पेट का मल आंतों से छूट जाता है और शौच खुलकर होता है चौथे उत्तर मुख बैठने से उस मनुष्य को मल की दुर्गन्धी

आमदनी विशेष होने लगी तो बहुत से ब्राह्मण आसपास के गावों से आकर कनखल ज्वालापुर में बसने लगे जैसा कि उन के चौक भी आज तक उनहीं गावों के नाम से बोले जाते हैं जैसा मीसरपुरिये मीरसरपुर के सरायवाले सरायगांव के और मियाणे मियाणी के उनकी वही जिन में वे यात्रीयों के नाम लिखते हैं उनकी जायदाद समझी जाती है और उन पर बड़े झगड़े और मुकद्मे करते रहते हैं यहां तक कि उनकी आमदनी का विशेष भाग मुकद्दमों में ही जाता है नशे बहुत पीते और कोई २ सब नशे करते हैं शास्त्र का पढ़ना पसन्द नहीं करते जो कि यह तीर्थ पंजाब देश का है इसलिए पंजाबी इनको बहुत मानते हैं यहां पंजाब का ही मेला होता है और पंजाब के राजाओं के ही बहुत मकान हैं पं-

---

लेशमात्र भी नहीं आती पांचवे उस मल को सूवर खाकर तुरन्त ही नेस्त कर देता है क्योंकि कुदरत ने सूवर में ऐसा गुण रक्खा है कि एक सूवर पचास मनुष्यों का मल खाकर आप किंचित मल करता है जिस में दुर्गन्ध भी कम होती है विचारने से आपको सिद्ध होजायगा कि कुदरत ने यह जीव इस ही काम के लिए उत्पन्न किया है परन्तु अब तो एक २ मकान में चार २ पाखाने बने हैं लड़के सोते उठते ही पखाने में उसकी दुर्गन्ध सूंघ रहे हैं पेट से मल साफ ही नहीं होता तीन २ बार लोटा लिए पखाने में घुसते हैं लड़के की हवा खाना जानते ही नहीं और बाहर जंगल में शौच जाना मानो सभ्यता (Civilzation) में धब्बा लग गया और वह विष्ठा या तो दबाई जाती है जिस से भयंकर बीमारियों का उत्पन्न होना संभव होता है या वह खेतों में खाद की जगह बेची जाती है जिस से उत्पन्न हुई तरकारी वा अन्न आरोग्यता को बिगाड़ता है परन्तु अब इन बातों की पूछ प्रतीत ही नहीं रही हरद्वार में अब के साल एक भट्टी विष्टा फूँकने को बनाई गई है ।

जाओ लोग गंगा पर बड़ा विश्वास रखते हैं जब पंडे लोग उन से जबर्दस्ती करके दक्षिणा लेते हैं तो वे उस जबर्दस्ती को पाप हरना समझते हैं ॥

हरद्वार का पुराण प्रोक्त माहात्म्य और कथा ।

राजा युधिष्ठर के पूछने पर लोमश ऋषि राजा सगर का माहात्म्य इस प्रकार वर्णन करने लगे कि इक्ष्वाकु के वंश में एक सगर नामी राजा बड़ा बलवान, रूपवान, सत्यवादी और प्रतापी हुआ था परन्तु उसके कोई पुत्र न था इस राजा ने हय और तालजंघ देशों को जीत कर उन देश के राजाओं को अपने वश में करलिया था उसके वैदर्भी और शैब्या (१) नाम की बड़ी रूपवती दो रानी थीं इस राजा ने पुत्र की कामना से अपनी दोनों स्त्रियों सहित कैलाश परवत पर जाकर बड़ी तपस्या की उसकी तपस्या से (२) शिवजी महाराज जो महात्मा, तीन नेत्रधारी, त्रिपुर के मारने वाले आनन्दकर्त्ता, ईशान, पिनाक, धनुषधारी, शूल धारण करने वाले, उग्रेश, उमापति, और अनेक रूप धारण करने वाले हैं प्रसन्न हुए और उन्होंने उसको दर्शन

---

(१) वाल्मीकि रामायण में वैदर्भी का नाम केशनी और शैब्या का नाम सुमति लिखा है वास्तव में वैदर्भराजकी कन्याका केशनी नाम था उनकी एक ही राणी ने और सुमति अर्थात् शुभमति उनकी उसमति अर्थात् मनसूवे का अलंकार है जिससे यह अश्वमेध यहां करना ठहरा था इसका उस ही से वह साठ हज़ार राजपुत्र उत्पन्न हुए अर्थात् नियत किए गए सगर के पुत्र कहाये ।

(२) वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि राजा सगर ने भृगु ब्राह्मण की तपस्या की और एक वर्ष तक की ।

दिये राजा ने उनको देखते ही राणियों सहित उठकर दंडवत कीऔर पुत्र मिलने की प्रार्थनाकी तब शिवजी ने कहा कि हे राजा जिस महूर्त में तैने हम से बरदान मांगा है उस महूर्त के फल के कारण से तेरे एक स्त्री से साठ सहस्र पुत्र बड़े शूर वीर और घमन्डी होंगे और वे सब एक साथ ही नाश हो जांयगे परन्तु दूसरी स्त्री के एक पुत्र बड़ा शूरवीर और तेरे बंश का चलाने वाला होगा यह कहकर शिवजी वहीं अन्तर्धान होगए और राजा सगर अपने स्थान को चला आया और बड़ी प्रसन्नता से अपनी स्त्रियों सहित घर में प्रवेश किया थोड़े काल में उसकी दोनों स्त्रियां गर्भवती हो गई और गर्भ समय बीतने पर वैदर्भी के एक तोंबा सा उत्पन्न हुआ और शैव्या के एक देव रूपी पुत्र हुआ राजाने उस तोंबे को त्याग करने का विचार किया परन्तु उसी समय आकाश वाणी हुई कि हे राजा तू ऐसा साहस मत कर तुझे पुत्रों को त्यागना उचित नहीं है अब तू इस तोंबे के भीतर से बीजों को निकाल ले और एक २ बीज को एक २ घृत के भरे हुए पात्र में रखकर उनकी रक्षा कर ऐसा करने से कुछ दिनों में तेरे साठ सहस्र पुत्र होंगे महादेव जी ने तेरे पुत्रों के होने का इसी प्रकार से उपाय रचा है तू अपनी बुद्धि को इसके विपरीत मतकर राजा सगर ने आकाशवाणी सुनकर उस बात में श्रद्धा की और उस तोंबे के भीतर के बीज निकालकर एक एक बीज को एक एक घी के घड़े में रखदिया और एक एक घड़े पर एक एक धात्री रक्षा के लिए नियत करदी जब बहुतसा काल व्यतीत होगया तब उन घड़ों से क्रम पूर्वक एक एक पुत्र निकला इस प्रकार से शिवजी की कृपा से राजा सगर के साठ सहस्र पुत्र उत्पन्न हुए और सब के सब घोर और क्रूर कर्मी आकाश में चलने वाले देवताओं को भी अपने सामने कुछ न गिनने वाले बड़े योद्धा और शूरवीर हुए उन्होंने सब लोक, देवता, गंधर्व, राक्षस प्राणियों को बड़ी पीड़ा पहुंचाई उन से दुःखी हो सब लोक

और देवता ब्रह्माजी की शरण गये ब्रह्माजी ने उन सब से कहा कि तुम लोग अपने २ स्थानों को जाओ सगर के सब पुत्र अपने घोर कर्मों के कारण से थोड़े ही काल में नष्ट होजांयगे जब बहुत दिन बीत गए तब राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ करने के लिए दीक्षा ली और उसके पुत्रों से रक्षित यज्ञ का घोड़ा बड़े यत्न से पृथ्वी पर घुमाया गया जब घूमते २ वह घोड़ा जल रहित समुद्र में पहुंचा तब अकस्मात अन्तर्ध्यान होगया राजा सगर के पुत्रों ने उस घोड़े को चुराया हुआ जानकर अपने पिता से उसके अदृश्य होने का वृतान्त कह सुनाया, तब राजा ने उन पुत्रों को आज्ञादी कि तुम सब लोग चारों दिशाओं में जाकर घाड़े को ढूंडो पिता की आज्ञा से उन पुत्रों ने सब पृथ्वी और चारों दिशाओं में घोड़े को ढूंडा परन्तु न वह घोड़ा मिला न उसको लेजाने वाले का पता लगा तब वे पुत्र लौट कर राजा के पास आये और उनहों ने सन्मुख हाथ जोड़कर और खड़े होकर कहा कि महाराज हमने सब पृथ्वी, समुद्र, वन, परवत, द्वीप, नदी, कंदरा और बनों में घोड़े को ढूंडा कहीं उसका वा उसको लेजाने वाले का पता नहीं मिलता है यह सुनकर राजा सगर मूर्छित सा होगया और भावी के वश होकर सब पुत्रों को आज्ञादी कि तुम लोग जाकर फिर उस यज्ञ के घोड़े को ढूंडो और जब तक वह न मिले तब तक हमारे पास लौट कर मत आओ यह सुनकर उन पुत्रों ने पिता की आज्ञा अंगीकार की और पृथ्वी पर घोड़े को ढूंडना आरम्भ किया ढूंडतेर उनको एक स्थान पर पृथ्वी फटी हुई दिखाई दी उस को देखकर उन्हों ने कुदालियां और फावड़े लेकर उस समुद्र की पृथिवी को खोदना आरम्भ किया उससे समुद्र को बड़ी पीड़ा हुई और उस में जो असुर, नाग, राक्षस और नाना प्रकार के जीव रहते थे वह ताड़ित होने से महादुखी हुए और चिल्लाने पुकारने लगे उस समय सैड़कों प्राणियों के शिर कट गए सैंकड़ों के धड़ गिर गए और सैकड़ों की त्वचा और

मांस भिन्न २ होकर बिखर गये इस प्रकार से उन सगर के पुत्रों ने बहुत दिनों तक समुद्र को खोदा परन्तु घोड़े का कुछ पता नहीं मिला तब उन्होंने क्रोध करके समुद्र के पूर्व और उत्तर के देशों को यहां तक खोदा कि पृथ्वी को पाताल तक भेदन किया जब पाताल में पहुंचे तब उनहों ने उस घोड़े को वहां फिरते हुए और कपिल मुनि को जो अपने तेज से दीप्त हो रहे थे मानो अग्नि प्रज्वलित हो रही है बैठे हुए देखा घोड़े को देखकर उनका रोम रोम प्रसन्न हो गया और वे काल से प्रेरित होने के कारण से कपिल जी का अनादर करके क्रुद्ध होकर घोड़े को पकड़ने को दौड़े यह देखकर कपिलजी जिनको वासुदेव कहते हैं क्रुद्ध होगये और उन्हों ने अपने एक नेत्र को खोलकर उन सगर के पुत्रों पर अपने तप के तेज को डालदिया कि उससे वे सब भस्म होगए नारदजी यह हाल देखकर राजा सगर के पास गए और उससे उसके पुत्रों के भस्म होने का वृतान्त कह सुनाया राजा सगर उस दुःख की बात को सुनकर एक मुहूर्त तक बहुत मलिन चित्त रहा उपरान्त शिवजी के वाक्य को याद करके स्वस्थ हुआ और अपने असमंजस नामी पुत्र के अंशुमन नाम पुत्र को बुला कर कहने लगा कि हे पौत्र ! मेरे साठ सहस्र पुत्र जो मेरे काम में नियुक्त थे कपिल मुनि के तेज से भस्म होगये मैं तेरे बाप को अपने धर्म की रक्षा करने और पुरवासियों का हित करने के लिए निकाल दिया था यह सुनकर राजा युधिष्टर ने पूछा कि महाराज राजा सगर ने अपना पुत्र जिसको निकालना कठिन होता है किस अपराध से निकाल दिया था यह सुनकर लोमश जी बोले कि सगर का असमंजस नामी पुत्र शैव्या रानी से उत्पन्न हुआ था उसने एक समय पुरवासियों के दुर्बल पुत्रों को रोने और पूकारने पर भी कण्ठ पकड़ २ कर नदी में फेंक दिया। यह देखकर नगर निवासी भय भीत और शोकाकुल होकर राजा सगर के पास गये और हाथ जोड़ कर कहने लगे कि:—

महाराज आप हम लोगोंके शत्रु और सेना आदिके भय से रक्षा करने वाले हैं अब आप हम लोगों को असमंजस के भय से भी बचाइये राजा पुरवासियों से उस वृत्तान्त को सुनकर एक मुहूर्त तक विमना होकर विचार करता रहा उपरान्त मंत्रियों को आज्ञादी कि जो तुम लोगों को हमारी आज्ञा माननी है तो इसी समय असमंजस को नगर से बाहर निकालदो यह सुनकर मंत्रीयों ने राजा की आज्ञा के अनुसार ततक्षण असमंजस को नगर से बाहर निकाल दिया अब इस के पीछे राजा सगर ने जो कुछ अपने पौत्र अर्थात् असमंजस के पुत्र से जो बड़ा बाणैत था कहा उसको भी सुनो राजा सगर ने अंशुमान से कहा कि हे पौत्र मैं तेरे बाप के निकालने और अपने साठ सहस्र पुत्रों के मरने और यज्ञ का घोड़ा न मिलने के कारण से महा दुःखी हूं और दुःख से मेरा हृदय जल रहा है इस लिये तू घोड़े को लाकर मेरा नर्क से उद्धार कर यह सुनकर अंशुमान बड़ा कष्ट उठाकर उस देश में पहुंचा जहां पृथ्वी फटरही थी और उसी मार्ग से होकर उस स्थान पर पहुंचा जहां वह अश्व वर्तमान था और कपिल मुनि तप स्या कररहे थे उन को देख कर अंशुमान ने कपिलजी को प्रणाम किया और अपने आने का कारण कहा कपिलजी उस को देख कर प्रसन्न हुए और कहने लगे कि जो तू चाहे अपनी इच्छा से मांग अंशुमान ने पहिले यज्ञ के कारण से उस अश्व को मांगा और फिर कहा कि महाराज ऐसी कृपा कीजिये जिससे मेरे इन पितरों की मुक्ति होजाय यह सुनकर परम तेजस्वी कपिल मुनि बोले कि अच्छा मैं तेरी इच्छा के अनुसार तुझ को बर देता हूं तू क्षमावान धर्मात्मा और सत्यवादी है तुझ से पौत्र को पाकर राजा सगर कृतार्थ हुआ तेरेही कारण से यह सगर के पुत्र स्वर्गलोक पावेंगे तेरा पौत्र महादेवजी को प्रसन्न करके इन सगर के पुत्रों को पवित्र करने के लिये स्वर्गलोक से गंगाजी को लावेगा उस समय इनको मुक्ति होगी अब तू जा और

इस यज्ञ के घोड़े को लेजा जिससे राजा सगर का यज्ञ पूरा होवे यह सुनकर अंशुमान घोड़े को लेकर चला आया और अपने बाबा राजा सगर के चरणोंपर गिर पड़ा राजाने प्यार से उसकी मूर्द्धा घ्राण की इस के पीछे अंशुमान नें राजा से राजा के पुत्रों का क्षय और घोड़े के लाने का जो कुछ वृतान्त देखा वा सुना था सब कह सुनाया राजा ने उस वृतान्त को सुनकर पुत्रों के शोक के दुःख को छोड़दिया इसके पीछे राजा सगर ने अपना यज्ञ समाप्त किया और देवताओं की अनुमति से उसने समुद्र कोही अपना पुत्र जाना इस राजा सगर ने बहुत दिनोंतक राज्य किया उपरान्त राज्य का भार अपने पौत्र अंशुमान को देकर स्वर्गवासी हुआ अंशुमानने भी समुद्र रूपी खाई रखने वाली पृथिवी का अपने पितामह की नाईं शासन किया और उसके दलीप नामी एक पुत्र हुआ अंशुमान उस पुत्र को अपना राज्य देकर देवलोक को गया इसके पीछे दलीप अपने पितरों के नाश होने के वृतान्त को सुनकर बड़ा दुखी हुआ और उन की सद्गति करने के लिये उसने गंगाजी को लाने के बड़े २ यत्न किये परन्तु गंगा आकाश से न गिरी उसके भगीरथ नामी श्रीमान् धर्मात्मा सत्यवादी और दूसरों के गुणों में दोष न लगाने वाला पुत्र हुआ दिलीप उसको अपना राज्य देकर बन को चलागया और वहीं तपस्या करके कालयोग से स्वर्गवासी हुआ चक्रवर्त्ती राजा भगीरथ सब के मन और नेत्रों को आनन्द देने वाला था वह अपने पितरों के कपिल मुनि के शाप से नाश होने और स्वर्ग न मिलने के हाल को सुनकर दुखी हुआ और राज्य को मंत्रियों को सौंप कर आप हिमालय के समीप में तप करने को चलागया वह हिमालय परबत अनेक प्रकार की धातु रखने वाली चोटियों से अलंकृत पवन आलम्बी मेंघों से चारों ओर से आशक्त नदीकुंज और मन्दिरों से शोभित गुहा और कन्दराओं में रहने वाले सिंह और व्याघ्रों से निषेवित और नाना प्रकार की मधुर वाणी वाले पक्षी और भृंग राज हंस सारस मोर शत पत्र इत्यादि पक्षियों से घोषित था और जहां तहां जलके स्थानों में कमल फूल रहे थे और उनके किनारों पर सारस

मधुर २ बोली सुनारहे थे और किन्नर अपसरा और विद्याधर आदि देवजाति विहार कर रहे थे चारों ओर नाना प्रकार के वृक्ष जिनको हाथियों ने अपने दांतों की नोक से घिस डाला था शोभा देरहे थे बड़े २ विषधर सर्प इच्छानुसार विचर रहे थे देखने में वह परवत कहीं स्वर्ण के समान कहीं चांदी के सदृश और कहीं अंजन सा काला था और रत्नों से भरा हुआ था भगीरथ उस परवत पर जाकर गंगाजी के दर्शनों की इच्छा से फल मूल और जल का आहार करके तपस्या करने लगा। जब तपस्या करते २ एक सहस्र वर्ष बीत गए तब गंगाजी ने प्रसन्न होकर अपना रूप धारण करके भगीरथ को दर्शन दिया और कहा कि हे राजा तू क्या चाहता है क्या मैं तुझ को दूं बता जो कुछ तू मांगेगा सो ही तुझ को दूंगी यह सुनकर भगीरथ बोला कि हे महानदी राजा सगर के साठ सहस्र पुत्र यज्ञ के घोड़े को ढूंडने के लिये कपिलमुनि के आश्रम को गए थे कपिलमुनि ने क्रोध करके उन मेरे पितरों को भस्म करके यमलोक को पहुंचा दिया सो जबतक तू अपने जलसे उनको न सींचेगी तबतक उनकी गति न होगी इस लिये हे महानदी मैं तुझ को उन पितरों के निमित बुलाना चाहता हूं तू कृपा करके उनको स्वर्ग में पहुंचा यह सुनकर गंगाजी ने अति प्रसन्न होकर भगीरथ से कहा कि हे राजा मैं तेरे काम को निस्सन्देह करूंगी परन्तु मेरे आकाश से पृथ्वीपर गिरने के बेग को सहना बहुत कठिन है सिवाय नीलकंठ महादेवजी के और कोई त्रीलोकी में उस बेग को नहीं सहसक्ता है इस लिये तू तप करके पहिले महादेवजी को प्रसन्न कर महादेवजी मुझ को आकाश से गिरनेपर अपने शिरपर धारण करलेंगे और तेरे पितरों के हित के लिये तेरी मनोकामना पूरी करेंगे यह सुनकर भगीरथ कैलाश परवत पर चला गया और वहां तीव्र तपस्या करके महादेवजी को प्रसन्न किया जब महादेवजी प्रसन्न हुए तब उसने उनसे अपने पितरों को स्वर्गवास मिलने की इच्छा से स्वर्ग से गिरी हुई गंगाजी को अपने शिरपर धारण

करने का बरदान मांगा शिवजी भगीरथ की प्रार्थना को सुनकर देवताओं का प्रिय करने की इच्छा से बोले कि ऐसाही होगा मैं तेरे कारण से देवनदी गंगा को जो आनन्द रूप दिव्य और धर्म को बढ़ाने वाली है धारण करूंगा यह कहकर महादेवजी अपने गणों के साथ जो बड़े घोर शास्त्रों को उठाए हुए थे हिमालय परवत के समीप चले गए और वहां एक स्थान पर बैठकर भगीरथ से बोले कि अब तू गंगा को बुला मैं उसके आकाश से गिरने के वेग को धारण करूंगा यह सुनकर भगीरथ ने नम्रता से श्रीगंगाजी का ध्यान किया ध्यान करते ही वह गंगाजी शिवजी को बैठा हुआ देखकर अकस्मात आकाश से गिरी उस को देखने के लिये बड़े २ ऋषि देवता गंधर्व भागे और यक्ष वहां उस समय आन पहुंचे उस समय गंगा का जल बड़ा चंचल बड़ा घेर रखने वाला और मछली और मगरों से भरा हुआ था शिवजी ने उस सब जल को अपने सिरपर धारण कर लिया और यह जल शिवजी के ललाट पर मोतियों की माला के सदृश तीन धारा होकर बहने लगा उस में फेन की धारा ऐसी दीखती थी मानों हंसों की पंक्ति है और वह कहीं सीधी और कहीं टेढ़ी हो कर बहती थी और कहीं वह धारा फेन से भरी हुई ऐसी जानपड़ती थी मानो कपड़े पहिने हुए मतवाली स्त्री जारही है, उसके बहने का शब्द मधुर २ ध्वनि से होता था इस प्रकार वह गंगा आकाश से पृथ्वी तल पर आकर भगीरथ से कहने लगी कि हे राजा मैं तेरेही कारण से पृथ्वी पर आई हूं अब तू चलने की राह बता यह सुनकर भगीरथ गंगा के आगे २ उस राह पर होलिया जो उस स्थान को गई थी जहां महात्मा राजा सगर के पुत्रों के मृतक शरीर पड़े हुए थे इस के पीछे शिवजी देवताओं के सहित कैलाश परवत पर चले गए और भगीरथ गंगा सहित समुद्र पर पहुंचा, वहां पहुंचने पर गंगा ने उस वरुणालय समुद्र को शीघ्र अपने जल से भरदिया और राजा भगीरथ ने गंगा को अपनी पुत्री करके माना इसके पीछे भगीरथ ने अपना म-

नोरथ पाकर पितरों का तर्पण किया, हे युधिष्ठर तुमने जो हमसे पूछा था सो हमने गंगा के समुद्र को पूर्ण करने के अर्थ आने और अगस्त जो के किसी कारण से समुद्र को पीने और बातापी को मारने का सब वृत्तान्त विस्तार पूर्वक कह सुनाया।

असलियत कथा।

०:०ॐ०ॐ०:०

ग्रन्थों में इस कथा का बड़ा अन्तर और परस्पर विरोध है महाभारत में कुछ और बाल्मीक में कुछ लिखा है वाल्मीकि रामायण और महाभारतादि इतिहासों से प्रकट है कि राजा सगर नामी इक्ष्वाकु की ३७ वी पीढ़ी में हुआ है इस राजा का सगर नाम इस कारण विख्यात हुआ कि वह अपनी माता के पेट से गरल सहित अर्थात् जहर समेत उत्पन्न हुआ था इसका बृतान्त इस प्रकार है कि इसका पिता राजा असित बड़ा अल्प पराक्रमी और दुर्वृत हुआ इसलिये इस राजा के विरुद्ध बड़े शूर हैहय तालजङ्घ और शशविन्दू देशों के राजा उठे और राजा असित इन राजाओं से संग्राम में हारकर राजभंग होगया जब राज्य हाथ से निकलगया तो राजा अपनी दोनों रानियों समेत हिमालय परवत पर चला गया और वहां कुछ दिनों में शरीर त्यागकर स्वर्गवासी हुआ कहते हैं कि इसकी दोनों रानी गर्भवती थीं परन्तु पटरानी को जिसका नाम कालिन्दी था और यह रानी बड़ी तेजस्विनी और दिब्यरूपा थी उसको सौत ने सौत डाह से गर्भपात होने के निमित्त भोजन में विष देदिया जब रानी को यह हाल मालूम हुआ तो बड़ी भयभीत हुई और उन्हीं दिनों महाराज च्यवन ऋषि उस परवत पर तप करते थे रानी ने जब यह सुना तो महर्षिजीके पास जाकर उन को शरणगत हुई और पुत्र होने की इच्छा से मुनिजीके चरण कमलों में बन्दना करके हाथ जोड़ बैठगई महर्षिजीको करुणा आई और प्रस

न्नता पूर्वक रानी की चिकित्सा की और कहा कि हे महाभागे भय मतकर तुम्हारे गर्भ से एक सुपुत्र महाबलवान गरल सहित जन्मैगा (अभिप्राय इसका यह हैं कि मुनि जीने उस दशा विष निकालने में गर्भ पात होने का भय समझ कर ऐसा प्रबन्ध करदिया कि वह विष उस गर्भ को कुछ नुकसान न पहुंचा सका(१)और पुत्रोत्पत्ति के समय निकला) इसही कारण इस राजा का नाम सगर हुआ यह राजा बड़ा धर्मात्मा प्रतापी और सत्यवादी हुआ है जब यह युवा अवस्था को पहुंचा तो इसने अपने पिता के शत्रुओं हैहय और ताल-जङ्घ इत्यादि देशों के राजाओं को अपनी बीरता से जीतकर चक्र-वर्ती राज्य किया इस ने वैदर्भ देश के राजा की लड़की केशनी से विवाह किया था जिससे इसके एक असमंजस नामी हुआ यह राजा बड़ा धर्मात्मा हुआ है और प्रजा पालन और न्याय करने में ऐसा अद्वितीय विख्यात हुआ हैं कि कोई राजा इसके सदृश इस पृथ्वी पर न हुआहोगा इसके न्याय का एक नमूना यह है कि उसने अपने इकलौते कुंवर असमंजस को जिस को वास्तव में निकालना कठिन होता है धर्म की रक्षा और पुरवासियों का हित करने के लिये इस अपराध में त्यागदिया था कि वह पुर वासियों के लड़कों को अपनी मत्सरता से सरजू नदी में फेंकदेता और उनको डूबती देखकर प्रसन्न होता एक दिन उसनें पुरवासियों के दुर्बल पुत्रों को रोने पुकारने पर भी चोटी पकड़ २ कर सरजू में फेंकदिया दैवात् उनमें से एक लड़का डूबगया यह हाल देखकर पुरवासी भयभीत और शोकाकुल होकर राजा के पास दौड़ गये महाराज उस समय राजसभा (दरबारखास) में बैठे राज प्रबन्ध विचार कर रहे थे कि अकस्मात् पुरवासियों के रोने की आवाज़ सुनाई दी तुरन्त नंगेपांवही उठकर उन

(१) आहा कभी हमारे देश की वैद्यक विद्या यहां तक बढ़ी हुई थी !!!

के पास आए और कहा कि मैंने अपने राज्य में किसी को दुःख से रोते नहीं देखाथा आज तुम लोग क्यों रोतेहो तुम को किसने सताया हैं पुरवासियों ने हाथ जोड़ सब वृत्तान्त कुंवर का कह सुनाया और वह डूबा हुआ मूर्छित लड़का भी दिखाया महाराज ने देखतेही तुरन्त वैद्यों को उसकी चिकित्सा की आज्ञादी और वह उन की चिकित्सा से जी गया महाराज यह दशा देखकर कुछ देरतक बड़ी चिन्ता करते रहे फिर असमंजस को पकड़वा मंगाया और उससे कहा कि तेरे अच्छे भाग्य थे जो यह लड़का जो गया और मंत्रियों को बुलाकर उनसे कहा कि जो तुम को हमारी आज्ञा माननी है तो इसी दम असमंजस को नगर से बाहर निकालदो और उसकी स्त्री को बुलाकर पूछा गया कि तेरी क्या इच्छा है महलों में दिन काटेगी या पति के साथ जाती है स्त्री ने उत्तर दिया कि महाराज मैं तो पति के भाग्य की साथी हूं मुझ को तो उसकी सेवा करनाही परम धर्म और वही मेरे जीवन का आधार है इसलिये दोनों को नगर से बाहर निकालदिया वे दोनों बनों में फिरते २ एक ऋषि के आश्रम में पहुंचे और ऋषिलोग उसको राजा सगर का कुंवरजान कर उनकी पालना करने लगे कुछ दिन पीछे उनके एक पुत्र हुआ और ऋषियों ने उस का नाम अंशुमान रक्खा पाला और पढ़ाया जब युवा अवस्था को पहुंचा तो बड़ा बुद्धिमान् और विद्वान् हुआ और ऋषिलोग उसको राज्य करने योग्य देखकर महाराज सगर के पास लाए और कहा कि हे राजा यह तेरा पौत्र है यह बड़ा बुद्धिमान् और राज्य करने योग्य है राजा ने प्रसन्नता पूर्वक ऋषियों की बात स्वीकार करके और उसकी परीक्षा लेकर उसको युवराज किया सो उस महाराजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ करने का मनसुबा मन मे ठाना अर्थात् इस भूडदेश को गंगा के जल से हरा करना चाहा परन्तु अब यह निश्चय करना अवश्य है कि असलियत इस कथा की क्या है और पुराणों ने इस में कितना गड़ बड़ किया है

क्योंकि कवियों ने राजा सगर का अद्भुत पुरुषार्थ देखकर इस कथा को अलंकार में रचा था परन्तु अल्पबुद्धि मनुष्यों ने उसको न समझ कर कुछ का कुछ बनादिया जिस से उसकी असलियत भी पाना कठिन होगया, तत्व इस कथा का यह है कि महाराज सगर ने अश्वमेध यज्ञकरना चाहा अर्थात् इस निर्जल और उजाड़ बालुकामय देश को जहां सर्वत्र कहीं जलका पता नहीं लगता था प्रजापालन और प्रजाहित के लिये प्रफुल्लित करना चाहा अश्वमेध के अर्थ शास्त्र में प्रजापालन के ही लिखे हैं देखो शतपथ ब्राह्मण। राष्ट्रं वा अश्वमेधः ॥ अर्थात् राजा जो प्रजा पालन के कर्म करता है वह अश्वमेध कहाता है परन्तु अज्ञानी लोगों ने अर्थ न जानकर घोड़े को मारना और होम करना बतलादिया परन्तु यह अर्थ वाममार्गियों के निकाले हुए हैं जो गौतम बुद्ध से पहिले वाममार्ग एक मत चलाथा और उस धर्म की शिक्षा मांस खाना मदरा पीना और भग का पूजन करना लिखा है।

यह मत अब भी प्रचलित है इस को शाक्तमत कहते हैं.अश्व के अर्थ केवल घोड़े के ही नहीं हैं किन्तु अश्व राजा को भी कहते हैं और शिल्प शास्त्र में अर्थात् इन्जिनयरी विद्या में जो वैदिक विद्याओं में अगम्य विद्या है जिस के द्वारा हम पृथ्वी भर के जल और स्थल और उनको सब अवस्थाओं को नक्शे द्वारा घर बैठे देख सक्ते और नाना प्रकार के सुख प्राप्त कर सक्ते हैं पूर्व समय में जब कभी इस विद्या की उन्नति थी तो यहां आकाशी रेल चलती थी अब भी इसके हों कहीं से चुने हुए अंश चमत्कार माने जाते हैं अश्व नाम उन वेगवान् कला-यन्त्रों का है जिनमें वेग शक्ति हो वा जिन से रेल नहर अथवा सड़क निकाली जाय और आज कल वे नवीन नामों से लेविल और प्रेजमेटिक कहाते हैं देखो प्रमाण निरुक्त आ० १२ खं० १ और ऋग्वेद आ० १ मं० ३।४ ॥

अब इस कथा में अश्व अभिप्राय उस यंत्र से है जिस से गंगा लाने की राह और युक्ति अर्थात् तजवीज निकाली गई वह अश्व राजा

सगर की आज्ञा से उन साठ हज़ार राजपुत्रों के आधीन जो महाराज की शैव्या अर्थात् सुमति रानी से उत्पन्न हुए थे (यह अलंकार है शैव्या) अर्थात् नौकर चाकरों (१) के आधीन बड़े यत्न से पृथ्वी पर घुमाया गया (यत्न शब्द से स्पष्ट विदित होता है कि कोई पैमायशका यंत्र था) जब वह अश्व जल रहित समुद्र में पहुंचा (यह उपमालंकार हिमालय का है क्योंकि जैसे समुद्र अपने जल से वर्षा करता है ऐसेही हिमालय भी वनस्पति द्वारा वर्षा करता और अपनी वर्फ से नदियों को बढ़ाता है) तो अकस्मात अन्तरध्यान होगया (गुम होगया) (इससे जानी गया कि जब वह पैमायश हिमालय परबतों में पहुंची तो लेबिल कहां लग सक्ता था क्योंकि हिमालय के भूमि स्थल की ऊंचाई १८० मील में ६ कोश की है यदि एक २ परबत की ऊंचाई लोगे तो नहीं मालूम कितने कोश की आवेगी) जब इस हाल की खबर महाराज को होगई तो उन्हों ने हुक्म दिया कि जाओ तुम सब उसको चारों दिशाओं में ढूंडो तब वे राजपुत्र महाराज का हुक्म पाते ही उसकी तलाश में निकले परन्तु कहीं पता न लगा अन्त को वे लोग लाचार होकर लौट आए और राजाके सन्मुख खड़े हो हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज हमने सब जगह सब दिशाओं बन, परबत, नदी, कन्दरा में ढूंडा कहीं नहीं पाया तब राजा सगर यह सुनकर मूर्छित सा होगया।

---

(१) यह साठ हज़ार राजपुत्र जो बाल्मीकि रामायण में राजा सगर को सुमति राणी से उत्पन्न हुए लिखे हैं यह अलंकार रूप में वर्णन किए हैं सुमति अर्थात् शुभ मति जो राजा सगर की इस परोपकार में हुई थी उससे उत्पन्न हुए साठ हज़ार अर्थात् इस काम के लिए वे नियत किए गए राजपुत्र दूसरा सबूत इसका यह है कि बाल्मीकि रामायणमें वासिष्ठजी रामचन्द्रजी से कहते हैं कि राजा सगर ने प्रजा के लोगों को उकसाकर उनकी सहायता से समुद्र को खुदवाया अयोध्या कांड सर्ग ११० श्लोको २५।२६।

और भावी वश होकर इनको आज्ञा दी कि तुम लोग जाकर फिर उस अश्व को ढूंडो और जब तक वह न मिले लौटकर मत आओ यह सुनकर उन्हों ने महाराज की आज्ञा अंगीकार की और पृथ्वी पर उस अश्व को ढूंडना आरंभ किया ढूंडते २ उन को एक स्थान पर पृथ्वी फटी हुई दिखाई दी (यहां फटी हुई पृथ्वी से अभिप्राय हिमालय को उस घाटी से है जो मुकाम धराली से परली गंगोत्तरी तक दो परबतों के बीच नौ मील तक चली गई है और अब उसको भैरव घाटी कहते हैं इस घाटी में (१) नौ मील तक दोनों परबत बराबर बराबर चले गए हैं) उसको देखकर उन्होंने कुदालियां और फावड़े लेकर उस समुद्र की पृथ्वी को खोदना आरंभ किया (जो लोग हमारे भोले भाई इस भ्रम में पड़े हुए हैं कि गंगा आप से आप बिना खुदाई किये राजा भगीरथ के रथ के पीछे पीछे चली आई उनको यहां आंख खोल कर इस पुराण की इबारत पर टुक ध्यान देना चाहिये यदि अश्व के अर्थ यहां घोड़े के ही लगाते हो तो बतलाइये कि क्या वे घोड़े को कुदाली और फावड़ों से पृथ्वी को खोदकर उसके भीतर ढूंडते थे परन्तु क्या करें इस अलंकार को समझने की बुद्धि कहां से लावें सूधे अर्थ अक्षरों के लगादिये और पुराण ऐसे २ अलंकारों से भरे पड़े हैं ग्रन्थकार को किसी की श्रद्धा भक्ति से कुछ प्रयोजन नहीं है मैंने तो इस विद्यालोप और अन्धकार के समय में छिपी हुई असलियत को प्रगट करने का पुरुषार्थ किया है) उस से समुद्र को बड़ी पीड़ा हुई और उस में जो असुर, नाग, राक्षस और नाना प्रकार के जीव रहते थे वे ताड़ित होने से महादुःखी हुए और चिल्लाने पुकारने लगे उस समय सैंकड़ों प्राणियों के शिर कट गए, सैंकड़ों के धड़ गिरगए और सैंकड़ों की त्वचा हाड़ और मांस भिन्न २ होकर बिखर गए इस प्रकार उन सगर के राजपुत्रों ने बहुत दिनों तक उस समुद्र को खोदा और जब अश्व का पता न लगा तो उसके पूर्व और उत्तर के स्थानों को खोदा और खोदते २ पाताल तक चले आए (मुकाम जांगला से ग

गोत्तरी तक १ मील गंगा खोद कर लाई गई है यह खुदाई तीन सौ चार सौ फीट गहरी हुई है और निरन्तर परबत खोदा गया है और पत्थर काटा गया है क्योंकि हिमालय में घाटियों की भूमि भी परबत ही है और सब से भारी काम यही था जिसको राजा भगीरथ के पहिले पुरखा भी सोचते ही रहे फिर वहां से टिहरी पर और टिहरी से नीचे हरद्वार तक कई परबत काटे गए इसी कारण लिखा है कि उन्हों ने पृथ्वी को पाताल तक भेदन किया पाताल के अर्थ हैं पैरों के तले, आकाश शिरसे ऊपर कोकहते हैं इसलिये हिमालय की ऊंचाई की अपेक्षा से हरद्वार की भूमि पाताल है और हरद्वार निस्सन्देह हिमालय का पाताल है इसमें विशेष व्याख्या करना व्यर्थ हैं विद्वान् भले प्रकार जानते हैं) जब पाताल में पहुंचे तो उन्होंने वहां उस अश्व को फिरते देखा और देखकर उनका रोम २ प्रसन्न हो गया अर्थात् जब वे हरद्वार पहुंचे तो उन को लेविल मिल गया परन्तु वहां कपिल देव को जो अपने तेज से ऐसे दीप्त हो रहे थे मानो अग्नि प्रज्वलित हो रही हैं बैठे हुए देखा अर्थात् सूर्य्यको वहां इतनी गर्मी थी मानो अग्नि जलरही है (कपिल अलंकार सूर्य्य का है देखो बाल्मीकि रामायण बालकांड सर्ग ४० श्लोक २। ३ में स्पष्ट लिखा है यह बसुन्धरा (पृथिवी) जिन भगवान वासुदेव (सूर्य्य) की स्त्री है और जो इसके अधिपति हैं वही भगवान नारायण कपिल मूर्ति धारण करके दिनरात पृथ्वी को धारण करते हैं उन्हीं की क्रोधाग्नि से ये दुष्ट राजपुत्र भस्म हो जायंगे, लक्ष्मणझूला और हरद्वार के बीच में जो जंगल पड़ता है वहां सूर्य्य की अग्नि समान प्रज्वलित होना ठीक लिखा है क्योंकि इस जंगल में यद्यपि गंगाभी बहती है और आज कल जंगल भी बहुत कटगया है तिसपर भी ज्येष्ठ, आषाढ़ के महीने में इतनी गर्मी होती और औहड़ लगती है कि वहां मनुष्य नहीं रहसका बुखार होकर मर जाता है और जब गंगा न होगी और जंगल भी घना होगा तब तो क्या ही दशा होती होगी क्योंकि इस

तराई की आब हवा से जीव पनाह मांगते हैं) वह कपिल जी का निरादर करके उस अश्व के पकड़ने को दौड़े और कपिल जीने क्रुद्ध होकर अपने तप के तेज को उनके ऊपर डालदिया अर्थात् उस गर्मी को कुछ ध्यान में न लाकर खुदाई करने लगे और वहां उस गर्मी से बीमार होकर मरगये यह हाल देखकर नारदजी (नारद हरकारे को कहते हैं) राजा सगर के पास गये और सब वृत्तान्त कह सुनाया राजा सगर उस दुःख से एक मुहूर्त तक बहुत मलिन चित्त रहा पश्चात् अपने पौत्र अंशुमान को बुलाकर कहने लगा कि हे पौत्र मैं तेरे बाप के निकालने और अपने इन साठ हजार राजपुत्रों के मरने और यज्ञीय अश्व के न मिलने से महादुःखी हूं और दुःखसे मेरा हृदय जल रहा है इस लिये तू अश्व को लाकर मेरा नरक से उद्धार कर अर्थात् इतने मनुष्यों के मरजाने और काम पूरा न होने से महा दुःखी हूं तू इस काम को पूरा करके मेरा यह दुःख दूरकर अंशुमान बड़ा बाणैत था यह आज्ञा पातेही प्रस्थान किया और बड़ा कष्ट उठाकर उस देश में पहुंचा जहां पृथ्वी फटरही थी (१) और उसी मार्ग से होकर उस स्थान पर पहुंचा जहां वह अश्व वर्तमान था वहां कपिल जी तप कर रहे थे (इसका अभि प्राय यह है कि महाराज अंशुमान ने गंगोत्री से ही लेविल देखना आरम्भ किया और पाताल अर्थात् हरद्वार तक देखता चला आया तो लेबिल ठीक मिला पाया परन्तु अंशुमान का कपिल जी को प्रणाम करना और अपने आने का कारण सुनाना और उन राज पुत्रों की मोक्ष पूछना और कपिल जी का प्रसन्न होकर उसको वर देना कि इन की मोक्ष गंगा से होगी और तेरा पौत्र राजा भगीरथ होगा वह शिवजी को प्रसन्न करके गंगा को लावेगा तात्स्थ्योपाधि न्यायशास्त्र का शब्द भेद है (२) अर्थात् अंशुमान ने यह दशा

---

(१) क्यों कि हिमालय में जाने को कोई रास्ता नहीं था जब पहाड़ तोड़े गए और गंगा को लाये तो रास्ता हो गया ॥

(२) जैसे मंचाःक्रोशन्ति अर्थात् मंचान पुकार रहे हैं, पुकारते तो हैं उन के ऊपर मनुष्य, परन्तु न्याय का शब्द भेद है।

देखकर मन में विचार किया कि जब इन राजपुत्रों ने इतना परिश्रम किया है कि इस महान कार्य्य में अपनी जानतक देदी तो इन का परिश्रम तभी सफल होगा कि जब गंगा लाई जाय अर्थात् उनके परिश्रम का सफल होनाही उनको मोक्ष थी परन्तु इसप्रकरण को वरदानादि की भ्रम युक्त बातें मिलाकर बिगाड़ दिया है(१)क्योंकि यदि कपिल जी को शरीर धारी मनुष्य मानाजाय तो उनका वरदान पाकर राजासगर और अंशमान ने क्यों गंगा लाने के लिये मरने पर्य्यन्त यत्न किये और महाराज दलीप ने तो इसी सोच विचारमें प्राणतक देदिये वरदान सुनकर उनका बड़े २ यत्न और परिश्रम करना व्यर्थ था किन्तु विपरीत भाव प्रगट करता है सो ऐसी ही बातें सुनकर लोगों की भ्रान्त बुद्धि हो गई निदान अंशुमान वहां से लौट कर राजा सगर के पास आया और जो वृत्तान्त उन राज पुत्रों के मरने और अश्व के मिलने का देखा वा सुनाथा कह सुनाया राजा ने यह सुनकर उसको बड़ा प्यार किया और उन राजपुत्रों के मरनेका शोक करना छोड़ दिया अब यहां राजा सगर का अश्वमेध यज्ञ पूरा हुआ अर्थात् महाराज ने जो मनसूवा देशोपकार के लिए बांधा था वह पूरा हुआ इसके पीछे महाराज सगर बहुत दिनों तक विचार करते रहे कि गंगा पृथ्वी पर कैसे आवेगी परन्तु कोई उपाय निश्चय न कर सके अन्त को राज्य का भार अंशुमान को सौंप कर तीस ३० वर्ष राज्य करके स्वर्गवासी हुए राजा अंशुमान ने भी अपने पितामह सगर की नाईं बहुत अच्छा राज्य किया और गंगा को लाने के बहुत उपाय किये परन्तु गंगा न ला सका उसके दलीप नामी एक पुत्र हुआ राजा अंशुमान उसको राज्य देकर हिमालय पर तप करने चले गए इस के पीछे राजा दलीप अपने पित्रों की प्रतिज्ञा सुनकर बड़ी चिन्ता करता रहा और गंगा लाने के बड़े २ यत्न किये परन्तु कोई उपाय न चला यही चिन्ता रात दिन महाराज को लगी

---

(१) अन्तर इतना ही कर दिया है कि यहां उनके परिश्रम से गंगा के लाने में मोक्ष नहीं मानी गंगा का जल उनका मोक्ष दाता माना गया।

रही कि किसी प्रकार से अपने पुरुखाओं की प्रतिज्ञा को पूरा करूं और यही चिन्ता करते २ उन को एक रोगने आघेरा और उसी रोग में उनका देहान्त होगया राजा दलीप ने तेतीस ३३ वर्ष न्याय पूर्वक राज्य किया इन के एक पुत्र भगीरथ नामी श्रीमान् धर्मात्मा बड़ा तेजस्वी और प्रतापी हुआ और जब राज्यसिंहासन पर बैठा तो अपने पुरुखाओं की प्रतिज्ञा सुनकर मन में बड़ा दुःखी हुआ इस राजा के कोई पुत्र नहीं हुआ था बहुत चाहा कि सन्तान हो (१) जब कुछ सन्तान न हुई तो अपना यश और कीर्ति इस पृथ्वी पर जब तक यह स्थिर रहेगी छोड़ जाने के लिए कमर हिम्मत की बांधी और मंत्रियों को राज्य सौंप कर हिमालय के उन शिखरों पर पहुंचा जहां से गंगा की उत्पत्ति है यह जो लिखा है कि "वहां जाकर महाराज भगीरथ ने एक सहस्रवर्ष तपस्या की,, सहस्र शब्द लिख देना पुराण वालों की एक बात है यह शब्द इस अलंकार में भ्रम डालने और गंगा की महिमा बढ़ाने के लिए पीछे लिखा गया है क्योंकि मनुष्य की आयु सौ वर्ष और अन्त को १२० वर्ष की होती है यदि कोई और शंका हो तो इक्ष्वाकु की वंशावली देखो कि राजा भगीरथ की कितनी आयु हुई थी वास्तव में राजा भगीरथ को हिमालय के परबतों की देखभाल और गंगा को लेजाने की युक्तियों के सोच विचार में एक वर्ष लगा शास्त्रों में सहस्र के अर्थ बहुवचनान्त में भी आते हैं परन्तु यहां एक शब्द के साथ वह भी अयुक्त है और तप के अर्थ यह हैं कि जो प्रजा के हितकारी और पुण्य के कार्य में परिश्रम किया जाता है उसको तप कहते हैं फिर (गंगाजी ने उसको दर्शन दिए और कहा कि मांग क्या मांगता है और भगीरथ ने कहा कि तू मेरे पित्रों की मोक्ष के लिए पृथ्वी पर चल और फिर गंगाजी ने कहा कि मेरे स्वर्ग से पृथिवी पर गिरने के वेग को

(१) यह वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण में लिखा है ॥

सिवाय महादेवजी के और कोई संभालने वाला नहीं है इसलिये तू पहिले शिवजी को प्रसन्न कर, यह रूपक अलंकार है जैसे पशु पक्षियों की कहानियों में उनका आपस में बातचीत करना लिखा जाता है और जैसे कोई परदेश में जाकर मर जाता है तो कहा करते हैं कि वहां की भूमि ही उसको पुकार रही थी शास्त्रों में अलंकारों के बहुत भेद हैं जो बिना पढ़े नहीं जान सक्ते परन्तु विद्याहीन पुरुषों ने उनके सूधे ही अर्थ समझ लिये हैं यहां भी इस अलंकार की असलियत यह है कि महाराजभगीरथने वहां पहुंचकर हिमालयकी ऊंचाईको देखा और मन में विचार कियाकि यदि गंगा यहां से छोड़ी जावेगीतो निःसन्देह जल का वेग पृथ्वी को तोड़ देगा अलबत्ता हिमालय को घाटियों में गंगा को घुमाव देकर चटानों पर को लेजावें तो जा सकेगी और जहां २ को हिमालय रास्ता देता है वहां २ को ले जाना हो सकैगा यही शिवजी को प्रसन्न करना था यहां शिव अलंकार हिमालय का है और इस अलंकार में उसका रूप ठीक शिवजी मिलता है जैसे शिवजी के मस्तक पर अर्धचन्द्रमा की उपमा दी है वह ठीक हिमालय की है क्योंकि हिमालय पर सामभाग विशेष है अर्थात् ऊंचाईके कारण हिमालय पर चन्द्रमा का आकर्षण बहुत है इस ही कारण हिमालय पर सर्दी बहुत है क्योंकि जैसे सूर्य्यका आकर्षण दक्षिण दिशाको विशेष है वैसे जब चन्द्रमा सदैव सूर्य्य के सन्मुख रहता है तो चन्द्रमा का आकर्षण उत्तर को विशेष है इस ही कारण इस को चन्द्रशेखर कहते हैं चन्द्रमा में केवल शर्दी जल और वीर्य्य है चन्द्रमा से ही सृष्टि को वीर्य्य मिलता है सो जैसे चन्द्रमा सृष्टि की उत्पत्तिका कारणहैं वैसे ही हिमालयभी अपने जल और वर्षाओं से इस देश के धन धान्य का कारण होने से उपमा दिया गया है देखो दक्षिण और पश्चिम के देशों में सूर्य्य भाग विशेष होने से बनस्पति की उत्पत्ति बहुत कम है अर्थात् मैदान हैं जंगल नहीं है ओर उत्तर दिशा में चन्द्रभाग विशेष होने से हरयाई और

जंगल से कोई जगह खाली नहीं दिखाई पड़ती नदो भी सब उत्तर दिशा से हो निकलती हैं और दक्षिण के समुद्र भी गमो से पकते रहते हैं चन्द्रमा के हो हिमालय के शिखर पर रहने से हिमालय की बूटी विशेष वीर्य्यवान् हैं और देशों को बूटियों में इतना वीर्य्य नहीं जितना हिमालय की बूटियों में है इसलिए पुराण में यहां हिमालय को शिव से उपमा दे कर उपमालंकार दिखलाया है (१) त्रिवेणी शव्दसे भी यह अलंकार सिद्ध होता है क्योंकि अलंकार वेणी नाम लटा का है जो रूपवती स्त्रियां अपनी सुन्दरता बढ़ाने के लिये बालों को लटा मुख पर छोड़ लेती हैं उनको बेणी कहते हैं सो जो तीन धारा इस समयभागीरथी १ अलखनन्दा २ मन्दाकिनी ३ नामों से प्रसिद्ध हैं हिमालय की चोटी से उतर कर इस प्रकार आई हैं मानो हिमालय के मुख पर तीन वेणी लटकती हैं दूसरे बाल्मीकिरामायण बालकाण्ड ४३ वें सर्ग के आठवें श्लोक से भी स्पष्ट यही सिद्ध होता है उस में लिखा है "कि गंगाजी ने बहुतेरा चाहा कि जटाओं से निकल कर भूतल को चली जाऊं परन्तु हिमालय के समान बड़ी गंभीर जटाओं में ऐसी घूमी कि किसी यत्न से बाहर न निकलसकी" आगे विद्वान पुरुष आप समझ लेवेंगे विशेष लिखने की आवशकता नहीं। निदान महाराजभगीरथ के ध्यान करते ही वहदेव नदि पुण्य और रम्य जलरखने वाली शिवजी को बैठाहुआ देखकर अकस्मात् आकाश से गिरी (अर्थात् जब गंगा छोड़ी गई) तो उसके देखने के लिये बड़े २ ऋषि, देवता, यक्ष और गन्धर्व वहां उस समय आन पहुंचे उस समय गंगा का जल बड़ा चंचल बड़ा घेर रखने वाला और मछली और मगरों से भराहुआ था शिवजी ने उस सब जल को अपने सिरपर धारण करलिया और वह जल शिवजी के ललाट पर मोतियों की माला के सदृश तीन धारा होकर (जो ऊपर वर्णन हुई)

---

* पुराणों में चन्द्रलोक को पितृलोक मानते हैं क्योंकि जब पितृलोक में जीवों का आना जाना मानते हैं।

बहने लगा इन्हीं को त्रिवेणी कहते हैं* उन में फेन की धारा (भागीरथी खोदी हुई नदि में छोड़ते समय फेन आया करता है और भागीरथी में फेन इस कारण अब भी कितनी जगह होजाता है कि उस की धारा बहुत ऊंचे से ऐसे गिरती है जैसे झरना गिरता है) ऐसी दीखती थी मानो हंसों की पंक्ति है और वह कहीं सीधी और कहीं टेढ़ी होकर बहती थी और कहीं वह फेन से भरी हुई ऐसी जान पड़ती थी जानो श्वेत कपड़े पहिने हुए मतवालीस्त्री जारही है उसके बहने का शब्द मधुर २ ध्वनि से होता था इस प्रकार वह गंगा आकाश से पृथ्वीतल पर आकर (अर्थात् जब हिमालय के नीचे पृथ्वी पर आई) भगीरथ से कहने लगी कि हे राजा में तेरे ही कारण से पृथ्वी पर आई हूं अब तू चलने को राहबता यह सुन कर भगीरथ गंगा के आगे २ उस राहपर को होलिया जो उस स्थान को गई थी जहां महात्मा सगर के पुत्रों के मृतक शरीर पड़े थे अर्थात् उसही दागबेल पर को लाया जो उन राज पुत्रों ने लगाई थी यहां उस अश्व के अर्थ स्पष्ट खुलते हैं (यह भी वही अलंकार है जो पहिले वर्णन हुआ क्योंकि गंगा के मुंह तो नहीं था जो बोलती अर्थात् राजा भगीरथ सोंच विचार करके उसही लेविल परकोलाया जहां को उन राजपुत्रों ने लगाया था परन्तु यहां गंगा में मोक्ष कायम करने वालों ने कैसी चलगाया था परन्तु यहां गंगा में मोक्ष कायम करने वालों ने कैसी च-

---

* तुलसीदास ने अपनी रामायण में लिखा है कि एक धारा आकाश और दूसरी पाताल को गई और तीसरी भागीरथी भूतल पर आई परन्तु शोक यह है कि बाबाजी ने चित्रकूट में ही बैठे २ लिख दिया और तनिक ऊपर हिमालय में जाकर न देखा कि ये तीन धारा कहां बहरही हैं मंदाकिनी को पहाड़ी लोग आकाश गंगा इस लिये कहते हैं कि यह बहुत ऊंचे परबतों पर को बहकर रुद्र प्रयाग में अलखनन्दा से मिलती है और अलखनन्दा बद्री आश्रम में बहुत नीचे स्थान में बहरही है इस कारण उस को पाताल गंगा कहते हैं और वह देव प्रयाग में भागीरथी से मिलती है।

तुरता से गंगा का माहात्म्य इस कथा पर आदि से अन्त तक घटाया है और इस अलंकारी कथा को कैसे अर्थों में लौटदिया है परन्तु यह चतुराई उन की विद्वानों के सन्मुख नहीं चलसकी थी यह तो तब ही चली जब इस देश को ही शास्त्रों के पढ़ने से वर्जित करके कोरा पशु बनादिया भला कहां तो बात यह थी कि उन राज पुत्रों का इतना बड़ा पुरुषार्थ प्रजाहित के लिये जिसमें उनके प्राण तक गये पूर्ण होना अर्थात् गंगा का लाना उनकी सद्गति का हेतु समझना था कहां गंगाजल से ही उनको मोक्ष सिद्ध करबैठे इसही कथापर निश्चय लाकर पंजाब देश ने अपने मुर्दों के हाड़ गंगा में हरद्वारपर डालने से उनकी मुक्ति का होना मान लिया है परन्तु इन कथा के सनने वालों ने यह कभी मन में न विचारा होगा कि उन राजकुलों के मृतक शरीर चार पीढ़ी तक कहां रहे होंगे क्यों कि उनके मरने के चार पीढ़ी पीछे भगीरथ गंगा को लाया था इतने समय तक तो हाड़ क्या वहां उनकी मिट्टी भी नहीं रही होगी फिर गंगा ने मोक्ष किसको करी थी दूसरे जीव का सम्बन्ध शरीर से इतनाही है जितना कि मकानदार का मकान से होता है जब मकानदार ने मकान को छोड़दिया तो फिर उससे उसका क्या प्रयोजन रहा अब यह विचार ही लोगों के मन में नहीं रहा कि कर्म ही जीव के साथ रहने वाले हैं और कोई भी इसका साथी नहीं यह संसार कर्मों के बन्धन में पड़ा हुआ बारम्बार जन्म लेता चलाजारहा है और सारी सृष्टि, पृथ्वी, आकाश, तारागण, और लोक लोकान्तर कर्मों के ही बन्धे घूम रहे हैं संसार की दशा क्षण २ भर में बदली रहती है उसही दशा को हम जीव जन्म मरण कहते हैं वह हालत न कभी ठहरती है और न अपने मार्ग से चूकती है परन्तु इस कथा के विश्वास ने उस जबर्दस्त कानून कुदरत को जो कभी न पलटसका है न घट बढ़ सक्ता है पलटदिया और परमात्मा के न्याय को जो कभी नहीं कटसका काटदिया ऐसे ही शब्दों में कथा के सम्पूर्ण आशय को पलटदिया है और प्रजा को भ्रम में डालदिया है और गंगा का पृ-

थ्रों पर आकार भागीरथ से राह पूछना और भागीरथ का रथ गंगाके आगे २ होना वही बात है जैसे कि मिस्टर काटली साहब ने गंगाकी नहर को जब हरद्वार से छोड़ी थी तो उक्त साहब घोड़ों की डाक लगा कर जल के साथ २ उसकी चाल को देखता हुआ गयाथा यदि हम उस समय के आनन्द और तमाशे को वर्णन करें और उसमें काटली साहब की बातचीत नहर के साथ लिख देवें तो क्या लोग नहरको स्त्री और उसका काटली साहब से बातचीत करना सचमुच ही समझलेंगे निदान राजा भगीरथ गंगा के साथ समुद्र तक पहुंचा और वहां पहुंचने पर गंगा ने उस वरुणालय समुद्र को अपने जल से भर दिया।

महादेव और गंगा के विषय में कवियों ने इस प्रकार अलंकार दिया है कि कैलाश परवत को अलंकार से महादेव ठहराया है, चूंकि गंगा हिमालय की सब से ऊंची चोटी स्थान कैलाश (जहां महादेव की गद्दी थी) से निकली है, और चोटी व जटा के अर्थ एक ही हैं इस लिये गंगा का महादेव जी की जटा से निकलना निश्चित किया है और महादेवजी के शिर में चन्द्रमा से यह तात्पर्य्य है, कि कैलाश पर सोम भाग अर्थात् शीतलता चन्द्रमा की अधिक है, और शास्त्रों में चन्द्रमा का स्वभाव शीतल तथा जल से परिपूरित वर्णित है वरन सोम शब्द को जल और शीतलता के अर्थों में लिये हैं, जिस के अर्थ चन्द्रमा के भी हैं, और प्रत्येक वनस्पति आदि सब वस्तुओं में वीर्य उत्पन्न करने वाला यही है, और इन के गले में सांप लिपटे रहने से यह तात्पर्य्य है कि हिमालय के दामनों में सांप अधिकता से वृक्षों के सदृश शरीर वाले होते हैं कि जिन को प्रायः मनुष्यों ने अंधेरे में तना वा वृक्ष पड़ा हुआ समझा है, पुराण में भी लिखा है, कि जब गङ्गा छूटी तो बहुत प्रकार से शोर करती हुई चली, और उस में कछुवे, मगर, सांप और मछलियों का वास हुआ और तुलसीदासजी ने भी अपनी रामायण में इसी प्रकार वर्णन किया है और यह अलंकार

कि महादेव ने चन्द्रमा की शीतलता के कारण अपने कण्ठ में विष रोक लिया था, और इन को कुछ हानि न पहुंचो इस प्रकार है, कि हिमालय के दामनों के घने जङ्गलों की ज़हरीली (विष युक्त) आबोहवा (जल, वायु) हो जाती है, परन्तु शीतलता के कारण उस को आबोहवा में कुछ हानि न पुंहची, कैलाश को स्वर्ग और गङ्गा का स्वर्ग में बहना लिखा है तो इस से यह अभिप्राय है कि पहिले गङ्गा का चश्मा हिमालय के उत्तर की घाटियों से ब्रह्म पुत्र के सदृश बहता था, जब महाराजा भागीरथ † परवतों को काट कर इस ओर लाया तो मानों स्वर्ग से इस लोक अर्थात् देशमें आगई अब यहां प्रश्न यह उत्पन्न होता है, कि अन्य चश्मों वा नदियों का जल जो गङ्गा से मिली हैं कहां जाता था तो उत्तर यह है, कि सब चश्मों का जल अपने २ मार्गसे परवतों की घाटियों में बहता था, जब गङ्गा इस ओर आई तो वे चश्मे गङ्गा में मिल गए, जो कि महादेव ने कुछ बिन्दु अपनी जटा से भागीरथ को दीं, तो स्पष्ट है कि कुल कैलाश जगह व जगह चश्मों से परिपूरित हैं, अर्थात् जल से भरा हुआ है तो चश्मा गङ्गा जो बहुत छोटा है भागीरथ लाया अर्थात् सब कैलाश का जल इस ओर न हो आया उत्तर कैलाश के चश्मे अब भी उत्तर की ओर ही बहते हैं।

अब यह भी जानना चाहिये कि महाराजा भागीरथ इतना परिश्रम उठाकर और परबतों को काट कर इस छोटे से चश्मे को इस ओर क्यों लाया, प्रयोजन इस का यह है कि अपने पुरुषाओं के स्वीकार पत्रानुसार भागीरथ को देशोपकार जो कि पहिले राजाओं का धर्म्म था करना था, तथा पूर्वीय भाग को सैराब करना था, परन्तु साथ ही इस के यह बात भी स्मरण रखने योग्य है, कि गङ्गा जल के सदृश भारतवर्ष में अन्य किसी नदी का जल नहीं है यमुना नदी जो कि गंगोत्तरी से कुछ अन्तर पर निकली है, उसका

† जब भागीरथ हिमालय को चीर कर गंगा लाया तो जिन्हु (हिमालय परवतका नाम है)नामी ऋषि ने रांग चीरकर गङ्गा निकाली।

जल गङ्गा के जल के सदृश नहीं, गंगा नदी में आकसीजन का भाग अधिक है, जिस को शास्त्र में प्राण पद कहते हैं, आकसीजन वह वायु है जो कि जीवन का मूल है अतः यह जल रङ्ग स्वाद तथा गुणादि प्रत्येक प्रकार से भारत वर्ष की अन्य नदियों की अपेक्षा अधिक गौरव रक्खता है, और चूंकि संस्कृत के कवियों ने कैलाश परबत को स्वर्ण का परबत लिखा है इस का कारण यह है कि कैलाश के पत्थरों में सोना बहुत है चूनाचि गंगा की रेत से सोना बहुत निकलता है और सोने में आकसीजन बहुत होता है विशेषतया कैलाश के पत्थरों वा जल वायु में अकसीजन भाग अधिक है इसी हेतु और इन्हीं कारणों से कवियों ने इस का नाम विष्णु पदी रक्खा है क्योंकि विष्णु सब के प्राणों का आधार है, जिस का अलंकार इस आकसीजन (प्राण प्रद) से लिया जाता है और यह ही कारण इस की गौरवता वा महिमा का है, इस के जल की प्रशंसा नहीं हो सकती, यदि हिमालय स्वर्ग है, तो इस का जल अमृत समान है मन को शान्ति दायक और शिर की उष्णता हटाने का कारण है गुण में हलका तथा शुष्क है, देखने में दूध की धारा समान है। तपस्वियों के लिए समाधि के लिये बड़ा हेतु है, जहां घने वृक्षों की शाखाएं गङ्गा की धारा को स्पर्श करती हुई झुकी हैं, और इनकी घनी छाया में पवित्र चट्टानों पर लहरें मारती हुई धारा सुगन्धित ठण्डे वायु के झोकों के साथ बह रही है, वही स्थान ऋषियों के आश्रम होते थे इस जल को ब्रह्म द्रव्य (१) भी कहते हैं, और इसकी ही कथा अलंकार के तौर इस प्रकार वर्णित की है कि नारद ऋषि दैवयोग से एकबार किसी ग्राम में गए, और देखा कि वहां के निवासियों की दशा बड़ी शोचनीय है प्रत्येक का कोई न कोई अंग टूटा हुआ है कोई पग से लंगड़ा, कोई हाथ से लुञ्जा, और कोई नेत्र से काणा

---

(१) ब्रह्म लोक जो हिमालय में लिखा है उससे भी ब्रह्म द्रव्य ठीक होता है।

(एक नेत्र वाला) पड़े हुए थे नारद जी ने इसका कारण पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया कि नारद मुनि को गाना नहीं आता, जब २ वह जिस जिस राग को गाता है तो उनका कोई न कोई अंग टूट जाता है, हम राग हैं और हमारी यह दशा नारदजी के इस प्रकार अशुद्ध गाने से हुई, तब नारदजी ने मालूम किया कि तुम किसी प्रकार से ठीक भी हो सकते हो अथवा नहीं, तो उन्हों ने उत्तर दिया, कि यदि महादेव जी गावें, तो हमारे सब अंग ठीक हो सकते हैं अतः महादेव जी ने नारद की प्रार्थना पर जब कि देवताओं की सभा लगी हुई थी गाया तो सब देवता जल होकर बह गए, और उस जल को महादेव जी ने एकत्र कर दिया, वही जल यह गंगा है और इसी कारण से इसको ब्रह्म द्रव्य कहते हैं इस कथा से भी उसी आकसीजन तथा विष्णुपदी का परिणाम निकलता है परन्तु शोक यह है, कि स्वार्थी मनुष्यों ने इन अलंकारी कथाओं में भी और अधिक विवाद करके स्नान से पाप छूटना बतला दिया और मनुष्यों के विचार से सृष्टि नियम को भुला दिया इस ही कारण से आज कल पाप और अधर्म अधिक होने लगा है, पुराणों को और गप्प को जो कि गु० तुलसीदास जी अपनी रामायण में लिखते हैं देखिये।

चौपाई

बहुरि भगीरथ सुमरन कीना। डारी जटा शिव बुन्दक हीना॥
ताहि ते भई तीन पुन धारा। एक गई नभ एक पतारा॥
गई नभ सोई कि अघनासिनी। देवन धरा नाम मंदाकिनी॥

दोहा

दूसर गई पताल में, नाम अभावति हरण दुःख।
तीसरी भई गंगा सोई, सब संतन को करते सुख।

अर्थ—भागीरथ के बहुत स्तुति करने पर महादेव जी ने जटा से बून्द दी इस से तीन धारा हुईं, एक आकाश को गई और एक पाताल को गई जो आकाश को गई उसका नाम देवताओं ने (कैलाश के

निवासियों ने) मन्दाकिनी रक्खा, दूसरी दुःख के हरने वाली पाताल को गई उसका नाम प्रभावती हुआ, और तीसरी गंगा जो सन्तों को सुख देने वाली है यह तीनों ऊपर वर्णित धारा कैलाश में वह रही हैं, जो केदार नाथ महादेव के पास से होकर बहती है उसको मन्दाकिनी (१)और जो बद्रीनाथ के नीचे धारा आई है, उसको प्रभावती वा अलखनन्दा कहते हैं अन्तर केवल इतना ही है, कि मन्दाकिनी बहुत ऊंचाई पर केदारनाथ के ऊपर को ओर होकर और अलखनन्दा (२) बहुत नीचे पृथ्वी पर, अर्थात् बद्रीनाथ से नीचे होकर बहती है, जिनको ऊंचाई अथवा नीचाई के कारण आकाश या पाताल में बहना लिख दिया, तीसरी खास गंगा, जोकि गंगोत्तरी के स्थान से होकर बहती है और रुद्र प्रयाग में दोनों मिल गई हैं, और तीसरी गंगा भागीरथी टेढ़ी होकर देव प्रयाग में इन दोनों से आ मिली है, इन तीनों धाराओं को पुराण में त्रिवेणी लिखा है वेणी शब्द ज़ुलफ (बालों की लिट) अर्थ में आता है यह शब्द इसबात का पूरा प्रमाण और युक्तिसिद्ध है कि संस्कृत के कवियों ने कैलाश परवत को अलङ्कार में महादेव ठहरा कर प्रशंसा की है और चूंकि ज़ुलफ (बालों की लिट) की खासीयत मुराड़ खाने की है, जब महादेवजी ने अपनी जटा खोली तो तीन ज़ुलफ (लिट) उस में से लटक गई और जिस प्रकार कि ज़ुलफ मुख के ऊपरन्तु नीचे को लटक कर आया करती है उसी प्रकार यह तीनों धारा हिमालय की ढाल में अर्थात् मुख पर को होकर आई हैं, इसी कारण से इनको त्रिवेणी कहते हैं तुलसीदासजी ने तो बद्रीनाथ जाकर भी न देखा और चित्रकूट में ही बैठे २ ऊंचाई तथा नीचाई

---

(१) मन्दाकिनी को पहाड़ी मनुष्य आकाश गंगा कहते हैं।

(२) अलखनन्दा को यदि बद्री नाथ से देखते हैं तो अपनी नीचाई में बहती है जोकि नक्षत्र के सदृश चमकती हुई दिखाई देती है, और पहाड़ी लोग इसको पाताल गंगा कहते हैं।

के कारण आकाश वा पाताल लिख दिया, इस में बहुत शोच-नीय बात यह है कि इन लोगों ने ऊपर वर्णित अवस्था और इन धाराओं का अवलोकन नहीं किया वे तो आकाश और पाताल ही में इन का बहना समझ रहे होंगे यह कितनी बड़ी भूल है और ऐसे २ अलङ्कारों से कितना भ्रम उत्पन्न हुआ।

अब महाराजा भागीरथ के पुरुषार्थ पर भी किञ्चित् ध्यान दीजिये कि जिस के पुरुषा कई पीढ़ी तक गंगा लाने के लिये यत्न करते रहे, परन्तु न ला सके और पुनः उक्त महाराज ने इस कार्य को अपना कर्तव्य समझा और शिव जी महाराज से प्रार्थना करके इञ्जिनरी के द्वारा परबतों को काट कर लाया, सत्य तो यह है कि महाराजा साहिब का परबतों को काटना और अपनी आयु इस बड़े भारी कार्य में व्यतीत करनी और उत्तम चश्मा को इस उष्णदेश में लाकर बर्फी धारा से इस देश को सराब करना उसी शूरवीर महाराजा के परिश्रम का फल था जो इस सराहनीय काम से अपना यश और नाम सदैव के लिए जब तक कि चन्द्र और सूर्य विद्यमान रहेंगे छोड़ गया और प्रजा पालन का आदर्श बना धन्यवाद के योग्य उस भद्र पुरुष का जीवन है कि जिन के द्वारा देश को लाभ पहुंचे ऐसे ही मनुष्य प्रतिष्ठा तथा महाराज कहलाने के योग्य होते हैं सूर्य वंश में ऐसे ही प्रतापी धर्मात्मा परोपकारी महाराज हुए हैं कि जिन्हों ने देश उपकार से अपने वंश को सूर्य के सदृश प्रकाशित कर दिया, और जिन के उपकारों को संसार आजतक स्मरण कर रहा है तथा उन के नाम की माला फिर रही हैं, आज कल हमारे महाराजा केवल नाम मात्र के हैं, जो ऐश्वर्य भोगविलास तथा राज्य के अभिमान के अतिरिक्त और विचार ही नहीं रखते, परन्तु वास्तव में मनुष्य काल विकाल का ग्रास है जो अपने नाम को जीवित नहीं रख सकता, उक्त महराज की शिल्पविद्या की ओर ध्यान दीजिये उस योग्य

इञ्जिनिअर ने गङ्गा को ६ मील की ऊंचाई हिमालय से जो कि दीवार के सदृश सीधा खड़ा है ऐसी युक्ति से उतारा, कि भूमि को कुछ हानि न पहुंची नहीं तो निस्सन्देह गंगा पृथ्वी को फाड़ देती, इसलिये यह रूपक अलङ्कार लिखा है कि यदि स्वर्ग से छोड़ी जावेगी तो भूमि को फाड़ कर पाताल को चली जावेगी परन्तु महादेव ने अपनी जटाओं में रोकली, अर्थात् उस महाविद्वान् इञ्जिनियर की योग्यता से हिमालय की घाटियों में घूमती चली आई हरद्वार की ऊंचाई समुद्र की तह से एक सहस्र चौबीस फीट है जबकि हिमालय की ऊंचाई उन्तीस हजार फीट और हरद्वार से प्रयाग ४१५ मील और उधर गंगोत्तरी १८० मील है।

चुनांचि हरद्वार से गंगोत्तरी तक १८० मील में २८००० फीट की ऊंचाई से इतनी इस न्यून दूरी में गंगा का लेविलद्वारा उतार लाना और हरद्वार से प्रयाग तक दूसरा ऐसा लेविल देना, कि जिस से विना तट की रक्षा किये अबतक वही लेविल स्थिर है कितना आश्चर्य जनक है, तिसपर राम गंगा आदि छोटी २ नदियोंसे बराबर करके यमुना से मिलादेना विचित्र घटना है भारत वर्ष के कवियों की कविता का स्थान क्यों न हो, विदित है कि नहर गंग के पूर्ण रक्षा होने की दशा में भी तटों की मिट्टी को जल ने उड़ा दिया है, यदि तटों की रक्षा न की जावे, जल किनारों को काट कर लेविल को नष्ट कर देता है परन्तु गंगा में बिना रक्षा के ही आज तक वही लेबिल (१) विद्यमान हैं, और जल का प्रवाह कम करने के लिये जल के वेग को घुमाव दिया जाता है, इसी हेतु हरद्वार से गंगा को घुमाव दियागया है अंग्रेज़ों ने नहर गंग को मायापुर वा रुड़की के मध्य में जिस में १८ मील का अन्तर है, और नहर के जल को तह मायापुर से सुलानी नदी की तह तक ८६ फीट के लगभग और मायापुर

(१) नहर गंग के निकालने वालों ने प्रत्येक मील पर केवल १५ इंच नीचाई रक्खी है और इतने पर कितनी बड़ी कठिनाइयें पेश आई हैं।

को भूमि की तह अनुमान १०० फोट नोचाई है चार आबशार नौ नौ फोट और एक बहुत बड़ा पुल साढ़े सत्ताईस फीट ऊंचाई वाले पर से नहर को उतारा है और तिसपर भी लेविल के लिये कठिनाईयां पेश आई हैं और उक्त नहर १५ वर्ष (१) में तय्यार हुई जब कि कोई कहीं परवत भी नहीं काटना पड़ा, पाठक गण विचारें कि इंजिनियरों की विद्या उस समय कैसी थी, आज कल मनुष्य मिथ्या ही विद्या का घमण्ड कर रहे हैं ध्यान देने योग्य स्थान है, कि भागीरथ इक्ष्वाकु की ४२ वीं पीढ़ीमें हुए हैं उस समय इंजिनियरों की विद्या कैसी थी जब कि उन की १३वीं पीढ़ी में महाराजः रामचन्द्र ने सेतबन्द अर्थात् समुद्र का पुल बांध कर रावण पर चढ़ाई की थी, अब अवनति के समय में इस विद्या का अनुकरण कर के युरोप (हरिवर्ष) मनुष्यों ने अनेक बड़े २ लाभ इस विद्या के द्वारा अपने देश को पहुंचाए हैं हालांकि आज तक कोई पुल किसी भारी नदी का भी किसी प्रकार से बिना लोहे के नहीं बांध सके बहुधा मनुष्यों के ऐसे विचार भी हैं कि महराजा भागीरथ परवत काट कर गंगा नहीं लाया परन्तु महादेव के वर से स्वयं उनके रथके पीछे २ चली आई, यह उनका भ्रममूलक ज्ञान है, इस में कुछ सन्देह नहीं कि जिस समय गंगा छोड़ीगई होगी महाराज साहिब का पवनवेगी रथ भाउ की परीक्षा(२)करने के निमित्त आगेर चलता होगा और गंगा की धारा पीछे २ और यह भी प्रशंसनीय बात है कि गंगा ने भागीरथ से कहा कि पवनवेगी रथ लाओ अर्थात् मैं ऐसे वेग से चलूंगी कि जिस के साथ चलने को पवनवेगी घोड़ा चा-

---

(१) नहर गंग की खुदाई १८३३ में आरम्भ हो कर १८५४ में समाप्त हुई

(२) इसी प्रकार जिस समय मिस्टर काटली साहिब ने नहर गंगमें जल छोड़ा था, तो बराबर घोड़े की डाक लगाकर जल के साथ २ गए थे।

लिये यह केवल तीव्रता की प्रशंसा है, न कि गंगा का मुख था अथवा बोली थी, जो मनुष्य कुछ विद्या से अभिज्ञ हैं, वह बिना रुकावट के समझ सकते हैं, कि स्थान २ से परवत कटे हुए दिखलाई देते हैं, उन का कटाओ बनावटी भले प्रकार प्रतीत होता है चुनांचि इस का एक नमूना हरद्वार पर शवालक परबत का दर्रा है और दूसरा श्रीनगर से ऊपर परबतों के दर्रे कटे हुए दिखलाई देते हैं।

मुन्शी नन्दकिशोर साहिब डिपटी कलेक्टर स्वरचित इतिहास सहारनपुर में लिखते हैं कि राजा भागीरथ सूर्य्यवंशी गंगा को हिमालय से काट कर लाया, इस के अतिरिक्त इस बात पर विचार करना चाहिए कि ईश्वर रचित नदियों का एक तट पृथ्वी के गोल होने के कारण जल के प्रवाह से ऊंचा होता है जिस प्रकार से यमुना नदी का दक्खनी तट ऊंचा है परन्तु खोदी हुई नदी के गंगा के दोनों तट समान हैं, यद्यपि वर्तमान समय में प्रायः स्थानों में तटों का वास्तविक स्वरूप परिवर्तन होगया है क्योंकि लाखों वर्षों का समय व्यतीत हो चुका है, परन्तु गंगा की पूजा प्रारम्भ होने का समय तीर्थों के बनने का समय है यदि पूर्व काल में उसकी पूजा वर्त्तमान समय के सदृश होती तो भविष्यत बातों के कथन करने वाली पुस्तकें भी पुराणों के सदृश इस का कथन अवश्य करतीं और उस समय के राजा महाराज यथा रामचन्द्रजी, वा महाराज श्रीकृष्ण युधिष्टर वा महाराजा विक्रम भोज वा अन्तिम समय के पृथ्वीराज आदि कोई स्थान पूजा का वर्त्तमान समय के सदृश अवश्य बनवाते, यद्यपि वे मन्दिर वर्त्तमान समय तक स्थिर न रहते, परन्तु उन के नियम पूजा विषयक अवश्य प्रमाणिक ग्रन्थों में होते और वे मन्दिर किसी ऐतिहासिक चिन्ह से प्रतीत होते।

बहुधा स्वार्थियों ने दृढ़ निश्चय के लिये यह बात मनुष्यों के हृदयों में जमा रक्खी है कि गंगाजी की यह बड़ी शक्ति है, कि सब नदियों का

जल कुछ दिवस रक्खने से बिगड़ जाता है, परन्तु गंगा जल चाहे कितने ही समय तक रक्खा जावे नहीं बिड़ता, यह कोई सिद्धि (करामात) नहीं और हमारे भोले भ्राताओं को इतना भी ज्ञान नहीं रहा, जो इस बात के तत्व को जान सकें और इस को तह को पहुंच सकें, क्योंकि यह बात पदार्थ विद्या से सम्बन्ध रखती है विदित हो कि जब जल में दुर्गन्ध गुण नहीं, तो उसका बिगड़ना किस प्रकार से हो सकता है जगत को उस सर्व शक्तिमान परमात्मा ने पांच तत्वों से बनाया है और उनके गुण यह हैं आकाश का शब्द गुण अर्थात् स्वर का निकलना वायु में शब्द और स्पर्श, अग्नि में शब्द स्पर्श और दृश्य गुण, जल में शब्द, स्पर्श, दृश्य और रस गुण, पृथ्वी में शब्द, स्पर्श, दृश्य, रस और गन्ध गुण, परमात्मा ने इन तत्वों को एक दूसरे से मोटा वा बारीक और इन में एक एक गुण बढ़कर बनाए हैं, अब विचार करना चाहिये, कि जल में दुर्गन्ध गुण किस प्रकार हो सकता हैं, हां पृथ्वी अर्थात् मिट्टी के योग से उसमें दुर्गन्ध गुण आसक्ता है जैसे वायु सुगन्ध से सुगन्धित तथा दुर्गन्ध से दुर्गन्ध युक्त हो जाता है, इसी प्रकार जल पृथ्वी के योग से दुर्गन्धयुक्त, सुगन्धित, खारा, मीठा, अस्वाद, स्वस्थता के लिए हानि कारक तथा स्वस्थता को ठीक रखने वाला हो जाता है चूंकि गंगा जल पत्थरों की चटानों पर बहता हुआ आता है जिसमें पत्थर के अतिरिक्त और कोई मेल नहीं होता और विशेष रूप से उस के न विगड़ने का कारण आकसीजन (प्राणप्रद) और स्वच्छ बर्फ का जल है, वरन जितने कैलाश के चश्मे हैं, उनका जल भी नहीं बिगड़ता और ब्रह्म पुत्र नदी जो कैलाश से निकलकर उत्तरकी ओर हिमालय में बहती है उसका तथा युरोप (हरिवर्ष) में कोकस नदी का जल भी नहीं बिगड़ता ।

गंगा शब्द के अर्थ संस्कृत में बहने वाले के हैं और यह शब्द "गमलृगतौ,, धातु से सिद्ध होता है, जो बहने के अर्थों में आता है ।

अन्तिम परिणाम।

वर्तमान समय में देखा जाता है, कि इस देश भारतवर्ष के निवासी अनीश्वरवादी हो रहे हैं, जो ब्रह्म परमात्मा सर्वशक्तिमान को न जानकर बहुत से कलपितमनमाने देवताओं की मूर्तियों वा नदी वृक्ष मिट्टी पत्थर तथा जीव जन्तुओं आदि की पूजा में लगे हुए हैं, और जो स्वामी जन्म मरण कर्म्मों का फल दाता न्यायकारी है, उस के स्थान उन के दर्शन व स्नान से पापों का छूट जाना, मुक्ति मिलना और लोक परलोक के सुधार का उद्देश्य समझ कर अपने मनुष्य जन्म को व्यर्थ नष्ट कर रहे हैं सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर इस देश की अवनति का कारण यही प्रतीत हुआ है अन्यथा प्राचीन इतिहास से तो इस देशका गौरव, प्रतिष्ठा, विद्या, धन, प्राक्रमतथाशिल्प विद्या आदि से जो कुछ प्रतीत होता है, वह वाणि से कथन करने में नहीं आता, विदित हो कि ऊपर लिखित गुण इस देश में विद्याकी ही महिमा वा उन्नतिके कारणथे जो विद्या सांसारिक विद्याओंकी केन्द्र थी और जिन के अनुकरण से यहां के निवासियों ने चक्रवर्त्ती राज्य किया और एशिया, युरोप (हरिवर्ष) एमरीका (पाताल) आदि देश देशान्तर अपने अधीन किए। कहां है वह विद्या कि जिन के द्वारा यहां के निवासी वायु में विमान बनवा कर आकाश में घूमते थे अगनेयास्त्र (अग्नि वर्षाने वाला) वरुणास्त्र (जल वर्षाने वाला) मोहनास्त्र (बेहोश करने वाला) आदि अनेक प्रकार के शस्त्र अस्त्र निर्म्माण करके शत्रु को १ वार ही पराजय कर देते थे वायुमें विष वा विद्युत को उत्पन्न करके शत्रु की सेना को शीघ्र ही नष्ट कर देते, कलों के द्वारा परबतों को इधर उधर उलटा देते, औषधियों से कटे हुए शिर को जोड़ देते थे, भला जहां विद्याओं में ऐसे चमत्कार थे, वहां धन ऐश्वर्य, स्वतंत्रता वा आनन्द की क्या कमी थी, विदेशी यहां से ही विद्या सीखकर संसार में विद्वान् कहाये

यहां के ऐश्वर्य्य से ही निर्धन राजा बन गए, यह चमत्कार वेद विद्या और उन महात्मा ऋषि मुनियों ही के उपदेशों का फल था, जो अपने जीवन को संसार के सुख के लिए विद्योपार्जनमें व्यतीत करदेते थे, परन्तु शोक ! कि महाभारत युद्ध ने बड़ा भारी धक्का देकर अन्धकार में डाला क्योंकि इस युद्धमें बड़े २ विद्वान् मारे गए, वेद मर्यादा और विद्याओं का चर्चा घटने लगा देश में अन्धकार फैल गया, चक्रवर्ती राज्य न रहने से पृथक् छोटे २ राजा भिन्न २ भाषा तथा अनेक मतमतान्तर होकर विरोध, विवाद, द्वेष प्रमाद और स्वार्थता ने अपना घर कर लिया, पुनः नवीन रचनाओं की शक्ति तथा धर्म का स्थिर रहना कहां, क्योंकि एक राज्य से धर्म्म और राज्य की व्यवस्था स्थिर रहती है, जब वेदों का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना तथा विद्या वा शिल्प शास्त्र का चर्चा छूटा तो ब्राह्मणों ने विद्याहीन होकर अपनी जीविकार्थ प्रबन्ध किया और अपने पुरुषाओं ऋषि मुनियों की प्रतिष्ठा को अपने ऊपर घटाकर सब के पूज्यदेव बन गए, और सब मनुष्यों को अपने आधीन करने के लिए सब वर्णों को शास्त्राध्ययन का निषेध बता दिया, कि ब्राह्मणों के बिना अन्य किसी को पढ़ने का अधिकार नहीं है जिस कारण क्या राजा और क्या प्रजा विद्याहीन होगए, जब अविद्या अन्धकार देश में हुआ तो पुनः कौनसी विपत्ति थी जो इस देश पर न आती, क्योंकि विद्या ही मनुष्य का बल है, उस समय उन के आलस्य तथा स्वार्थता ने देश पर ऐसा प्रभाव डाला कि एक जैन मत वेदों केविरुद्ध प्रचलित हुआ, जिस ने सब वैदिक मर्यादाओंका सत्यानाश कर दिया ।

स्वामी शंकराचार्य्य और महाराज विक्रम से तेजस्वी राजाने दबाया परन्तु यह महात्मा कहां तक देश का शोधन करते जब कि विद्याही देश में लोप हो चुकी थी, और मूर्त्तिपूजा अपना अधिकार अधिक जमारही थी यद्यपि महाराज भोज के समय तक वेदों का कुछ २ प्रचार बना रहा, परन्तु उनके पश्चात् ही बड़ा भारी अन्धकार देश में

छा गया जो ब्राह्मण कहते रहे वही धर्म माना गया यहां तक कि उन्होंने ईश्वर के गौणक नाम को जो वेदों में लिखे हैं उन की मूर्त्ति बना और उनको देवता ठहरा कर उनको पूजा से भयभीत कराकर उन की पूजा वा झढ़ावा झढ़ाने को अपनी जीविका का निमित्त बना लिया, और उनके प्रमाण के लिये साधारण संस्कृत में उसी प्रकार के ग्रंथ बना लिये, जिन को पुराण कहते हैं, और उन को वेदों के स्थान में धर्म्म पुस्तक माना पुनः क्या ही कहना था, मनुष्य उन को सुन कर और सत्य विद्या के प्रचार से हट कर भ्रम जाल में फंस गए और मूर्खता के सागर में गोते खाने लगे और उस में ऐसी कहानियें सुन कर कि अमुक देवता मुक्ति देगा अमुक सन्तान, अमुक धन, अमुक रक्षा करेगा, और अमुक शत्रु को मारेगा मनुष्यों को बुद्धि भ्रम में पड़ कर इस शिथिल अवस्था को पहुंचगई कि अब जहां कहीं किसी ईंट पत्थरको सन्दूर लगाया हुआ फूल चढे देखते हैं, तत्काल ही शिर झुका देते हैं भला पाठक गण विचारिये कि कहां यह कल्पित विचार और कहां विद्या तथा कलाकौशल जब यह दशा हुई, और विदेशियों को इन की अवनति का पता लगा तो उन को इस देश में अपना अधिकार जमाने का उत्तम अवसर प्राप्त हुआ और जो दशा उन्होंने इस देश की कीवह इतिहासवेत्ताओंको मालूमही है, कि यहांके भद्र पुरुषों, राजा रईसां की स्त्रियां तथा कन्याऐ आठ आना को ग़ज़नी (१) के बाज़ारमें बिकीं अब सांसारिक बस्तुओंप्र का भाव देश में ऐसा पड़ा है कि जिस से अनेक मत मतान्तर प्रचलित होकर परोपकार बुद्धि, प्रेम, ऐक्यता आदि देशोन्नति के जो नियम थे नष्ट हो गए, और बुद्धि की यह दशा हुई कि एक भाई दूसरे को मार कर प्रसन्न होता है, देखिये जिन ब्राह्मणों का धर्म देश का उपकार करना वेद पढ़ना पढ़ाना

---

(१) ग़ज़नी अफगानिस्तान देश के कन्धार प्रान्त में है जहांकी राजकन्या गांधारी राजा धृतराष्ट्र से ब्याही गई थी जिससे कौरव उत्पन्न हुए ।

वा पदार्थ विद्याओं को सिद्धकरके देश को लाभ पहुंचाना व सत्य उपदेश सुनाना था और जिन क्षत्रियों का कर्तव्य देश को रक्षा करना व प्रजा पालन था, जोकि युद्ध में शत्रु के सन्मुख प्राण देने को धर्म तथा कीर्त्ति समझते थे और जिन वैश्यों का कर्तव्य देश को व्यापार के द्वारा अनेक प्रकार के सुख पहुंचाकर, अन्य देशों की नीति, व्यवहारों से अपनी उन्नति करना, और स्व देश को बड़ी २ विपत्तियों से मुक्त करते थे उनको इन देवताओं को पूजामें फंसाया गया फिर क्यों यहदेश इस अवनति के रसातल को न पुंहचता, अब इसके निवासी कौड़ी कोस दौड़ते और खाने को भोजन नहीं प्राप्त होता इनकी दुःखित दशा पर अत्यन्त रोना आता है, इन्हीं पुराणों की कृपासे ब्राह्मणोंने गुण, कर्म्म, स्वभावसे वर्ण व्यवस्था को तोड़ कर जन्म पर रक्खी, जिसस जातियें बनीं और क्षत्रियों को शूद्र वा बनया बना दिखलाया, अब पाठक गण विचार करें कि जिस दश में यह अवस्थाएं हुई वहां नष्ट होने की कमी क्या रही, जिस देश के मनुष्यों में न प्रेम, न परोपकार बुद्धि, और नहीं अपनी हानि लाभ का विचार हो, विधवा। अनाथ कन्याओं पक्षियों के सदृश बन्द रक्खें, और स्वयं मनमाना विवाह करें, और पुनः वे अपनी भलाइ की आशा रक्खें शोक, अत्यन्त शोक, जो मनुष्य आजकल अनभिज्ञता से कहते हैं, कि यह मूर्ति पूजा परम्परा से हमारे पुरुषाओं से चली आई है, उनके विचार वर्तमान समय के पुरुखाओं तक ही हैं, आश्चर्य है कि वे अपने पिता, पितामय को सच्चा मानें, और प्रपितामय वा उसके पिता को झूंठा, क्योंकि जितने मतमतान्तर आज कल विद्यमान हैं, प्राचीन इतिहास में उन का नाम तक नहीं, यदि पूर्व से ही मूर्ति पूजा होती, तो इसी प्रकार वे भी मूर्तियें पृथ्वी से निकलतीं, जिस प्रकार कि अब जैनियों की निकलती हैं— साराश यह है, कि मनुष्य को परमात्मा ने विचार शक्ति देकर सब से उच्च बनाया है, शोक है यदि उससे सत्य व झूठ को

न जानकर अपने सच्चे स्वामी और उस की आज्ञा को भूलकर अपने मनुष्य जन्म को प्रमाद में व्यतीत करदें, जैसे आज्ञा भङ्ग करने वाला लड़का अपने भला चाहने वाले पिताकी आज्ञा को न मान कर विना दुःख तथा क्लेश युक्त होने के संसार में क्या प्राप्त कर सकता है, अत एव उसका कर्तव्य है, कि धर्म्म जो ईश्वरीय शिक्षा तथा ऋषि मुनि कहते चले आए हैं जानकर अपने क्षण भङ्गरजीवन को जो अनेकजन्म भोगने के पश्चात् प्राप्त हुआ है सुफल करे और सुख के भागी हों ईश्वर ऐसा ही करे ॥ ॥ ओ३म् इति शम् ॥

स्त्रीशिक्षा का अपूर्व

भारत की प्रसिद्ध २ वीरां
और विदुषी स्त्रियों के

(१) इस के प्रथम अध्याय
रित्र लिखे गये हैं जो ब्रह्मविद्या
लौकिक विद्याओं में निपुण थीं
वेदमंत्रों की व्याख्या करने वा
पवित्र नामः—विश्ववरा, सुलभा,
अम्बा, वायुनि, धारिणी, चित्रलेखा, सीता, यशवति, विद्या, कुन्ती, विदुला, द्रौपदी, सत्यभामा, अनुसूया, मायावती, मन्दोदरी, लीलावती तथा भानुमति आदि हैं। इसी भाग के दूसरे अध्याय में रानी संयोगिता, पद्मिनी, अर्गल की रानी, कर्मदेवी, तारा बाई, पन्ना, गन्नौर की रानी, जौधपुर की रानी अहल्या बाई, महारानी चन्दा, झांसी की रानी, कृष्णाकुमारी, और बूंदी की रानी इत्यादि वीरांगनाओं के चरित्र वर्णित हैं।

(२) द्वितीय भाग ६ अध्यायों में विभक्त है जिस में एक राजपूतनी के विवाह का मनोहर वर्णन है जो कि एक ऐतिहासिक घटना है।

(३) तृतयि भाग में रानी चूड़ाला, विद्यावती सरस्वती, अनुसूया, सुलोचना और विदुला आदि धर्मात्मा और नीतिज्ञा स्त्रियों का वर्णन है।

यह तीनों भाग मिलाकर यह पुस्तक तय्यार है शेष भाग फिर प्रकाशित होंगे, मूल्य केवल ।=)

भवदीय—
केशवदेव प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म प्रचारक प्रेस हरद्वार